हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna ● Quarterly Magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada

वर्ष १३, अंक ४९, जनवरी २०११ ● Year 13, Issue 49, January 2011

घर लाएं 3 बेहतरीन सेवाएँ 1 शानदार मूल्य पर।

Bell के साथ अपने घर के लिये तीन बेहतरीन सेवाओं पर अविश्वसनीय बचत का आनन्द लीजिए।
न तो कोई डिश या लाँग-टर्म शर्त शामिल है।

BELL INTERNET HOME PHONE & SATELLITE TV	$71.90 /माह[1] Bell Bundle में पहले साल के लिए

साथ ही, Bell Install के साथ, आप पाएंगे एक पूरी और कस्टमाइज इंसटालेशन।[2]
तो आराम से बैठिए और हम सब कुछ आप के लिए करेंगे।

Bell बचत अब हुई बेहतर

बेहतर बचत आपकी बिल्डिंग में है।

यह ऑफर केवल स्थानीय सेल्स एजेंट के माध्यम से ही उपलब्ध है। कृपया संपर्क करें।

Samit Nagpaul

647 - 227- 8516

Bell इंटरनेट, होम फ़ोन और सैटेलाइट टी.वी. का आनंद लीजिए - यह सब कुछ सिर्फ $71.90 / माह

BELL INTERNET	BELL HOME PHONE	BELL SATELLITE TV
• शेयर करने के लिए सबसे उत्तम[3]	• सबसे अधिक विश्वसनीय[4]	• HD 100 चैनलों से भी अधिक

सबसे अच्छी बात, हम इतने विश्वस्त हैं कि आप हमारी सेवाओं का आनन्द लेंगे, जो आती है
30-दिनों की पूर्ण संतुष्टि के वादे के साथ, या फिर आपके पैसे वापिस।[5]

MIX Paper from responsible sources FSC® C00XXXX

ऑफर 15 अप्रैल, 2011 को समाप्त। ओंटारियो के चुनिंदा आवासीय मकानों के आवासीय ग्राहकों को, जहाँ तकनीकी अनुमति दे, नए एक्टिवेशन (Bell इंटरनेट) या नए अपग्रेड (Bell सैटेलाइट टी.वी.) को चुनिंदा योजनाओं पर उपलब्ध है। टैक्स, अतिरिक्त शुल्क और प्रतिबंध लागू हैं। bell.ca/bellbundle देखें। होम फ़ोन: उपलब्ध है जहाँ CRTC- नियंत्रण नहीं है। टच-टोन ($2.80 /माह) और 9-1-1 ($1.8/ माह) अतिरिक्त। सर्विस एरिया चार्ज लग सकते हैं; bell.ca/serviceareacharge देखें। नए और मूविंग ग्राहकों के लिए एक-बार का शुल्क ($55 /लाइन)। इंटरनेट: एक-बार का एक्टिवेशन शुल्क ($29.95) अतिरिक्त, Bell सैटेलाइट टी.वी. ग्राहकों के लिए माफ। मॉडम का किराया ($3.95) अतिरिक्त। प्रयोग 2GB/माह; $2/ अतिरिक्त GB। सैटेलाइट टी.वी.: डिजिटल सर्विस फ़ी ($3/माह प्रति अकाउंट) अतिरिक्त। Bell के CRTC's Local Programming Improvement Fund में योगदान के लिए शुल्क लागू होगा जो आपके Bell सैटेलाइट टी.वी. के मासिक मूल्य के 1.5% से अधिक नहीं होगा। (1) नए सैटेलाइट टी.वी.के साथ डिजिटल सामान्य बेसिक और HD PVR रेंटल के साथ। मासिक दर $55 में से $5 घटाकर Bundle डिस्काउंट और $20 क्रेडिट 1 से 12 महीने के लिए। Bell Internet Essential Plus की मासिक दर $31.95 में से $5 घटाकर Bundle डिस्काउंट और $5 क्रेडिट 1 से 12 महीने के लिए (Bell सैटेलाइट टी.वी. ग्राहक के रूप में चल रहा है)। Bell होम फ़ोन लाइट मासिक दर $24.95 में से $5 घटाकर bundle डिस्काउंट है। यह bundle उन ग्राहकों को उपलब्ध है जो कम से कम दो सेवाओं के ग्राहक हैं; देखें bell.ca/bellbundle। (2) शर्तें लागू हैं; देखें bell.ca/fullinstall (इंटरनेट) और bell.ca/installationincluded (बेल सैटेलाइट टी.वी.)। होम फ़ोन के लिए, इंस्टालेशन में एक jack का प्रावधान है जहाँ पर पहले से एक भी नहीं है। (3) सेवा की शर्तों के साथ ग्राहक अनुपालन का विषय है। (4) परंपरागत तांबे-आधारित (फाइबर आधारित को छोड़कर) वायरलाइन टेलीफ़ोनी पर लागू; केवल टेलीफ़ोनी की तुलना में और ग्राहक के घर पर विस्तारित पॉवर कटौती के दौरान चालू सेवाओं पर आधारित है। (5) क्रेडिट अकाउंट पर लागू है, सैटेलाइट टी.वी. (मोबिलिटी के अतिरिक्त), और लागू इंस्टालेशन, सक्रियण या उपकरण फ़ीस के लिए सेवा शुल्क पर प्रस्तावित है; उपयोग शुल्क पर लागू नहीं होता (जैसे लंबी दूरी, अतिरिक्त इंटरनेट उपयोग क्षमता, ऑन-डिमांड टी.वी. रेंटल्स)। ग्राहक एक्टिवेशन के 30 दिनों के भीतर अवश्य कॉल करें। शर्तें लागू हैं, देखें bell.ca/satisfaction। Super ChannelTM ट्रेडमार्क पर Allarco Entertainment 2008 Inc. Date Night c. 2010 20th Century Fox. का स्वामित्व है। सभी अधिकार सुरक्षित हैं। YouTube Google, Inc. का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

इस अंक में

सम्पादकीय		03
पाती		04
कहानी		
इक फासले के दरम्यान खिले हुए चमेली के फूल	● किशोर चौधरी	11
मैं रमा नहीं	● अनिल प्रभा कुमार	17
चुड़ैल	● बलराम अग्रवाल	25
व्यंग्य	● अविनाश वाचस्पति	29
अप्रकाशित उपन्यास अंश	● राजीव रंजन प्रसाद	31
आलेख	● मधु अरोड़ा	38
दोहे	● पूर्णिमा वर्मन	45
कविताएं	● आस्था नवल	46
	● सुनील गज्जाणी	46
	● डॉ. ग़ुलाम मुर्तजा शरीफ़	47
	● अमित कुमार सिंह	47
	● आकांक्षा यादव	48
	● रमेश मित्तल	48
	● पंकज त्रिवेदी	48
	● रेखा मैत्र	49
	● भगवत शरण श्रीवास्तव	49
	● हरिहर झा, आस्ट्रेलिया	49
ग़ज़ल	● देवी नागरानी	51
	● अमर ज्योति 'नदीम'	51
	● प्राण शर्मा	51
	● नीरज गोस्वामी	51
लघुकथा		
प्रतिरोध	● संजय कुमार	53
अनहोनी	● दीपक 'मशाल'	54
हीरक कणियाँ	● शशि पाधा	55
वास्तविक अभिषेक	● प्रेम नारायण गुप्ता	55
पुस्तक समीक्षा		
ईस्ट इंडिया कंपनी का सफल प्रयोग	● डॉ. पुष्पा दुबे	56
सेरीना	● जगदीश प्रसाद गोयल	62
अलवर की राजकुमारियां	● पुष्पा सक्सेना	64
चित्रकाव्य कार्यशाला		67
साहित्य समाचार		68
विलोम चित्र काव्यशाला		71
अधेड़ उम्र में थामी कलम	● मालती सत्संगी	73
आख़िरी पन्ना	● सुधा ओम ढींगरा	76

◂11

इक फासले के दरम्यान खिले हुए

चमेली के फूल

किशोर चौधरी

मैं 17▸

रमा नहीं

अनिल प्रभा कुमार

◂25

चुड़ैल

बलराम अग्रवाल

''हिन्दी चेतना'' सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि ''हिन्दी चेतना'' साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यिक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमंत्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें। अगले अंक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें।

रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखें :

1. *हिन्दी चेतना अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।*
2. *प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।*
3. *पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।*
4. *रचना के स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।*
5. *प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।*
6. *पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।*

•
संरक्षक एवं प्रमुख सम्पादक
श्री श्याम त्रिपाठी, कैनेडा
•
सम्पादक
डॉ. सुधा ओम ढींगरा, अमेरिका
•
सहयोगी सम्पादक
डॉ. निर्मला आदेश, कैनेडा
अभिनव शुक्ल, अमेरिका
डॉ. अफ़रोज़ ताज, अमेरिका
आत्माराम शर्मा, भारत
अमित कुमार सिंह, भारत
•
परामर्श मंडल
पद्मश्री विजय चोपड़ा, भारत
मुख्य सम्पादक, पंजाब केसरी पत्र समूह
पूर्णिमा वर्मन, शारजाह
सम्पादक, अभिव्यक्ति-अनुभूति
तेजेन्द्र शर्मा, लंदन
महासचिव, कथा यू.के.
विजय माथुर, कैनेडा
सरोज सोनी, कैनेडा
राज महेश्वरी, कैनेडा
श्री नाथ द्विवेदी, कैनेडा
डॉ. कमल किशोर गोयनका, भारत
चाँद शुक्ला 'हदियाबादी', डेनमार्क
डायरेक्टर, रेडियो सबरंग,
अध्यक्ष, वैश्विक समुदाय रेडियो प्रसारण माध्यम
•
विदेश प्रतिनिधि
आकांक्षा यादव, अंडमान-निकोबार
मुर्तजा शरीफ, पाकिस्तान
राजेश डागा, ओमान
उदित तिवारी, भारत
डॉ. अंजना संधीर, भारत
विनोद चन्द्र पाण्डेय, भारत
•
सहयोगी
सुषमा शर्मा, आलोक गुप्ता, भारत
अदिति मजूमदार, डैनी कावल, कैनेडा

कमल पत्र पर उज्जवल बूदें ओस की
कमल पुष्प पर सूरज की नूतन किरणें
सुख सुरभि जीवन की ताल तलैया में
नए साल का स्वागत करती हैं हँस कर
उत्तम पठन-पाठन चिंतन की ओर हो
शांति, समृद्धि, न्याय के हाथों डोर हो।

अभिनव शुक्ल

हम हैं राही प्यार के

राजीव रंजन प्रसाद, मोहिन्द्र कुमार
श्री कांत मिश्र 'कांत'
अजय यादव , अभिषेक सागर
http://www.sahityashilpi.com

जय प्रकाश मानव
http://www.srijangatha.com

शिवानी जोशी
http://www.hindimedia.in

पूर्णिमा वर्मन
http://www.anubhuti-hindi.org/
http://abhivyakti-hindi.org/

प्रेम जनमेजय
व्यंग्य यात्रा

विजय राय
लमही

दिवाकर भट्ट
आधारशिला

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
शोध दिशा

डॉ. माधव सक्सेना 'अरविन्द
कथाबिम्ब
http://www.kathabimb.com

Hindi Chetna is a literay magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi Literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone : (905) 475 - 7165 Fax : (905) 475 - 8667
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

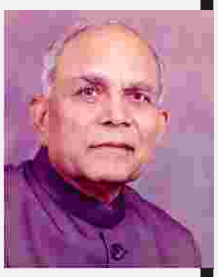

साहित्य और समाज का सम्बन्ध युग- युगांतर से रहा है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि समाज से साहित्य का जन्म हुआ और साहित्यकार ले देकर समाज के चक्र लगाता रहता है और समाज को उसकी अच्छी और बुरी बातें विभिन्न माध्यमों से देता रहता है। उदाहरण के लिए मुंशी प्रेमचन्द को ही लें, उन्होंने अपने समय के ग्रामीण समाज को निकट से देखा और जो भोगा वो अपनी कहानियों और उपन्यासों में भर दिया। अंग्रेजों ने उन पर अनेकों आरोप लगाये और साहित्य के आलोचकों ने उनके साहित्य की कड़ी आलोचना की। कुछ लोगों ने तो उन्हें कम्युनिस्ट तक कह दिया। राजनीति के खिलाड़ियों ने उन्हें देशद्रोही तक बना दिया। लेकिन प्रेमचन्द किसी से डरे नहीं उन्होंने साहसपूर्वक अपने कार्य को पूरा किया। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के साथ कोई समझौता नहीं किया। सच्चा साहित्यकार सर कटा सकता है, सर झुका नहीं सकता। मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य सदा अमर रहेगा क्योंकि वह सत्य पर आधारित है।

आज हमें सच्चे लेखकों की जरूरत है। समाज में भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, झूठ और मक्कारी जैसे भयंकर रोग फैले हुए हैं। जल, थल, आकाश पर आतंकवाद, अपहरण हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गये हैं। बलात्कार, शिशुओं का शोषण, मानुषी व्यापार, माता-पिता के नाज़ुक सम्बन्ध और पारिवारिक निर्मल सम्बन्धों की आड़ में पिता अपनी औलाद को सेक्स का शिकार बनाने में कोई शर्म महसूस नहीं कर रहे। पति-पत्नी के पवित्र सम्बन्धों में झुर्रियां पड़ने लगीं हैं।

आज हमें ऐसे साहित्यकारों की आवश्यकता है जो समाज के पथ प्रदर्शक की भूमिका निभा सकें। राष्ट्र की असली तस्वीर का चित्रण कर अपने विचारों को निर्भयता से व्यक्त कर सकें।

हमें 'हिंदी चेतना' में कुछ इस प्रकार की कहानियाँ प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त हुआ और हमने उनका स्वागत किया क्योंकि कहानीकार ने बड़े साहस के साथ इस प्रकार के विषय पर प्रकाश डालने का प्रयास किया था। प्रकाशित होने के बाद कुछ लोगों ने इन कहानियों का विरोध किया, किन्तु अधिक लोगों ने इनकी प्रशंसा की। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हमें आज ऐसे साहित्य का सर्जन करना होगा जिससे हमारी भावी-पीढ़ी को कुछ शिक्षा प्राप्त हो सके और समाज की भी आँखें खुल सकें।

वास्तव में साहित्य तो एक तलवार की तरह है जिससे समाज की रक्षा की जा सकती है। हमें आशा है कि साहित्यकार नव-वर्ष में प्रेरणात्मक साहित्य सृजन करने का प्रयास करेंगे और हिंदी चेतना की झोली उत्तम रचनाओं से भर देंगें।

बीते वर्ष के अन्तिम अंक 'महामना मदन मोहन मालवीय विशेषांक' को आप सब ने बहुत सराहा आभारी हूँ पाठकों का। धन्यवादी हूँ सम्पादक सुधा ओम ढींगरा का जिन्होंने मेरे स्वप्न को साकार किया।

आप लोगों का जो प्रोत्साहन हमें 'महामना मदन मोहन मालवीय विशेषांक' के लिए मिला है उसी से उत्साहित हो कर हम 2011 में आपको एक ऐसे 'विशेषांक' का बेशकीमती उपहार भेंट करेंगे जिसकी घोषणा बहन सुधा ओम ढींगरा आगामी अंकों में कर देंगीं।

नव वर्ष की बहुत-बहुत बधाई! अनन्त मंगल कामनाओं सहित...

आपका
श्याम त्रिपाठी

हिन्दी चेतना को पढ़िये, पता है :
http://hindi-chetna.blogspot.com

हिन्दी चेतना की समीक्षा अवश्य देखें :
http://KathaChakra.blogspot.com

घर बैठे पुस्तकें प्राप्त करें :
http://www.pustak.org

हिन्दी चेतना को आप ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं :
Visit our Web Site :
http://www.vibhom.com
or home page **पर**
publication **में जाकर**

पाती

'तमाचे' कहानी मुझे बहुत पसन्द आई। मेरा मानना है कि कहानी जो कहती है वह तो महत्वपूर्ण है ही मगर कहानीकार जो बिना कहे कहता है उससे कहानी ऊपर उठती है।

एक अच्छी कहानी के लिये बधाई। हिन्दी चेतना भी एक अच्छी कहानी छापने के लिये बधाई की पात्र है।

तेजेन्द्र शर्मा
जनरल सेक्रेटी, कथा यू.के.

हिंदी चेतना का मालवीय विशेषांक तो जानकारियों का खज़ाना है। अपने महापुरुषों के बारे में इतनी सूक्ष्म और प्रचुर सामग्री पाकर मन प्रफुल्लित हो गया।

'हिंदी चेतना' कनाडा से हिंदी और हिन्दोस्तान के लिए जो कार्य कर रही है उसे देखकर सिर श्रद्धा से झुक जाता है। आपके कार्य की जितनी प्रशंसा की जाये वो कम है। हिंदी चेतना परिवार को ढेरों बधाइयाँ।

अमित कुमार सिंह
टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस,
नयी दिल्ली, भारत

मुझे 'हिंदी चेतना' का मालवीय अंक मिला। आप सब को बधाई। इतना सुन्दर और संग्रहनीय अंक निकाला है जय हो।

जो परिश्रम आपने किया, उसे मैं समाज की एक सेवा मानता हूं।

क्षेत्रपाल शर्मा
शान्तिपुरम, सासनी गेट, अलीगढ
पूर्व संयुक्त निदेशक, क.रा.बी.नि.
(श्रम मन्त्रालय), नयी दिल्ली

'हिंदी चेतना' का मालवीय विशेषांक पढ़कर एक पल ऐसा लगा कि क्या ये पत्रिका वास्तव में कनाडा में छपी है?

मालवीय जी के बारे में इतनी सामग्री और जानकारी तो हमें हिन्दोस्तान में और तो और खुद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में रहकर भी नहीं मालूम थी। आपको इसके लिये कोटि-कोटि धन्यवाद।

किरन सिंह
शोध छात्रा, रसायन विभाग,
आई.टी.बी. एच.यू.
बनारस हिन्दू विश्विद्यालय,
बनारस, भारत

'हिंदी चेतना' का 'महामना' अंक मिला। इतना अच्छा लगा कि कह नहीं सकता। वाकई हिंदी के इस सिपाही को सब भुला चुके हैं और ऐसे में आपने महामना को याद किया। दिल से आभार! सभी आलेख बेहद अच्छे हैं और महामना के जीवन में भी झाँकने का सुअवसर प्रदान करते हैं। सुधा जी आपको और हिंदी चेतना की सम्पूर्ण टीम को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!

नरेन्द्र व्यास
द्वारा- बी.डी. व्यास
कीकानी व्यास चौक,
बीकानेर-334005
http://www.aakharkalash.blogspot.com

त्रिपाठी जी, समय के साथ 'हिन्दी चेतना' का अधिक जाग्रत रूप देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है पर इस बार के विशेषांक ने हृदय गदगद कर दिया। मालवीय जी पर 'हिन्दी चेतना' का यह विशेषांक बहुत सुंदर और सशक्त था। मालवीय जी की व्यक्तित्व और कृतित्व, आंतरिक और बाह्य जीवन की झलकियों से पूर्ण इस अंक ने हम सबको एक महान हिंदी प्रेमी की याद पुनः दिलाई, इसके लिए सभी पाठक आप के आभारी होंगे, मुझे ऐसा विश्वास है। इस अंक में आप सबकी मेहनत और हिंदी के प्रति श्रद्धा और सम्पादन की लालिमा स्पष्ट दिखी थी। सभी लेख स्तरीय थे और बहुत प्रेम और भाव से लिखे हुए थे। मालवीय जी के इतने सारे चित्र आप किस के अमूल्य भण्डार से ढूँढ लाये? मोती की तरह ही इन चित्रों ने इस अंक को एक विशेष आभा दी। सुधा जी ने आपकी वर्षों की साध से परिचित करा कर इस अंक के प्रकाशन का रहस्य बताया और आप दोनों ने मिलकर हिंदी प्रेमियों को, इस बदलते समय में हिंदी के प्रयोग, प्रचार, प्रसार और हिंदी प्रति विश्वास रखने की जो चेतना मालवीय जी के माध्यम से दी है, मैं उसके लिए आप को बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई देती हूँ।

डॉ. शैलजा सक्सेना
ओकविल-अन्टेरियो, कनाडा

'हिंदी चेतना' का अक्टूबर 2010 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। महामना मालवीय विशेषांक की प्रतीक्षा पूर्ण हुई। यह अत्याधिक हर्ष का विषय है कि कनाडा जैसे अहिंदी देश में 'हिंदी चेतना' जैसी सशक्त हिंदी पत्रिका का निकालना और सर्वोपरि पं. मदनमोहन मालवीय जी जैसे सशक्त व्यक्तित्व के जीवन दर्शन के प्रत्येक पहलू को पाठकों तक पहुँचाना अथक परिश्रम के उपरान्त ही सम्भव हो सकता था। श्री श्याम त्रिपाठी जी एवं डॉ. सुधा ओम ढींगरा के संयुक्त परिश्रम के परिणाम स्वरूप ही पत्रिका एक नवीन रूप रंग और नूतन रूप सज्जा लिए पाठकों तक पहुंच सकी है।

गिरिधर मालवीय जी का लेख 'महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व' अत्यधिक मार्मिक लगा। उनके हृदय की पीड़ा की अभिव्यक्ति उनके इन शब्दों में अत्याधिक सटीक बन पड़ी है - 'आश्चर्य होता है कि अपने जीवन काल में अनेकों कार्यों में अधिक व्यस्त रहते हुए भी महामना मालवीय ने हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए कैसे इतना कार्य किया, उससे भी अधिक योगदान करने के बाद भी हिंदी के प्रवर्तक व् प्राण के रूप में महामना को क्यों नहीं जाना जाता।'

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी जी की 'शत-शत

प्रणाम' कविता महामना मालवीय जी के चरणों में अनायास ही नतमस्तक सी होती हुई प्रतीत होती है। कविता में भाव भी हैं और निष्ठा भी। महामना मालवीय जी के चन्दन मन और निर्मल, निश्छल तन का बखान भी है और भारतीयता में ओत प्रोत एक विलक्षण व्यक्तित्व का गुणगान भी है।

पत्रिका के सभी लेखों के बारे में विस्तार से उल्लेख करना तो सम्भव नहीं है पर यह सच है कि सभी लेख महामना के बारे में विशेष जानकारी देते हैं और इस कारण पत्रिका के किसी भी लेख को नकारा नहीं जा सकता है।

महामना के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में प्रकाशित लेखों के विषय में विविध स्त्रोतों से सामग्री एकत्र करना कोई सहज काम नहीं था परन्तु श्री श्याम त्रिपाठी और सुधा ओम ढींगरा के अनथक प्रयासों और परिश्रम के फलस्वरूप ही पत्रिका का यह विशेषांक सुधि पाठकों तक पहुंच सका है। अत्याधिक हर्ष की बात है कि इस अंक के माध्यम से श्री त्रिपाठी जी का वर्षों से संजोया हुआ सपना साकार हुआ है और पाठकों को महामना के विस्मृत जीवन वृत के बारे में पुनः कुछ पढ़ने का सुअवसर मिला है।

इस सन्दर्भ में डॉ. कमलकिशोर गोयनका के नाम का उल्लेख करना असंगत न होगा। हम एम.ए. में सहपाठी तो रहे ही पर मेरा शोधकार्य उनकी प्रेरणा और सहयोग से उनके मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ। त्रिपाठी जी एवं सुधा जी से परिचय भी उनके ही द्वारा हुआ।

त्रिपाठी जी के सरल सौम्य, मधुर और स्नेहपूर्ण स्वभाव के कारण ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके सानिध्य में कनाडा में भी सम्भवतः हिंदी से जुड़े रहने का अवसर अवश्य ही मिल सकेगा। मैं अत्याधिक प्रसन्न हूँ कि हिन्दी चेतना पत्रिका के विशेषांक में मेरे लेख को स्थान प्राप्त हुआ। इसके लिए श्री त्रिपाठी जी को विशेष रूप से मेरा हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका के विशेषांक के लिए समस्त सम्पादकीय मंडल को मेरी बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. चन्द्रा सूद
सरे, कैनेडा

अक्टूबर 2010 का 'हिंदी चेतना' पत्रिका का अंक हाथ में आते ही मन यह सोचकर खिल उठा कि आपने महामना मालवीय जी के अप्रतिम व्यक्तित्व को उजागर करने का बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है, यह कार्य आज के समय की मांग है। आपने उनके जीवन के अछूते कोणों व अमूल्य कृत्यों को उजागर किया है। यह भी बताने का प्रयास किया है कि महान फरिश्तों ने अपना वर्तमान देकर भावी पीढ़ी को स्वतन्त्रता जैसा वरदान दिया है। प्रिय बंधुओ आपकी हिंदी चेतना पत्रिका इस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अति उत्कृष्ट कृति है। महामना मालवीय जी विशेषांक निकालकर आपने इसकी उत्कृष्टता को चार चाँद लगा दिए हैं। इसलिए मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि कृपया ऐसे महान व्यक्तियों के बारे में भविष्य में भी ऐसे विशेषांक निकालिएगा। ऐसे प्रयासों से एक पन्थ दो काज वाला मुहावरा भी सार्थक होगा। इसलिए जहाँ आपकी निस्वार्थ व निष्काम हिंदी सेवा के द्वारा नई पीढ़ी में हिंदी-मोह उजागर हो रहा है वहाँ स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा भाव भी बढ़ेगा। उनका चरित्र निर्माण भी होगा – जो आज भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर सभी समस्याओं का हल भी होगा। अतः प्रशंसनीय व विस्मरणीय हिंदी सेवा के लिए आप बधाई व साधुवाद के पात्र हैं। त्रिपाठी जी, सुधा जी व पूरा हिंदी चेतना परिवार चिरकाल तक हिंदी-भाषा की सेवा करता रहे यही कामना है।

राज 'भारतीय' साहित्य श्री
कैनेडा

महामना को शत-शत प्रणाम

तुम चिरागों की तरह हर राह पर जलते रहना, मेरी यह तमन्ना है कि आप जैसे वीर बार-बार पैदा हों हमारे देश में।

ऐसे चमकते सितारे को मेरा शत-शत प्रणाम!

धन्य है भारत भूमि जिसने ऐसे सपूत पैदा किये जिन्होंने देश में सुधार लाने का काम किया तथा अपने संग औरों को भी लेकर चले और हमेशा आगे ही बढ़े पीछे नहीं हटे। सर झुकता नहीं झुकाने से 'सर उठता है मगर उठाने से।'

हमें भी अपने देश की सांस्कृतिक निधियों को संम्भालना होगा, नींव उन्होंने डाली थी, हमें इमारत को आसमान की तरफ उठाना होगा। यदि हम इस इमारत में एक ईंट भी लगा दें, इस इमारत को फिर से सजा दें, ऐसी ईंट जिसकी खुशबू उस इमारत में चार चाँद लगा देगी, तो यही हमारा – तुम्हारा कर्त्तव्य महान होगा। देश की ऊँची शान होगी।

हमारी सांस्कृतिक सम्पदा ऐसे ही साहसियों से परिपूर्ण है जो गम्भीर भी हैं, बुद्धिजीवी भी हैं जिन्होंने केवल देश के लिए ही जीवन जिया है तथा मुश्किल से मुश्किल हालातों को संभाल आगे बढ़ने का साहस किया है चाहे ऐसा करते कई बार उन्हें अपनी जान तक गंवानी पड़ी है क्योंकि-- 'हर मुश्किल हमें राह दिखाती है, जीने की नई राह सुझाती है।'

'क्योंकि दिया बुझता है रौशनी नहीं बुझती'।

सबसे बड़ा काम होता है अपने अंदर रौशनी पैदा करना, अँधेरे को मिटाने के लिए उससे लड़ना पड़ता है। जो मदन मोहन मालवीय जी ने किया। पहले उन्होंने अपने अंदर को रौशन किया फिर उस रौशनी से दुनिया को रौशन किया 'तूफान हमेशा अंदर से बाहर की तरफ उठते हैं।'

उन्होंने लोगों को प्रेरित किया कि अपनी भाषा में साहित्य रचें। जो अपनी भाषा में साहित्य नहीं रचता वह साहित्य रच ही नहीं सकता क्योंकि उधार की भाषा में कभी साहित्य नहीं रचा जाता। उन्होंने अपनी मातृभाषा को महत्व दिया तथा दुनिया को भी प्रेरित किया कि वह अपनी भाषा में लिखें तथा अपनी बोली बोलें। इसीलिए हिंदी भाषा सबकी भाषा बन गई। इसीलिए उन्हें हिंदी का पितामह कहा गया। साधारण जीवन तो हर कोई जी लेता है, लेकिन जीवन ऐसा हो जिसका उदाहरण दिया जा सके। उन्होंने ऐसा

जीवन जिया कि वह आने वाली नस्ल के लिए उदाहरण बन गये। इसीलिए उनको 'तन्हा' का शत–शत प्रणाम।

फिर त्रिपाठी जी व सुधा जी का प्रयत्न रंग लाया जो हमारे सामने उस महान आत्मा का जिक्र तथा उनका सोम चित्र प्रस्तुत हो सका जिसके लिए कोटि–कोटि धन्यवाद। इस काम को आगे बढ़ाने के लिए जो आपने सामग्री जुटाई है तथा इस कार्य में जिन–जिन लोगों ने सहयोग दिया है उन सबके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। और आप दोनों को धन्यवाद देती हूँ यह पत्रिका संचित करने योग्य है। परिस्थितियाँ तो बनती बिगड़ती रहती हैं, उन बिगड़ी परिस्थितियों को ढकेल कर जो आगे निकल जाता है वही विजेता होता है।

वे महामना थे। उनकी अभिलाषा उनकी इच्छाओं को विदेश में बसे भारतीयों के दिलों तक पहुँचाने में आप सफल हुए है। यह आपका अपनी संस्कृति, अपनी हिंदी के प्रति प्रेम ही तो है जो आपको उत्साहित करता है। उस महान हिंदी के महपिता को मेरी श्रद्धांजलि, जिसने बनारस की महाभूमि को पवित्र कर दिया तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय देकर संस्कृति से चमत्कृत किया और उन हिंदी प्रेमियों को जिन्होंने अपने विचारों अपने अनुभवों को हम तक पहुंचाया इस पत्रिका के द्वारा।

सुखवर्ष 'तन्हा'

भारत – इस समय कनाडा में

हिंदी चेतना का 'महामना विशेषांक' पढ़ कर आनंद तथा क्षोभ दोनों ही भावों–अनुभावों की अनुभूति हुई। आनंद इसलिए कि इस पत्रिका के माध्यम से हम इस महान विभूति के बहु आयामिक व्यक्तित्त्व और कृतित्व को जान पाए। क्षोभ इस बात का कि आज तक हम उन्हें केवल एक राजनेता एवं काशी विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में ही जानते थे और उनके जीवन के बाकी पहलुओं से लगभग अपरिचित ही थे। अब जो भी इस विशेषांक को पढ़ेगा, वह उन्हें पूर्णरूपेण जानेगा भी और प्रेरित भी होगा। मैंने स्वयं इस विशेषांक की पीडीएफ़ कॉपी बहुत से हिंदी प्रेमियों को भेजी है ताकि हर कोई इसे पढ़ कर प्रेरणा पा सके। यह विशेषांक उनके अन्तरंग जीवन की झांकी है। इसे हिंदी प्रेमियों तक पहुंचाने के लिए आपका, पूरे सम्पादक मंडल का तथा सभी लेखकों का बहुत–बहुत धन्यवाद। भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

शशि पाधा , अमेरिका

'हिन्दी चेतना' का अक्तूबर 2010 अंक भेजने के लिये आपका बहुत–बहुत धन्यवाद!

क्या आपने यह अंक महामना मालवीय जी के प्रपौत्र और हिन्दी–लेखक डॉक्टर लक्ष्मीधर मालवीय जी (जापान) को भी भेजा है?

उनको न भेजा हो तो अब भेजने की कृपा करें। मैंने यह अंक आज ही देख लिया है।

महामना मदनमोहन मालवीय अंक आप लोगों के सम्पृक्ति–भाव और परिश्रम का सुखद–सार्थक परिणाम और प्रमाण है। अच्छा लगा। बधाई! धन्यवाद!

हरजेन्द्र चौधरी
Visiting Professor
Osaka University, JAPAN

आज ही महामना विशेषांक मिला है। अंक बहुत ही सराहनीय है और आप लोगों का यह प्रयास प्रशंसनीय। मालवीयजी पर लिखे लेख उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं। हिंदी के पितामह शीर्षक से लिखा प्रो. हरिशंकर आदेश का लेख मन को झकझोरने वाला है। सचमुच हिंदी इतनी समृद्ध भाषा है फिर भी उसमें विदेशी भाषा ठूंसना उसके साथ अन्याय है जो लोग कर रहे हैं।

आप लोग देश से दूर रह कर भी देशसेवा का महान कार्य कर रहे हैं।

ओमलता अखौरी , भारत

भारतीय संस्कृति, सद्ग्रंथों, सदज्ञान, संस्कार और 'सत्यमेव जयते' का मानवीयकरण स्वरूप पंडित मदन मोहन मालवीय जिनका नाम है।

जगत तो जन्म और गमन के लिए है, देह मिलती है, मिट जाती है। इनमें समाहित पंचतत्वों के समीकरण की ऊर्जा क्या–क्या कर गयी वही जन्मों के सिद्ध होने की कसौटी है।

आना तो सबका साधरण होता है, कृतत्व ही गमन को असाधारण बनाते हैं। पूजा आचरण में उतरती है तो पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे व्यक्तित्व बनते है। एक–एक प्रसंग पढ़ कर लगता है कि हम कितने अदने हैं। इतनी सुख सुविधाओं में भी शाश्वती के लिए क्या किया? इन विशेषांकों का असली मूल्यांकन यही है कि इस कसौटी पर हम अपना भी मूल्यांकन करें, एक–एक चुटकी भी योगदान करें तो कुछ तो होगा। एक समग्र व्यक्तित्व को प्रणाम जो कभी जाते नहीं, बस रूप परिवर्तित करते है। 'हिन्दी चेतना' चेतना तक सचमुच ही ले जाती है. सत्प्रयासों के लिए साधुवाद।

डॉ. मृदुल कीर्ति, अमेरिका

'हिन्दी चेतना' का लिंक मुझे मेरे बनारस के एक मित्र ने भेजा। मालवीय जी का नाम पढ़ कर इसे खोलने का आकर्षण हुआ। खोल कर पढ़ता गया और रोता गया। अतीत की यादों में चला गया। मैं मालवीय जी का प्रशंसक हूँ। भक्त हूँ। जिस जगह मैं रहता हूँ वहाँ भारतीय तो हैं पर हिन्दी और साहित्य से उनका कोई वास्ता नहीं। मेरा हिन्दी प्रेम भी वर्षों के प्रवास ने एक तरह से मार दिया था। विदेश से एक सशक्त पत्रिका और अपने महामना पर विशेषांक पाकर लगा कि सब कुछ जिंदा है, कुछ मरा नहीं। बैठा और सब पढ़ गया। बधाई दूँ, धन्यवाद दूँ या आभार व्यक्त करूँ। मान्यवर सब अर्पित करता हूँ। शत–शत प्रणाम। हिन्दी चेतना को पढ़ना अब जीवन में शमिल हो गया है।

भवानी एम प्रसाद, रोम

सुधा जी विशेषांक है या अमृत। बूंद-बूंद पी गयी। यादों के झरोखों में फोटो देखकर मन आनन्द से भर गया। मालवीय जी पर लिखा एक-एक शब्द पठनीय है। अंत में आपका लिखा पढ़ कर पता नहीं क्यूँ मन भर आया। आप की यही बात आपको अलग बनाती है। बहुत-बहुत बधाई श्री श्याम जी को, आपको और आपकी पूरी टीम को।

रचना श्रीवास्तव
यू.एस.ए.

'हिंदी चेतना' का महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी पर विशेषांक देखा है। इतना अवश्य कह सकता हूं कि अभी तक मैंने भारत से मालवीय जी पर प्रकाशित किसी पत्रिका में इतनी विविधतापूर्ण सामग्री नहीं देखी हैं। आपको तथा श्री त्रिपाठी जी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

अखिलेश शुक्ल
ख्यात ई-समीक्षक,
लेखक व साहित्यकार

Many thanks for sending me 'Hindi Chetna'. I received it yesterday. At first glance itself, it seems like a commendable effort on your part to try keeping our mother tongue alive in foreign lands and provide a forum for Hindi lovers to contribute and publish their work. I read your editorial and it is indeed a cause for concern-the way Hindi is slowly disappearing from our culture.

Once again many congratulations on your untiring efforts!

With warm regards,
Ruchi Bhargava, INDIA

'हिंदी चेतना' का महामना मदन मोहन मालवीय विशेषांक पाकर बहुत अच्छा लगा है। कुछ सारगर्भित लेख मैं बड़े मनोयोग से पढ़ गया हूँ। शेष लेख आराम से पढ़ूँगा। हैरान हूँ कि इतनी सारी सामग्री सुधा जी आपने कैसे जुटा ली है? आप में मैं कुशल सम्पादक के सभी गुण देखता हूँ। मालवीय जी पर विशेषांक निकाल कर आपने त्रिपाठी जी का सपना साकार कर दिया हैं। कोटिशः बधाई।

प्राण शर्मा
यू.के.

'हिन्दी चेतना' की प्रथम प्रति भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद। श्रद्धेय मालवीय जी संबंधी इतनी सामग्री एक साथ देने के लिए बहुत बधाई। इस प्रयास में आपका श्रम सार्थक है। एक बार पुनः बधाई।

पुष्पा सक्सेना
अमेरिका
http://hindishortstories.blogspot.com/

Thanks a lot for your email regarding HINDI CHETANA. You are doing wonderful work in a distant land and I wish you all the best in your venture.

Jitendra Kumar Mittal

Thanks for sending the links of Hindi Chetna. The magazine looks impressive. I have gone through some of the contents. Gradually I'll read all contents that the magazine holds. This issue is more special to me as some of my family members are descendants of Madan Mohan Malviya.

Archana Painuly
Denmark
Website: www.archanap.com

सुधा दी हिंदी चेतना का पं. मदन मोहन मालवीय विशेषांक देखकर मन प्रसन्नता से ओतप्रोत हो उठा। अभी तक मैंने श्रीयुत वेद प्रताप वैदिक का लेख और आपका सम्पादकीय ही पढ़े हैं। वास्तव में राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़े व्यक्तित्वों के बारे में सोचने की किसी को आज फुरसत नहीं है। आपका यह कार्य न केवल श्रीयुत श्याम त्रिपाठी जी के सपने की पूर्ति करता है बल्कि राष्ट्र की चेतना में जीवन का नया संचार करने की भी पहल करता है। शुभकामनाओं सहित।

बलराम अग्रवाल
भारत

आप सुदूर अमेरिका में बैठ कर 'हिन्दी चेतना' के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य की भरपूर सेवा कर रही हैं, यह सचमुच प्रशंसनीय और बहुत सराहनीय है। मैं हृदय से आप का अभिनन्दन करता हूँ। पं. मदन मोहन मालवीय जी पर इतनी सुन्दर और प्रमाणिक सामग्री तो भारत की भी किसी पत्रिका में मैंने अब तक नहीं देखी, जितनी आप ने 'हिन्दी चेतना' के इस विशेषांक में दी है। हार्दिक बधाइयों के साथ।

डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'
रुड़की, भारत

पं. मदन मोहन मालवीय अंक पाकर शब्द हीन हो गया हूँ। उत्तरी अमेरिका में बैठे लोग हिन्दी के लिए इतने समर्पित हैं, सोच से परे की बात लगती है। अंतर्जाल की सुविधा से ही यह अंक मेरे तक पहुँच पाया है। अलोक बिश्वास को धन्यवाद देता हूँ जिसने यह अंक मुझे भेजा। माननीय संपादक महोदय मैं आपका बहुत आभारी हूँ, आप ने पता नहीं कहाँ-कहाँ से नगीने ढूँढ कर इसमें जड़े हैं। आपने अपने मुख्य संपादक का सपना पूरा कर हिन्दी जगत को नींद से जगाया है। अब तो उठ जाओ ऐ हिन्दी वालो! विदेशों में भारत बस रहा है और भारत में हिन्दी कहाँ जा रही है। साक्षात्कार में एक शब्द कह देने पर भारत में साहित्यकार आपस में झगड़ पड़े थे, हंगामा खड़ा कर दिया था हालाँकि सब समझते हैं कि यह साहित्यिक राजनीति की बिसात बिछाई गई थी। उस शब्द की साहित्यिक सार्थकता पर बहस करने में अब उम्र लगा देंगे पर असली मुद्दे की ओर कोई ध्यान नहीं देता। युवा पीढ़ी हिन्दी से विमुख होती जा रही है, उससे कोई

सरोकार नहीं। बहुत से लेखकों के अपने बच्चे ही उनकी पुस्तकें नहीं पढ़ने वाले, उन्हें हिन्दी कम अंग्रेज़ी अधिक आती है। झगड़े छोड़ अगर हिन्दी की तरक्की की ओर ध्यान दें तो मदन मोहन मालवीय जी और बुल्के जी पर विशेषांक भारत में भी निकलते? (मैंने आप की साईट पर बुल्के अंक भी पढ़ा है) युवा पीढ़ी को कुछ तो पता चलता। लगता है विदेशों में ही महान विभूतियों को याद किया जायेगा और साहित्य भी यहीं पर संभाल कर संजोया जायेगा। बहुत कुछ कह गया हूँ, पर गर आज ना बोला तो फिर कभी कुछ नहीं कह पाऊंगा। 'हिन्दी चेतना' का स्थाई पाठक बन गया हूँ और अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी। ढेरों शुभकामनाएँ।

अखिल भास्कर
बैंकाक

'हिन्दी चेतना' का पं. मदन मोहन मालवीय विशेषांक पाकर अति प्रसन्नता हुई। महामना के बारे में बहुत कम जानती थी। काफी जानकारी मिली। 'हिन्दी चेतना' टीम की आभारी हूँ। पत्रिका की साज-सज्जा, ग्राफ़िक्स, सामग्री, प्रिंटिंग, कलेवर-फ्लेवर किस-किस की तारीफ करूँ? पूरी की पूरी पत्रिका अपने आप में एक बेशकीमती तोहफ़ा है। अफ़रोज़ ताज के लेख ने द्रवित कर दिया। अखिलेश शुक्ल का लेख भी अलग था। बधाई... बधाई... पुनः बधाई।

दीपिका भाटिया
न्यूजर्सी

'महामना पंडित मदन मोहन मालवीय विशेषांक' एक अनूठा, संग्रहनीय अंक है, जिसमें शामिल है मदन मोहन मालवीय जी का विवरण, जो उनके रौशन जीवन से अवगत कराता हुआ हृदय की गहराइयों में बस जाता है। संस्मरण, कथाएँ रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर हैं। इस पत्रिका के सफल संपादन के लिए श्याम त्रिपाठी जी और सुधा जी को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ।

देवी नागरानी
न्यू जर्सी

हिंदी चेतना का जुलाई अंक बहुत ही पसंद आया। शुक्रिया आदरणीया सुधा जी का कि उन्होंने मुझे ये 'हिंदी चेतना' का अंक प्रेषित किया। इतनी स्तरीय और उत्कृष्ट रचनाएँ, आकर्षक मुख-पृष्ठ के साथ-साथ इतनी सुन्दर छपाई...! हार्दिक बधाई स्वीकार कीजियेगा! हिंदी चेतना के माध्यम से हिंदी के प्रसार और प्रचार के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो अतुलनीय प्रयास किया जा रहा है इसके लिए सम्पूर्ण हिंदी चेतना की टीम शत-शत हार्दिक बधाइयाँ...!

नरेन्द्र व्यास
भारत

पहले तो सुधा जी जुलाई का अंक भिजवाने के लिए धन्यवाद... मैंने पाती में सम्पादक के अपनी पत्रिका में ना लिखने के बारे में पढ़ा। बहुत अचम्भे की बात है कि संपादक अपनी पत्रिका में ही न लिखे। जब भी किसी लड़की या लड़के के लिए जीवनसाथी देखने की बात होती है तो हर कोई पहले उनके माँ-बाप के संस्कार आदि के बारे में जानने की कोशिश करता है। मैंने भी पत्रिका में सच कहूँ तो सबसे पहले आपको ही तलाशने की कोशिश की। आप क्या लिखती है, कैसा लिखती है, क्या विचार है आपके।

लेकिन अफ़सोस मुझे मायूस ही होना पड़ा। कम से कम आपके बारे में तो मैं शर्तिया कह सकता हूँ कि आप कभी अपने आपको प्रोमोट नहीं कर सकती। मैंने एक कविता ही आपको भेजी थी और ग़लती से न छपने पर आपने मुझे फ़ोन करके खेद जताया था और उसके बाद आपने कई बार मुझे फ़ोन करके बताया कि अधिकाधिक पढ़ना कितना ज़रूरी है लिखने के लिए। आपने जितना मेरा हौंसला बढ़ाया वह मैं कभी न भूल पाऊंगा। मुझे आपकी एक बात और याद आती है। जब मैंने आपसे कहा कि मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ तो आपने कहा कि मैं ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को हिंदी चेतना से जोड़ने की कोशिश करूँ, ज़्यादा से ज़्यादा लोग हिंदी चेतना को पढ़ें। आपने ये कभी नहीं कहा कि अधिक लोग आपको पढ़ें। उम्मीद करता हूँ कि आपको जनवरी के अंक में विस्तार से पढ़ने का मौका मिलेगा।

रमेश मित्तल
भारत

'हिन्दी चेतना' का 'महामना मालवीय विशेषांक' एक संग्रहणीय दस्तावेज़ बन गया है जिसमें महामना मलवीय जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का बहुमुखी आकलन हुआ है। स्वतंत्रता पूर्व के उस युग में इन मनीषियों ने किस प्रकार राष्ट्र के गौरव को अक्षुण्ण रखने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, उसी का ज्वलंत उदाहरण है मालवीय जी का महापुरुषत्व। देश की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए उन्होंने जो प्रयास किये, विभिन्न क्षेत्रों में उनका जो अवदान रहा, उसे अगर इस समय प्रस्तुत नहीं किया जाता तो वह कभी सामने नहीं आ पाता। क्योंकि समय की धारा उन तत्वों को और गहरे धकेल देती। आज तो फिर भी उनको प्रत्यक्ष जानने वाले और उनके उन क्रिय-कलापों के साक्षी मौजूद हैं। उन्हें खोज-खोज कर उनकी स्मृतियों को जगाना और लिपिबद्ध करवाने में भी संपादक मंडल के कितने प्रयासों और निष्ठा की परीक्षा हुई होगी! और आज हमारे हाथ में है उन प्रयासों का सुफल - एक स्थान पर एकत्र उस महान व्यक्तित्व की जीवन्त स्मृतियाँ। जिन उच्च आदर्शों को लेकर उन्होंने राष्ट्र का भविष्य सँवारा। आज की पीढ़ी के लिए उन्हें जानना बहुत आवश्यक है और यह सारी जानकारी संचित कर 'हिन्दी चेतना' ने जो एक उज्ज्वल अध्याय रचा वही है यह अंक - संग्रहणीय दस्तावेज़!

डॉ. प्रतिभा सक्सेना
अमेरिका

'हिंदी चेतना' का अनुभव परक, चिन्तन और विश्लेषणपूर्ण विपुल सामग्री से लबालब भरा 'महामना मालवीय विशेषांक' मिला जिसके लिए समस्त सम्पादक मंडल को अनेकानेक साधुवाद। निःसंदेह इसमें संकलित लेख महामना जी को और जानने तथा समझने के नये गवाक्ष खोलते हैं। वर्तमान समय में जब चारों ओर वैमनस्य, हिंसा, शोषण का सुनामी तूफान कहर ढा रहा हो और भ्रष्ट राजनीति का बोलबाला हो तब हमारी सोयी हुई चेतना को निश्छल, निष्ठावान, शांति के उद्घोषक और मानवता के समर्थक महामना मालवीय जी जैसे उदात्त चरित्र के माध्यम से ही जाग्रत करने का आपका यह नायाब तरीका सराहनीय है।

निःसंदेह आपके विशेषांक पठनीय तथा संकल्पनीय तो होते ही हैं साथ में उनमें वैचारिक अतृप्ति की पूर्ति की सम्भावनाएं भी जुड़ी रहती हैं।

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी
कैनेडा

'हिन्दी चेतना' का महामना मालवीय विशेषांक अद्‌भुत बना है। आप सबकी मेहनत इसके हरेक पन्ने पर दिखाई पड़ती है। आज के दौर में उन जैसे लोगों के बारे में काम करना बहुत ही ज़रूरी है ताकि आने वाली पीढ़ी को उनके बारे में जानकारी मिले। मुझे यह अंक बेहद अच्छा लगा और बहुत कुछ जानने को मिला। हिन्दी चेतना की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. अंजना संधीर
अहमदाबाद

हिंदी चेतना का विशेषांक कल सायं-काल मिला। देखकर मन प्रसन्न हो गया। इतना अच्छा अंक निकालने के लिए स्वयं आप और श्रीमती सुधा ढींगरा मेरी हार्दिक बधाई और साधुवाद स्वीकार करें।

भारत माता के इस महान और अनन्य सपूत के इस अंक में परिश्रम पूर्वक एकत्रित की सामग्री को इतने सुंदर ढंग से सम्पादित करने की कला की प्रशंसा तो करनी ही पड़ेगी। साथ ही देश के बाहर संसार भर में और विशेषताः नई पीढ़ी को महामना से अवगत करने का पुण्य-कार्य भी अंक की देन होगी। पुनः बधाई।

केदार नाथ साहनी
भारत

◆◆◆

R. Kakar Medicine Professional Corporation
Neo Unlimited Medical Assessments (NUMA)
Neo Pharmaceutical Ltd.
Neo EMR Psych

President, Consultant Psychiatrist
Dr. R Kakar M.B.B.S., M.D., L.M.C.C, F.R.C.P.(C)., M.C.S.M.E.
Voted by "Esteemed World Professional Association of Who's Who"
As Member of The Year
2008 - 2009

Address Suite 222, 3447 Kennedy Road
Tel: 416-298-2090 Agincourt, ON. M1V 3S1
416-298-2363 Cell: 647-271-4260
Fax: 416-298-3493 E-Mail: rvkakar@yahoo.ca

Office Hours
By Appointment

Indo-Canada
Income Tax Services Ltd.

Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants

☎ 905-264-9599

905-264-9587

15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

Mistaan Catering & Sweets Inc.

Specializing in Bengali Sweets We do catering for Weddings & Parties

मिष्ठान की मिठाइयाँ

मिष्ठान की मिठाइयाँ
खाओ रसगुल्ले और रस मलाइयाँ

Our Daily Take-out Foods include:

Channa Bhatura	Aloo Ghobi
Malai Kofta	Matter Paneer
Channa Masala	Chicken Masala
Chicken Tikka	Tandoori Chicken
Butter Chicken	Goat Curry

& many more delicious items

अब आप बैठ कर खाने-पीने का आनन्द ले सकते हैं

460 McNicoll Avenue, North York, Ontario M2H 2E1

Visit Our Website: www.mistaan.com

Telephone: (416) 502-2737 Fax: (416) 502-0044

इक फासले के दरम्यान खिले हुए चमेली के फूल

किशोर चौधरी

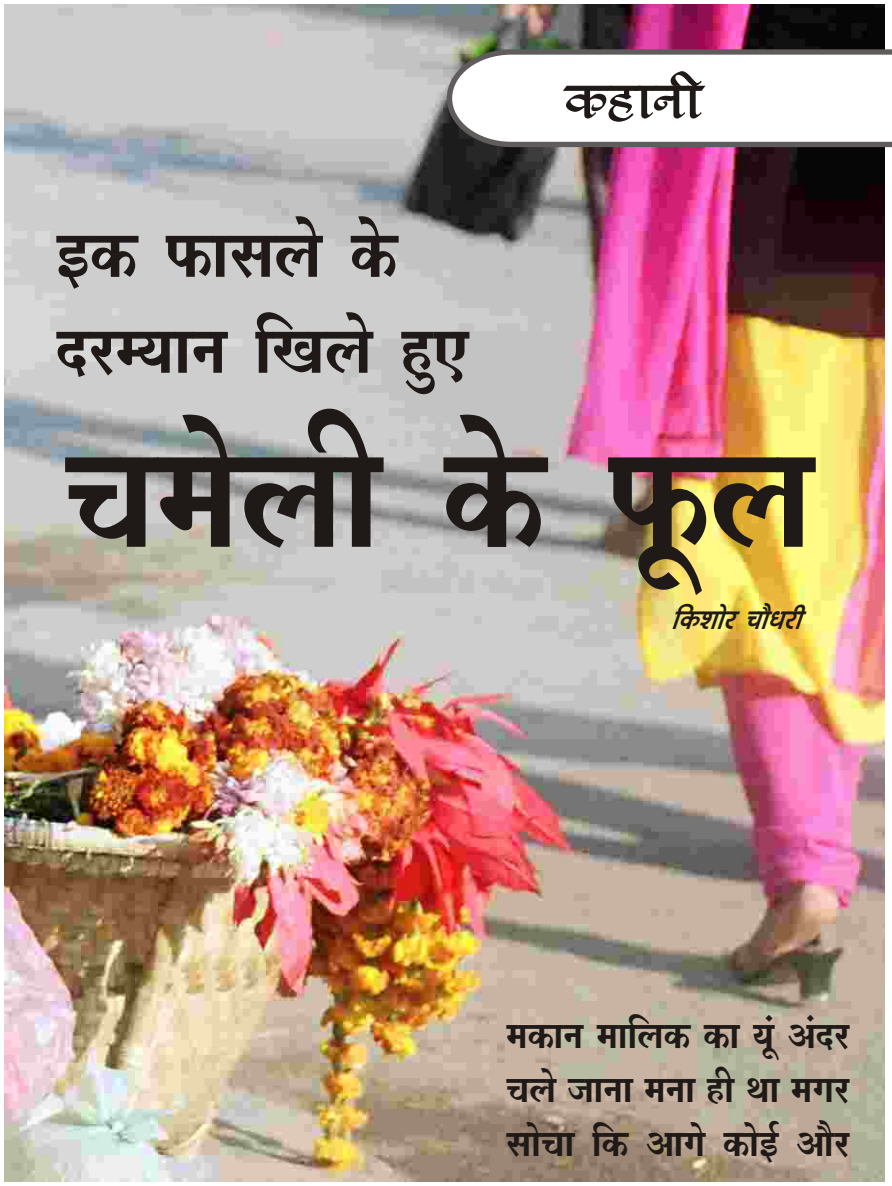

मकान मालिक का यूं अंदर चले जाना मना ही था मगर सोचा कि आगे कोई और घर देखना नहीं है इसलिए कुछ देर सुस्ता कर चली जाये। कैसा अजब समय था कि सड़कें, गलियां, दीवारें, कहवाखाने, सिनेमाघर और ऐसी ही सब चीजें जिन्हें वह बरसों से जानती थी अजनबी हो गए थे।

रसोई की खिड़की से उन पर हल्की सफ़ेद रौशनी पड़ रही थी। वे चमेली की बेल पर लगे हुए फूल थे। दूधिया जुगनुओं की तहर चमकते हुए। बेल जो झाड़ी जैसी हो गई थी। ज़रा उचक कर गौर से देखो तो लगता था कि रात की स्याही में उसने एक घात लगाये हुए वन बिलाव की शक्ल ले ली है। वे अनगिनत थे। दीवार के सहारे चमकते हुए और नीचे कहीं धुंधले से दिखते हुए। नैना की ज़िन्दगी की तरह बिना करीने के खिले हुए। जहाँ मर्ज़ी हुई खिल आये। खिड़की की वेल्डिंग पर, मुख्य दरवाज़े की कड़ियों के बीच और लोहे की कोबरा फेंसिंग पर भी मगर हरदम मुस्कुराते हुए। नैना जब से इस घर में आई तब से इसे देख रही है कि फूल उसे चिढ़ाते हुए उगा करते हैं। वह इसके प्रति ज्यादा रिएक्ट नहीं करती थी कि लोग समझेंगे पागल है जो चमेली के फूलों से नफ़रत करती है। इसी सदाशयता का फायदा उठाते चमेली के फूल हर साल खिलते और झड़ कर उसके पांवों में आ जाते। बैरी हवा भी उनका ही साथ देती। वह उचक कर अपने पैरों को लकड़ी की कुर्सी के ऊपर उठा लेती जैसे कोई सांप सरसरा गया हो।

उस घर में लोग भी ऐसे कोई नहीं थे, नैना की उम्र से पंद्रह साल बड़े एक सरदार जी थे। निपट अकेले, वह जब पहली बार इस घर का दरवाज़ा खोल कर अंदर आई, तब वे बिना किसी को बुलाये चुग्गा डाल रहे थे। घर में कबूतर थे मगर सरदार जी को देख कर शालीनता से संवाद करते हुए। वे इतने शांत थे कि कभी पास का दरिया भी उनकी चुप्पी को देख कर सहम जाया करता होगा।

उन्होंने सर उठाया और पूछा 'कहिये...'

नैना ने उनको नमस्ते किया फिर अपनी गोद से निकी को उतारा और कमर सीधी करते हुए कहा 'मुझे मालूम हुआ कि आपके यहाँ

BEST WAY CARPET & RUGS INC.

$50.00 Off All wall to wall Carpet with purchase up to 300 sq. ft.
10% Off all Area Rugs

Free delivery under pad Installation

• Residential • Commercial • Industrial • Motels & Restaurants

Free Shop at Home Service Call: (416) 748-6248

• Broadloom • Area Rugs • Runners • Vinyl & Hardwood • Blinds & Venetian
Custom Rugs • All kind of Vacuums

Interest Free
6 months No Payment
OAC

7003, Steeles Ave. Unit 8
Etobicoke
ON M9W OA2
Ph: 416-748-6248
Fax: 416-748-6249

1 Select Ave, Unit 1
Scarborough
ON M1V 5J3
Ph: 416-321-6248
Fax: 416-321-0929

रहने को जगह मिल जाएगी, मुझे किराये पर एक कमरा चाहिए।'

उन्होंने शायद सुना नहीं और वे बरामदे से घर के अंदर चले गए। नैना को उस समय वह चमेली के फूलों वाली झाड़ी नहीं दिखाई दी वरना उठ कर चल देती। बरामदा दो सीढ़ी ऊपर था। पक्के सीमेंट के फर्श से बना हुआ। एक हाथ उस पर रखते हुए नैना को लगा कि बाहर गर्मी कुछ ज़्यादा ही है और वह निकी के पास बैठ गयी। मकान मालिक का यूं अंदर चले जाना मना ही था मगर सोचा कि आगे कोई और घर देखना नहीं है इसलिए कुछ देर सुस्ता कर चली जाये। कैसा अजब समय था कि सड़कें, गलियां, दीवारें, कहवाखाने, सिनेमाघर और ऐसी ही सब चीज़ें जिन्हें वह बरसों से जानती थी अजनबी हो गए थे। अब कोई एक कमरा ऐसा न था जो उसका इंतज़ार करता हो।

वह एक टांग बरामदे से नीचे और दूसरी को मोड़ कर निकी को गोदी में लिए बैठी हुई साहस बटोर रही थी कि कल फिर सायमन को कहेगी कि नया घर खोजो प्लीज़।

सुख कहाँ होता है, सीपी को उसके खोल में या फिर कछुए कि मजबूत पीठ के नीचे दबा हुआ। उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई कहीं सुख नहीं था। शांति थी, असीम शांति फिर उसे याद आया कि शांति भी सुख का एक स्वरूप है। तो क्या वह सुख से घिरी बैठी थी?

एक आवाज़ थी 'ये लो...' सरदार जी ही थे। एक हाथ में प्लास्टिक की ट्रे लिए हुए। उसमें एक दूध का छोटा ग्लास, दो बिस्किट और एक पानी की बड़ी बोतल रखी हुई थी। वह हतप्रभ थी कि अगर थोड़ा सा और न रुकती तो अब तक पोस्ट ऑफिस के पार जा चुकी होती। उसे अगली तीन बातों से अहसास हुआ कि अगर वह सचमुच चली जाती तो इस दूरी को सुख और दुःख के सेंटीमीटर में नापना कितना मुश्किल हो जाता। पहली बात सरदार जी ने कही 'मेरा नाम तेजिंदर सिंह है। मेरे दो बेटे हैं वे विदेश में रहते हैं। पत्नी तीन

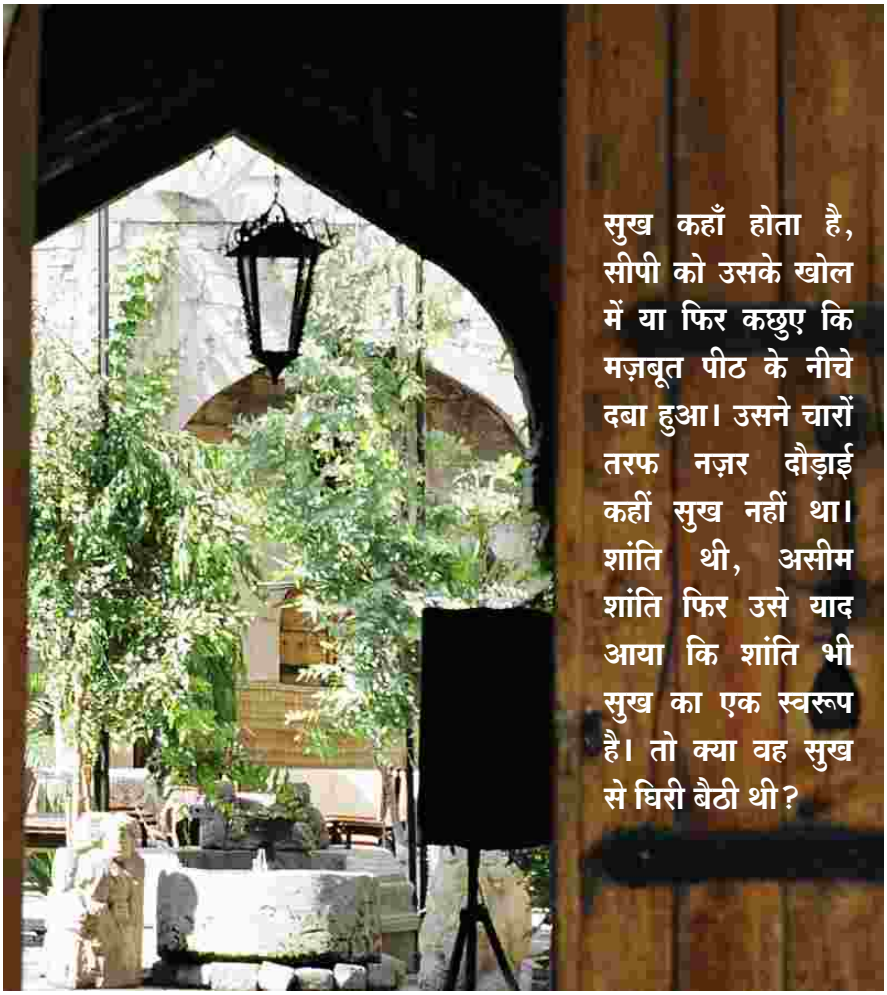

साल पहले चल बसी। खाना खुद बनाता हूँ और शाम को रोज़ ही दो पैग ब्लैक रम के नियम से लेता हूँ। इस घर के किराये से कबूतरों के लिए चुग्गा आ जाये ये मुझे पसंद नहीं फिर भी तुम चाहो तो यहाँ रह सकती हो।' वे अपने चेहरे के लिए उपयुक्त धैर्य ढूँढने लगे।

निकी दूध पी कर खुश हो गई। उसने आधा बिस्किट गिरा दिया था और आधा कमीज़ से पौंछ लिया था। नैना ने कहा 'रहने को जगह कहाँ मिलेगी?'

तेजिंदर जी ने घर पर एक विहंगम दृष्टि डाली। हर कमरे को, खिड़की को गौर से देखा। जैसे पूछ रहे हों कि ये औरत तुम्हें बरदाश्त कर सकेगी? फिर बोले 'दायीं तरफ मेरे छोटे बेटे ने अलग पार्टीशन करवा लिया था दो कमरे और किचन का, उसी में लेट-बाथ भी है। घर में होते हुए भी दोनों बहुत अलग हैं। एक ही घर में खड़े हुए इन दो घरों के बीच में बस एक छोटी सी खिड़की है, तुम्हें तकलीफ हो तो उसे बंद कर देना।'

इस दूसरी बात के बाद नैना ने तेजिंदर सिंह से मुखातिब होकर कहा 'हर शाम एक लड़की आया करेगी निकी को रखने के लिए। वह चार घंटे रहेगी आपको एतराज़ तो नहीं होगा?'

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'नैना...'

'नैना, मैंने एतराज़ों को कनकोव्वे बना कर उड़ा दिया है, मगर जरा देर से...' ये कहते हुए तेजिंदर सिंह अंदर चले गए।

> वे अब चमेली के फूलों से दस कदम दूर खड़े थे। तेजिंदर सिंह ने एक ठंडी आह भरी। 'ये बेल मेरे छोटे बेटे ने लगाई थी। जिसने इस घर में रहते हुए इसके दो हिस्से किये फिर वही एक दिन रूठ कर विदेश चला गया। इस बार दसवीं बार फूल आये हैं। पता है ये फूल उसने इसलिए लगाए कि उसकी माँ को पसंद थे।

एक फौरी यानि तात्कालिक मुसीबत का हल होते ही पूरी ज़िन्दगी आसान लगने लगती है। नैना ने भी दूसरा पांव सीधा कर लिया और निकी को गोदी से उतार दिया। ऐसे ही कई साल बीत गए। अब एक घर था जिसकी छत के तले वह सो जाया करती थी। यही तो ज़िद थी उसकी कि मुझे घर नहीं चाहिए। क्या एक बात पर दो लोग ज़िन्दगी को अलग रास्तों पर ले जा सकते हैं? क्या हज़ार सहमतियों को भुला कर एक असहमति को याद रखा जाना अच्छा है? उसके मन में ऐसा गुमान भी नहीं था कि ये एक बात साथ रहेगी बाकी सब छूट जायेगा।

वह प्रेम करने का समय नहीं था। दिन के साढ़े तीन बज रहे थे। अभी दो घंटे और बाकी थे लेकिन उसने उसी समय उसे देखा था। वह गमलों को सरका रहा था। कैफे के शीशे लगे मुख्य दरवाज़े के बाहर दोनों तरफ तीन स्टेप्स में गमले रखे हुए थे। उनमें भांत-भांत के फूल खिले रहे थे। उसने दो गमलों के बाद तीसरा सरकाया और अपने लिए जगह बना ली। नैना ने उस समय नहीं सोचा कि जो आदमी दूसरों को सरका कर जगह बना रहा है कब तक उसका साथ देगा। वास्तव में ये प्रेम करने का समय नहीं था फिर उसने दिन के ठीक साढ़े तीन बजे ही उसे पहली बार देखा था। ब्लू कलर की डेनिम जींस और लाल रंग का बदरंग कुरता पहने हुए। उसने अपनी दायीं तरफ में गिटार का कवर रख कर उस पर मोड़ा हुआ घुटना रख लिया फिर उसने बायीं जांघ पर रखते हुए गिटार के एक तार को हल्के से छू भर दिया।

ज़िन्दगी में वक्त का कोई हिसाब नहीं है। कभी आप एक गुड्डे-गुड्डी के नाचते हुए खिलौने को दिन भर देखते हुए विंड चाइम का संगीत सुन सकते हैं और कभी एक पल भी भारी हो जाया करता है तो उन दिनों नैना के पास विंड चाइम को सुनने का समय था। वह रात नौ बजे कैफे से निकलती तब वह अपने गिटार को केस में डाल रहा होता। सड़क सबके लिए थी। अभिजात्य और निम्न वर्ग के लोगों में भेद करना कठिन था कि उस दौर में लोग जैसे थे, वैसा दिखना नहीं चाहते थे। वे दोनों सड़क पर साथ चलते थे। एक दिन बस स्टाप की बेंच पर देर तक बैठे रहे। हवा में कोई मादक गंध न थी। सूखे पत्तों से ज्यादा सिगरेट की पन्नियों का शोर था। उन्होंने बस एक गंध से पहचान बना रखी थी जो निरंतर गाढ़ी होती चली जा रही थी।

नैना ने झट से उफन रही दाल पर रखे ढक्कन को उठाया। अंगुली जल गई। ऐसे ही उसने भी एक बार जली हुई अंगुली पर चमेली के फूलों को बाँध दिया था। हँसता था, खिल उठेगी अंगुली फूल की तरह और अगली सुबह एक फफोला निकल आया। अब भी रसोई के बाहर रौशनी में फूल चमक रहे थे। वे ही नाकारा फूल। वह जब हाथ पकड़ता तब दौड़ने सा लगता था। उसे कोई जल्दी याद आ जाती थी नैना का साथ पाते ही वरना अक्सर बास्केट बाल के खम्भे से टेक लिए गिटार बजाते हुए दिन बिता देता था। उसके पास एक चमेली के फूलों की तस्वीर वाला थर्मस भी था, जिसमे ब्लैक कॉफ़ी भरी रहती थी। दिन कड़क हो या ठंडा उसने कॉफ़ी का रंग कभी नहीं बदला। एक दोपहर उसने ख़ास उसे बुलाया था। देखते ही उठा और हाथ पकड़ कर भागने लगा। वह उसे एक पाश कालोनी के पुराने बंगले में ले गया। दरवाज़ा खोलते हुए दीवार से सटी खड़ी चमेली की बेल दिखाने लगा। नैना ने याद किया कि वह वाकई पागल था अव्वल दर्जे का पागल कि एक फूल के लिए इस तरह उसे भगा लाया था। वह खड़ा देखता रहा और नैना सोचती रही कि अभी घर से कोई आएगा और उन दोनों को दुत्कार कर बाहर कर देगा।

इस घर में रहते हुए दस साल हो गए। इन दस सालों में तेजिंदर सिंह ने कभी उस छोटी खिड़की से कोई चीज नहीं ली। नैना कहती, आज मैंने कुछ आपके लिए बनाया है तो तेजी साहब कहते बड़े दरवाज़े से आओ, ये चोर खिड़कियाँ तो मुझे रिश्तों की जेल सी लगती है। नैना लगभग रोज उनका खाना बनाती और रोज़ ही ये संवाद होता था। इससे ज्यादा वे कुछ नहीं बोलते। खाने की परख नहीं करते थे जैसा था वैसा था। निकी के साथ नहीं खेलते थे। उससे उतना ही नाता था जितना कि गुटर गूं करते कबूतरों से। नैना को कुछ अधिकार स्वतः प्राप्त लगते थे यानि वह पिछले दस सालों में इस बेल को कटवा सकती थी। ये चमेली की गंध उससे दूर हो भी सकती थी मगर ऐसा हुआ नहीं। एक दो बार उसने चमेली को पास खड़े हो कर देखा था फिर यकायक लगा कि कोई देख रहा है। सरदार तेजिंदर सिंह उसे और चमेली को गूढ़ अर्थों में एक साथ देख रहे थे। वह सहम गई और फिर कभी उस बेल के साथ सट कर खड़ी नहीं हुई।

शहर में हादसा हो गया। उसने किसी अधिकार से उसे रोक लिया। आज की रात मत

जाओ। एक कमरे का फ्लैट। स्नान घर को छोड़ कर सब उसी में था। एक कोने में रसोई एक में बेड रूम एक में बालकनी। वे उस रात सोये नहीं थे इसलिए फिर दो साल तक उसका दुख उठाना पड़ा। नैना खुश थी। वह नहीं था। ये बंधन है। ये पथरीली चट्टान है। ये इंसानी आज़ादी के साथ धोखा है। सच में वह वही था जो गमलों को सरका कर अपने लिए जगह बना रहा था। गिटार बजाता था मगर उसकी धुनें क्षण भर बाद खो जाती थी व्योम के धूसर अँधेरे में। आखिर एक दिन नैना इन बातों को सुनते हुए थक गई।

'मैं बोझ हूँ तुम्हारे लिए... ये दो साल की बच्ची बोझ है तुम्हारे लिए?'

वह चुप रहा। खिड़की पर चला गया। नीचे गली में बाहर बच्चे खेल रहे थे हालाँकि जगह नहीं थी फिर भी कोई कार चौका थी तो कोई स्कूटर तक बाल का जाना दो रन तय था। बच्चे हर बाल को फैंक कर और हिट करके खुश होते उनकी ख़ुशी में वह उदास होता जाता। वापस लौटा तो वही दो साल की बच्ची और नैना चुप बैठे उसके उत्तर का इंतज़ार कर रहे थे।

'मैं ऐसे परिवार बना कर नहीं रह सकता...'

'मैं बिना घर के नहीं रह सकती।'

'मैंने पहले ही कहा था कि मुझे घर बनाने से नफ़रत है।'

'मगर ये तो नहीं कहा था कि बच्चों से भी है...'

एक चुप्पी के बाद वह बोला।

'ये तुम्हारी ज़िद थी, और घर भी... मैं इसका भागीदार नहीं हूँ।' टहलने लगा जैसे उत्तर का इंतज़ार कर रहा हो।

'ओ के, तुम जा सकते हो...'

'तुम कहाँ जाओगी?'

'ये पूछने का हक़ उसको नहीं है जो छोड़ कर जाना चाहता है।'

'मेरा ठिकाना नहीं है इसलिए बता नहीं सकता, मगर तुम तो घर बनाओगी ना...'

'नहीं, तुम ये अधिकार नहीं पा सकते कि लौटने के लिए एक पता रखो और मैं...'

वे अलग हो गए। शामें यूं ही गुजरती रहीं। एक कैफे था जहाँ वह पार्ट टाइम जॉब को फुल टाइम के तरीके से करती। गिटार बजाने वालों कि जगहें डीजे ने ले ली थी मगर उसकी ज़िंदगी में कुछ धुनें ठहर गयी थी जैसे बास्केट बाल का पोल पुराना होने के बावजूद गिरता नहीं था।

नैना ने एक बार अपने कंधों को पीछे की ओर झुकाया। निकी टेबल पर अपने खिलौने सजा रही थी। निकी ने जाने कैसे एक आदत बना ली थी कि वह अपना होमवर्क स्कूल में ही पूरा कर लिया करती थी। नैना ने सोचा, काश उसने भी एक आदत बना ली होती कि वह जाने की ज़िद करता और वह हर बार चुप रह कर उसे रोक लेती। कितना अच्छा होता कि उसकी यादें गिनी-चुनी चीज़ों में रह जाती। ऐसा नहीं हुआ। जिनको वो पसंद करता था, उनमें वह याद आता था और जिनको नहीं उनमें भी।

तेजिंदर सिंह के घर में वह बिना किसी रिश्ते और किराये के दस साल से रह रही है। वे कभी उससे बात नहीं करते बस जवाब देते हैं। क्या वो ऐसे नहीं रह सकता था।

शाम उदास, सुबह खाली और दिन पीले... बस बीतते गए। इधर साझे घर में तेजी साहब कबूतरों की कौन-सी पीढ़ी को पाल रहे थे, पता नहीं। नैना ने दाल को बघार लगाया। चमेली के सफ़ेद फूलों की तरफ एक उजड़ी हुई निगाह डाली। सलाद को सलीके से रखा और रसोई से चल पड़ी। दरवाज़ा खुला था। तेजी साहब तहमद और कुरता पहने चुप बैठे थे। सामने टीवी पर कोई पंजाबी गीत बज रहा था जिसमे एक नौजवान सरदार उछलकर गा रहा था मगर लड़की पीले फूलों वाले खेत में चुप चली जा रही थी। नैना ने सलाद और दाल की कटोरी रखी। वे कुछ नहीं बोले। एक नज़र घुमाई और लैपटॉप को देखने लगे। मेल खुला हुआ था और इन बॉक्स खाली था।

नैना बैठ गयी।

घर कैसा हो गया है। खाली पड़े स्वीमिंग पूल की सूखी हुई काई के हरे रंग सी दीवारें। तस्वीरों से झांकते बेनूर चेहरे और जगह-जगह उगा हुआ खालीपन। ये दीवारें अगर न हों तो कैसा दिखेगा? आसमां से टूटे तारे के बचे हुए अवशेष जैसा या फिर से हरियाने के लिए खुद को ही आग लगाते जंगल जैसा। जैसे जंगल खुद को आग लगाता है, जैसे कई पंछी भी आग में कूद जाते हैं। जंगल अपनी मुक्ति के लिए दहकता है या अपने प्रिय पंछियों के लिए, ये नैना को आज तक समझ नहीं आया था।

चुप्पी में दाल के तड़के की गंध तैरती रही। तेजी साहब नहीं उठे। नैना, इन दस सालों में पहली बार उनके पास आकर बैठी थी, उसने आगे बढ़ कर एक ग्लास और ब्लैक रम की बोतल उठा ली। उसके ऐसा करने के पीछे जो भी महान या क्षुद्र विचार रहा होगा उसे झटकते हुए आहिस्ता से तेजिंदर सिंह उठे। ला अपना हाथ दे। वे दोनों धीरे-धीरे चलने लगे। बाहर हवा में ठंडक थी। कहीं दूर कोई पंछी बोल कर चुप हुआ जाता था। वे बरामदे से बाहर आ गए। मकान के दायें हिस्से की तरफ बढ़ते हुए नैना रोने जैसी थी कि उसको समझ नहीं आया कि ये हाथ पापा ने थाम रखा है या उसने... मन भीगने लगा।

वे अब चमेली के फूलों से दस कदम दूर खड़े थे। तेजिंदर सिंह ने एक ठंडी आह भरी। 'ये बेल मेरे छोटे बेटे ने लगाई थी। जिसने इस घर में रहते हुए इसके दो हिस्से किये फिर वही एक दिन रूठ कर विदेश चला गया। इस बार दसवीं बार फूल आये हैं। पता है ये फूल उसने इसलिए लगाए कि उसकी माँ को पसंद थे।'

वे लौटने लगे। तेजिंदर सिंह ने मुड़ कर मुस्कुराते हुए चमेली के फूलों को देखा। 'नैना, मैंने कई बार सोचा कि इस बेल को कटवा दूं मगर तुझे इन फूलों को देखते हुए देखा तो मन नहीं माना। ◆◆◆

FAMILY DENTIST

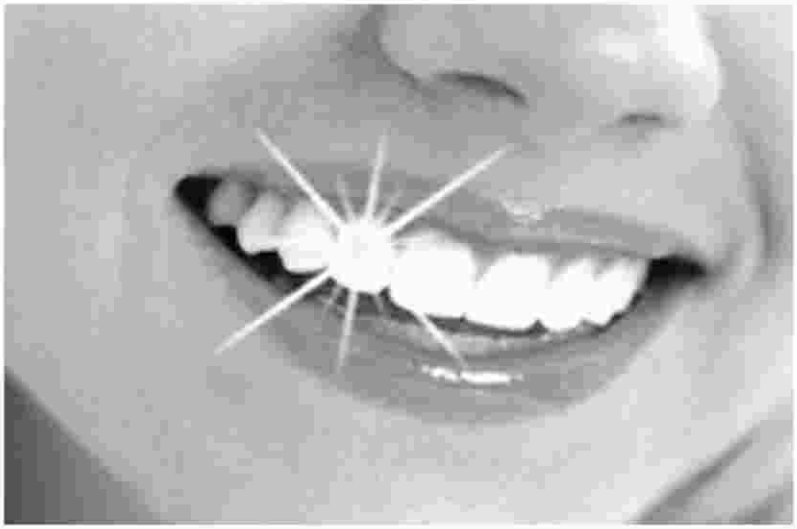

Dr. N.C. Sharma
Dental Surgeon

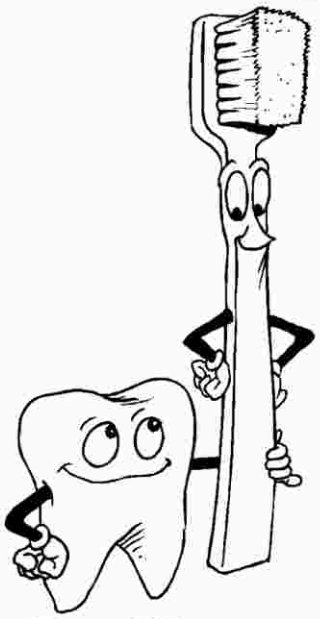

Dr. C. Ram Goyal
Family Dentist

Dr. Narula Jatinder
Family Dentist

Dr. Kiran Arora
Family Dentist

Call us at: 416-222-5718

1100 Sheppard Avenue East, Suite 211, Toronto, Ontario M2K 2W1 Fax: 416-222-9777

मैं रमा नहीं

अनिल प्रभा कुमार

अपॉर्टमेंट का नम्बर ठीक था। मुझे घंटी का बटन नहीं दिखाई दिया। धीरे से दरवाज़ा थपथपाया, हालांकि दरवाज़ा सिर्फ़ उढ़का हुआ था, बन्द नहीं।

'कम इन' एक खरखरी सी मर्दानी आवाज़ ने जवाब दिया।

दरवाज़ा खोलते ही एकदम सामने वह लेटे थे, अस्पताल नुमा बिस्तर पर। पलंग सिरहाने से ऊंचा किया हुआ था। झकाझक सफ़ेद कुर्ता-पाजामा पहने, चेहेरे पर दो-तीन दिन पुरानी दाढ़ी और उम्र शायद साठ के आस-पास। नाक पर नलियां लगी हुईं। उनके दायीं ओर रैस्पीरेटर था।

उनकी बड़ी-बड़ी आंखें मुझ पर टिक गईं। पल भर में मैं काफ़ी कुछ समझ गई। उनके बारे में बहुत कुछ सुना हुआ था। मैने शिष्टता से हाथ जोड़ दिये। उन्होंने सिर हिलाकर मेरा अभिवादन स्वीकार किया। आंखें फिर भी मुझे घूरती रहीं।

कमरे के बीच में एक बड़ा सा टेलीविज़न था। मुझे लगा जैसे यह लगातार चलता रहता होगा। उनकी आंखें टेलीविज़न स्क्रीन को पकड़े हुई थीं। शरीर हिलने डुलने में असमर्थ था पर उनका मन शायद इसी के सहारे से उड़ान भरता होगा।

'जी, रमा बहन हैं? मैंने उन्हें रोटी बनाने का ऑर्डर दिया था।'

वह सहज हुए। आंखें बायीं ओर घूमीं।

एक खिलती-मुस्कराती महिला आटे से सने हाथ लिए बाहर निकलीं।

'आप ने ही 'वेन' से फ़ोन किया था न?'

'जी, आप रमा बहन हैं?'

'हां मैं ही हूं।' उन्होंने ऐसे आत्मीयता से मुस्कुरा कर परिचय दिया जैसे बहुत अरसे से जानती हों।

'सॉरी, बस पांच–दस मिनट और लगेंगे। तब तक आप बैठिए।' कह कर वह वापिस मुड़ गई।

मैं यूं ही खड़ी रही। बैठने की कोई जगह दिखी नहीं।

एक लम्बा सा कमरा। जिसका एक छोर था उनका अपाहिज पति और दूसरा छोर था उनका किचन। शायद वह इन्हीं दोनों छोरों के बीच घूमती रही होंगी – हंसती, रोती, बोलती हुई या ख़ामोश।

कोने में लटके मनीप्लांट की शाखाओं को सुतली से बांधकर, कमरे की छत के अन्दर एक चंदोवा सा तना था। घर के अन्दर बाहर की हरियाली को मनाकर ले आने की एक कमज़ोर सी क़ोशिश। कमरे के बीच में एक बड़ा सा टेलीविज़न था। मुझे लगा जैसे यह लगातार चलता रहता होगा। उनकी आंखें टेलीविज़न स्क्रीन को पकड़े हुई थीं। शरीर हिलने डुलने में असमर्थ था पर उनका मन शायद इसी के सहारे से उड़ान भरता होगा।

उनकी आंखों के सामने ही दीवार पर एक जोड़े का सुन्दर सा चित्र था। मैंने ध्यान से देखा, औरत की शक्ल पोस्टरों में लगी देवियों से मिलती–जुलती थी और बड़ी–बड़ी आंखों वाले पुरुष की...? मैंने पलट कर देखा – संशय हुआ कि कहीं इन्हीं का चित्र न हो।

'लीजिए आपके पचास परांठे।' वह हाथ में बड़ा सा पैकेट उठाए बाहर आई।

'कितने हुए?'

उन्होंने दाम बताए। मैंने गिनकर उन्हें क़ीमत पकड़ा दी।

'यह फ़ोटो...?' मैंने जानबूझ कर प्रश्न पूरा नहीं किया।

'ओह!' उनके चेहरे पर कोमलता तिर आई।

'यह तो बहुत पुरानी है। हमारे अमरीका आने से भी पहले की। भारत में खिंचवाई थी। अब तो हमें भारत गए भी सत्ताईस बरस हो गए।' उनकी आवाज़ धंस गई। वह अभी भी उस फ़ोटो को देख रहीं थीं जिस में वह सीता की तरह लगती थीं।

'अच्छा, थैंक्यू।' कह कर मैं उनके गले लग गई। उन्होंने भी मुझे बड़ी आत्मीयता से गले लगा लिया।

'बेन, आते रहना। मेरे लिए कुछ भी काम हो तो। मैं कुछ भी किसी भी तरह का खाना बना सकती हूं।'

'ज़रूर' कह कर मैं लौटी। उनके पति शायद सो गए थे। मेरे नमस्कार को उठे हाथ अधबीच ही गिर गए।

ख़रीददारी करके घर लौटी। सामान वापिस रखने–धरने में ही थक गई। रमा बहन मन पर धरना देकर बैठी थीं। एक थी तस्वीर में मुस्कुराती सुन्दरी और दूसरी थी वह औरत जिससे मैं आज मिलकर आई हूं। चित्र वाली औरत की छाया भर–प्रौढ़ छाया। गुजराती शैली की साड़ी की जगह पर ढीली सी पैंट, टी–शर्ट, कस कर बांधे बालों में सफ़ेद फूलों की जगह थी बालों की बेरहम सफ़ेदी। थका पस्त चेहरा, फिर भी मुस्कुरातीं तो उनके सफ़ेद सुन्दर दांतों की कौंध सोचने को विवश कर देती कि यह औरत मुस्कुरा कैसे लेती है?

फ़ोन बजने से ध्यान बंटा। दीपा थी।

'आपसे उस दिन स्टॉफ़ पार्टी में मिलकर बहुत अच्छा लगा था।'

'हां, हां मुझे भी बहुत अच्छा लगा।' मैंने औपचारिकता निभाई। पर इस वक्त मैं प्रोफ़ेसर का चोला उतार कर गृहणी के भेष में आ चुकी थी। बाहरी–भीतरी दोनों तरह से।

'मैं आपसे मिलना चाहती हूं, आप इस वक्त क्या कर रही हैं?'

मैं चौंकी। इस वक्त बिल्कुल किसी से मिलने के मूड में नहीं थी।

'अ, अ...' मेरे गले से कुछ हकलाई सी आवाज़ निकली।

'मेरा मन इस वक्त बहुत परेशान है। नहीं तो मैं यूं ऐसे आप को नहीं कहती।' उसकी आवाज़ में बेचारगी थी।

मैं झेंप गई। 'नहीं–नहीं ज़रूर आओ। बात यह है कि मैं अभी–अभी बाहर से लौटी हूं और घर बिल्कुल बिखरा हुआ है।'

'आप ऐसा कुछ मत सोचें। मैं बस आधे घंटे में आपके यहां पहुंच जाऊंगी।'

'आप मुझे दीपा' कह कर बुला सकती हैं।' पहले परिचय में उसने यही कहा था।

मेरे ही देश की एक और लड़की, हमारे ही विभाग में आई है – मैं अतिरिक्त गर्मजोशी से मिली। उसके चेहरे की ठंडी परत पर एक छोटी सी गर्म दरार तक न पड़ी। आज अचानक मेरे घर, मेरे सामने आकर बैठ गई।

उसका चेहरा देख कर मुझे लगा कि जैसे उसने न मुस्कराने की कोई क़सम निभाहने के लिए अपने जबड़े कस कर बन्द किए हुए हैं। हो सकता है कोई ख़ास बात हो जो वह मुझसे कहना चाहती है। उसकी पलकें तेज़ी से ऊपर–नीचे गिरती रहीं। कभी–कभी होठों को तर करने के लिए वह उन पर जीभ फेर लेती थी।

'चाय बनाऊँ?' माहौल को सहज बनाने के लिए मैंने पूछा।

उसने हामी में सिर हिलाया।

मुझे ध्यान आया, उसने बताया था कि वह इस शहर में नई–नई आई है और किसी के घर में एक कमरा लेकर रह रही है।

'लंच कब खाया था?' मैंने बिना किसी सन्दर्भ के पूछा।

उंउउऊं, वह सोचने लगी। फिर बोली 'नहीं खाया'।

मैंने एक बड़ा सा सैंडविच बनाकर चाय के साथ उसके आगे रख दिया। वह जल्दी–जल्दी खाने लगी।

'आपने चटनी, प्याज़ और हरी–मिर्च भी डाल दी है न तो बहुत करारा बना है।'

मैं एक और बनाने के लिए उठी तो उसने मना नहीं किया।

मैं उसे खाते हुए देखती रही। उसका चेहरा सुन्दर और असुन्दर की सीमा–रेखा पर पड़ता

था। कस कर पॉनीटेल की हुई थी। बड़ी-बड़ी आंखों के बावजूद उसमें कस्बाई परिपक्वता की झलक थी। उस दिन जब खुले बालों के साथ फ़ैशनेबल धूप का चश्मा और हल्की सी लिप-ग्लॉस लगाए थी तो आकर्षक महिला लग रही थी। यह तो स्पष्ट था कि वह उमर में मुझसे छोटी थी, पर कितनी मैं जान नहीं पाई।

खाना खाकर वह थोड़ी सहज हुई।

'आपके पति कब घर आते हैं?'

'इस हफ़्ते वह काम से बाहर रहेंगे।'

लगा जैसे वह बात कहने से पहले शब्दों को तोल रही हो।

'मुझे आपसे एक बात कहनी थी', कह कर उसने मुझे देखा।

मैं पूरी तरह से सुन रही थी।

'मैं यहां किसी को भी नहीं जानती। पता नहीं क्यूं लगा कि मैं आप पर भरोसा कर सकती हूं।'

मैने मुस्कुरा कर उसे आश्वासन दिया।

'शायद आपको मालूम होगा कि मैं टोरोन्टो में रहती हूं। यहां युनिवर्सिटी में पढ़ाने के लिए हर सोमवार सुबह पहुंचती हूं और गुरुवार शाम की फ़्लाइट लेकर वापिस चली जाती हूं।'

मतलब चार रातें कैनेडा में और तीन रातें अमरीका में। आदतन मैंने हिसाब लगाया।

'क्यूं करती हो ऐसा?'

'मेरा बॉय-फ़्रेंड है वहां। उसके लिए सफ़र कर पाना इतना आसान नहीं। मेरी नौकरी में ज़्यादा लचकीला-पन है।'

'तुम्हारे माता-पिता भी वहीं हैं क्या?'

'नहीं, वे भारत में हैं।'

मैं चुप कर गई। कुछ समझ नहीं पाई।

'मेरा और अर्जुन का फ़्लैट है टोरोन्टो में। हमने बहुत प्यार से उसे सजाया है। न्यू-जर्सी तो मैं सिर्फ़ नौकरी करने के लिए रह रही हूं। यहां घर बसाने का कोई इरादा नहीं।'

मैं सुन रही थी।

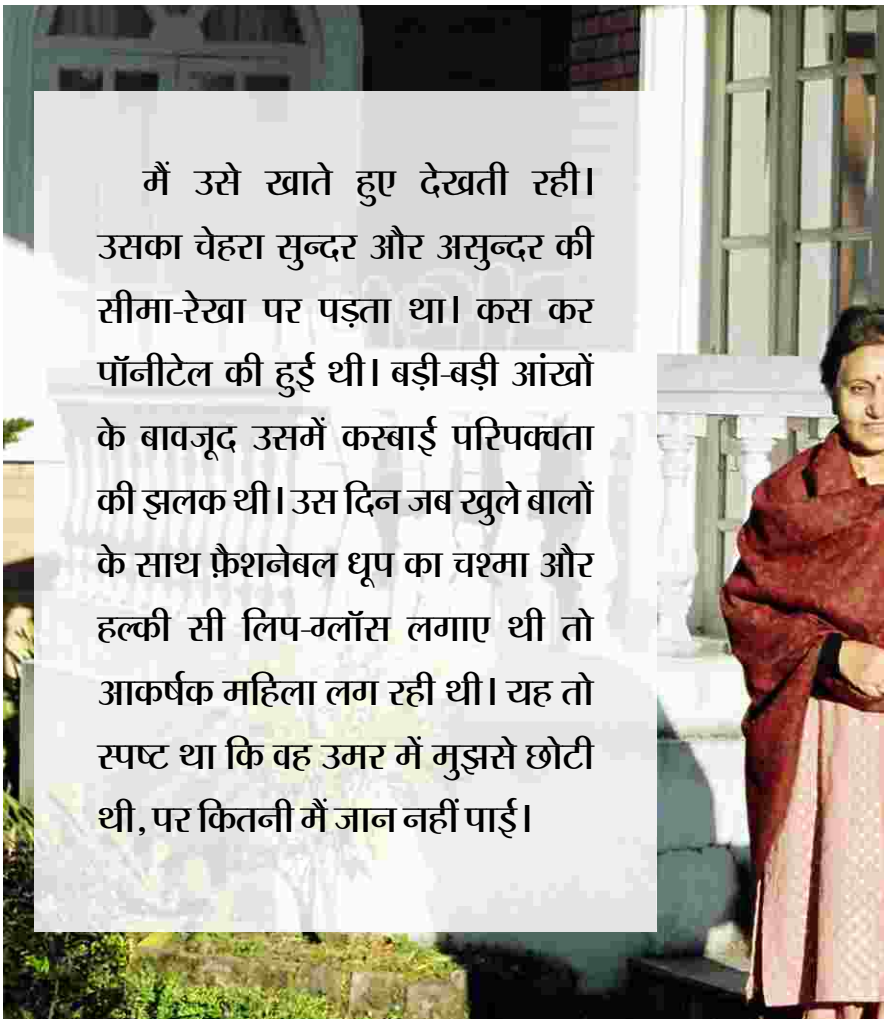

मैं उसे खाते हुए देखती रही। उसका चेहरा सुन्दर और असुन्दर की सीमा-रेखा पर पड़ता था। कस कर पॉनीटेल की हुई थी। बड़ी-बड़ी आंखों के बावजूद उसमें कस्बाई परिपक्वता की झलक थी। उस दिन जब खुले बालों के साथ फ़ैशनेबल धूप का चश्मा और हल्की सी लिप-ग्लॉस लगाए थी तो आकर्षक महिला लग रही थी। यह तो स्पष्ट था कि वह उमर में मुझसे छोटी थी, पर कितनी मैं जान नहीं पाई।

'ख़ैर, असल बात जो मैं आपसे कहना चाहती थी वह यह कि...' वह रुकी, दांतों से होठों को दबाया और मुंह दूसरी ओर कर लिया।

'आज सुबह मेरी उपकुलपति, विभागाध्यक्ष और यूनियन के प्रतिनिधि के साथ बैठक हुई थी और मैं सस्पेंड कर दी गई हूं।'

मैं बिल्कुल स्थिर, अविचलित बैठी रही-बिना किसी मनोभाव के। मुझे अपने संयम पर गर्व हुआ।

मैं अपने को तैयार कर रही थी कि मैं इसे तोलूंगी नहीं। मेरे मूल्य सिर्फ़ मेरे लिए हैं किसी और को उनसे नहीं आंकूंगी।

'आप पूछेंगी भी नही कि क्यूं?' लगा वह रो देगी।

'क्यों?' मैंने उसकी बात उसी को पकड़ा दी।

'क्योंकि मैं एक ऑन-लाइन कोर्स पढ़ा रही थी। बीस दिसम्बर तक उसके अंक रजिस्ट्रार के दफ़्तर तक भेजने थे। मैं भूल गई। उससे काफ़ी हंगामा मचा।'

'बात तो गम्भीर है। छात्रों के भविष्य का सवाल है। उन्हें नए सत्र में दाखिला नहीं मिल सकता।'

'पर मुझे किसी ने याद भी तो नहीं दिलवाया। यूं बात-बात पर रिमाइन्डर भेजते रहते हैं।' वह दफ़्तर वालों की ग़लती बता रही थी।

'कितनी देर की?'

'असल में मैं यहां थी ही नहीं। दिसम्बर की छुट्टियों में भारत चली गई थी। मेरे पापा बीमार थे।'

'इतनी सी बात पर तो सस्पेंड नहीं किया जा सकता।' मैं उसकी तरफ़ थी।

'नहीं, केस तो कुछ और ही है।' कह कर वह अपने हाथों की ओर देखने लगी।

आज मेरी भी परीक्षा थी कि मैं दूसरों के जीवन–मूल्यों के प्रति कितनी तटस्थ रह पाती हूं।

मैं उसकी ओर देखती रही और वह मेरे चेहर से ज़रा दांये या बांये देख कर बात करती रही, आंख बचाती हुई।

'बताने पर पता नहीं आप मेरे बारे में क्या सोचेंगी?'

'कुछ भी नहीं।' मैंने सच कहा।

'मैं असल में कॉलेज बन्द होने से पहले ही निकल गई थी।'

मेरे माथे पर शायद कोई सलवट प्रश्न–चिह्न की तरह उभरी होगी।

'मेरा मतलब, मैंने कॉलेज वालों से कहा कि मुझे एक वार्त्ता में भाग लेने के लिए लंदन की अकादमी ने आमंत्रित किया है तो मुझे जल्दी जाने की इजाज़त मिल गई। आधे रास्ते तक तो गई ही थी, फिर उसके बाद मैं भारत चली गई।'

'मैं समझी नहीं, तो इसमें ग़लत क्या बात हुई?'

'असल में पापा बहुत बीमार थे। मुझे सत्र के बीच में छुट्टी मिल नहीं सकती थी। यही एक तरीक़ा था यहां से निकलने का।'

'क़ानूनी तौर से तो कुछ ग़लत नहीं किया?' मुझे घबराहट सी होने लगी।

'ग़लत तो बहुत कुछ हो गया। मैं कॉन्फ़्रेन्स में अर्जुन के साथ पहुंची थी, पर अन्दर नहीं गई। वहां एक मेरे सीनियर कलीग भी थे जिन्होंने मुझे देख लिया। उन्हीं ने यहां आकर, मेरे वहां बुलाए जाने की प्रामाणिकता पर प्रश्न उठा दिया। छात्रों के अंक न जमा किए जाने की वजह से बात बहुत बिगड़ गई है।'

> शादी के तीन साल बाद एक छोटी सी बच्ची को लेकर वे दोनों एक स्वर्ग की तलाश में अमरीका आए थे। इंजीनियर पति को शुरू के संघर्ष के दिनों में रात की शिफ़्ट में नौकरी मिली। देर गए रात को लौटते हुए, किसी ने नशे की ज़रूरत को पूरा करने के लिए पिस्तौल तान कर जेबें ख़ाली करवा लीं। फिर जाते वक्त पीछे से गोली भी दाग़ दी। गोली रीढ़ की हड्डी में अटक गई। अपाहिज हो गए वह।

'अब?'

'मैं वहां अपना पेपर पढ़ने के लिए आमंत्रित ही नहीं थी। बल्कि मैंने ही लन्दन वालों को लिखा था कि क्या मैं भी वहां उपस्थित हो सकती हूं? उन्होंने स्वीकृति दे दी।'

असल में मैं ख़ुद सोच रही थी कि दीपा इतनी प्रतिष्ठित कब से हो गई कि इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आमंत्रित किया गया होगा। पर सिर्फ़ इतना ही पूछा –

'तो यह सब सच नहीं था?'

'नहीं।' वह होंठ दबाए छत की ओर देखने लगी।

बहुत से विचार एक–दूसरे को ठेलते मेरे मन में आए पर मैंने अपने से वादा किया था कि मैं उसे तोलूंगी नहीं।

रमा बहन का चेहरा फिर आंखों के सामने तिर आया। ज़िन्दगी में बहुत सी बातें न चाहते होते हुए भी तो हो जाती हैं। ज़िन्दगी खींचने के लिए उन्हें लांघना तो होता ही है।

हम दोनों के बीच थी बात की ख़ामोशी। विचारों का तूफ़ान शायद हमें अपने–अपने दायरे में घसीट कर पस्त कर रहा था। समझ नहीं पा रही थी कि मुझे इस वक्त क्या कहना चाहिए?

'मैं इस वक्त आपसे एक मदद मांगने आई हूं। आप चाहें तो न भी कर सकती हैं। आख़िर आप मुझे जानती ही कितना हैं?'

अब तक मैंने थोड़ी सी दुनियादारी सीख ली है। इसलिए सोच कर कहा– 'तुम कहो। अगर कर सकी तो ज़रूर कर दूंगी।'

'मैं आपके यहां दो–चार दिन रुक सकती हूं? मैंने अगर कल कमरा ख़ाली नहीं किया तो मुझे पूरे महीने का किराया देना पड़ेगा। मुझे अभी कुछ काम समेटने के लिए वक्त चाहिए।' उसने मुझे कातरता से देखा।

'अर्जुन को सब बताया?'

'हां, वह मेरे साथ है। जो भी होगा हम इकट्ठे ही झेलेंगे।'

अगले दिन सुबह दीपा का फ़ोन आया कि उसने किराए का कमरा ख़ाली कर दिया है। बैंक का अभी कुछ काम बाक़ी है। अगर मुझे कुछ हिचक हो तो वह होटल में भी रह सकती है।

'नहीं–नहीं चली आओ।' मॉर्च में एक हफ़्ते की छुट्टी होती है। मैं घर पर ही थी, अकेली। सोचा, साथ हो जाएगा।

शाम को वह आई, खुले बाल और धूप का चश्मा लगाए हुए। आज वह ज़रा सा मुस्कुरायी।

'अर्जुन कहता है कि जो हुआ, अच्छा हुआ। अब हम लोग ज़्यादा वक्त साथ बिता पाएंगे।'

'कब से जानती हो उसे?' मैंने पूछ ही लिया।

'बहुत सालों से, मेरे भाई का दोस्त था।' वह अनमनी सी हो गई।

'एक बात पूछूं? अगर तुम्हें मेरा यह प्रश्न ज़्यादा व्यक्तिगत ही न लगे। तुम अर्जुन से विवाह क्यों नहीं कर लेतीं? बाक़ी सब कुछ तो वैसा ही है।'

'विवाह करने से प्रेम के सारे आयाम बदल जाते हैं।' उसने इस तरह से कहा जैसे उसे पक्का मालूम हो।

'अगर प्यार करने वाला साथी हो तो ज़िन्दगी और भी ख़ूबसूरत हो सकती है।' मैंने उसे सकारात्मक दिशा दिखाने की क़ोशिश की।

'तब भी नहीं होती।' उसने दृढ़ता के साथ कहा।

कहीं कुछ फांस सी चुभी। मेरी सोच के पर्दे के पीछे रमा बहन झिलमिला गईं। विवाह के बाद उनके क्या आयाम बदले होंगे? मेरी सहेलियां अक्सर उनके बारे में बातें करती थीं। शादी के तीन साल बाद एक छोटी सी बच्ची को लेकर वे दोनों एक स्वर्ग की तलाश में अमरीका आए थे। इंजीनियर पति को शुरू के संघर्ष के दिनों में रात की शिफ़्ट में नौकरी मिली। देर गए रात को लौटते हुए, किसी ने नशे की ज़रूरत को पूरा करने के लिए पिस्तौल तान कर जेबें ख़ाली करवा लीं। फिर जाते वक्त पीछे से गोली भी दाग़ दी। गोली रीढ़ की हड्डी में अटक गई। अपाहिज हो गए वह।

रमा बहन ने लोगों के लिए रोटियां बेलनी शुरू कर दीं। बच्चों की बेबी–सिटिंग, कपड़े सिलने, जो–जो वह कर सकती थीं। पति को कभी रैस्पीरेटर लगता, कभी हट जाता– वह सेवारत थीं। अचेत पड़े पति को देखती तो बस देखती रह जातीं।

'यह, यह ज़िन्दा रहें, सुहाग है मेरा।' वह अक़्सर यही कहतीं।

जो भी सुनता, उनके प्रति एक करुणा मिली श्रद्धा से भर जाता।

'आजकल के ज़माने में ऐसी औरत? कौन मानेगा कि अब भी सीता और सावित्री जैसी औरतें हो सकती हैं?'

मुझे खोया हुआ देख, दीपा अपना बैग और सूटकेस उठाकर ले आई।

'वैसे मेरे लिए तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं। मैं नीचे सोफ़े पर भी सो सकती हूं।'

'नहीं–नहीं, ऊपर का कमरा ख़ाली है, तुम वहीं आराम से रहो।'

मैं कमरा दिखाने के लिए धीरे से उठी। वह फ़ुर्ती से एक बारगी में ही सब कुछ उठा कर सीढ़ियां चढ़ गई। सामान रख कर खिड़की के बाहर झांका। चुपचाप देखती रही।

'मेरे पास भी ऐसा ही घर था।' उसने जैसे अपने आप से कहा।

'भारत में?'

'नहीं, यहीं टैक्सास में।'

मुझे कुछ समझ नहीं आया। यह तो कह रही थी कि कैनेडा में रहती है। मां–बाप भारत में है। अभी–अभी नौकरी लगी थी फिर यह घर कहां से आ गया?

कुछ पूछना अधिकार की सीमा लांघने जैसा लगा।

'चलो थोड़ा आराम कर लो। मेरी छुट्टियां हैं, रात को कुछ हल्का सा बना दूंगी।'

मैं नीचे आ गई। आवाज़ों से ज़ाहिर था कि वह लम्बे फ़ोन वार्त्तालापों में व्यस्त थी।

काफ़ी वक्त के बाद वह नीचे उतरी तो मैंने मेज़ पर खाना लगा दिया।

परांठे का कौर तोड़ते ही बोली– 'आपने बनाए हैं?'

'नहीं, रमा बहन ने।' मैंने सफ़ाई दी।

'एक है औरत जो पिछले सत्ताईस सालों से बीमार पति की सेवा–शुश्रुषा कर रही है। बेटी पढ़ा कर ब्याह दी। कुछ लोग उसकी मदद भी कर देते हैं। हैरानगी की बात यह है कि कभी उसके चेहरे पर शिकन पड़ते नहीं देखी। मैंने रमा बहन की सारी कहानी उसे सुना दी।

दीपा अजीब–सी निगाहों से मुझे देख रही थी। वह चुपचाप कौर तोड़ती, सब्ज़ी लपेटती फिर जैसे मुंह में डालना भूल जाती। मैं उसके चेहरे पर आ–जा रहे भावों की लिपि पढ़ने की कोशिश कर रही थी। उसने मुझे अपनी ओर देखते देख लिया। जल्दी–जल्दी निवाले निगलने लगी।

कोई सुर बेसुरा हो रहा था। मैं पानी रखना भूल गई थी। लेने के लिए उठी तो उसने अचानक खाते–खाते हाथ रोककर कहा – 'मैने उस दिन अपनी उमर ग़लत बताई थी। मैं उससे पांच साल बड़ी हूं।'

मैं हंस दी। सोचा, मुझे क्या फ़र्क पड़ता है। फिर भी कहा– 'पर झूठ क्यों बोलना?'

'पता नहीं, बोलने के बाद ही पता चलता है।' फिर अपने आप ही बुदबुदाती सी बोली– 'असल में बचपन से ही झूठ बोलने की आदत सी पड़ गई है। पापा बहुत सख़्त और भयंकर गुस्से वाले थे। जान बचाने का एक ही हथियार था कि साफ़ झूठ बोल जाओ। अब तो पता ही नहीं लगता कि झूठ बोल गई हूं। पर बाद में अपने ऊपर बहुत शर्म आती है। आपसे मैं झूठ बोल नहीं सकती।'

'क्यों?' प्रश्न मेरे अन्दर ही अटका रह गया।

वह यहीं लौट आई। सहज होकर फिर से खाना खाने लगी।

'आपके हाथ का खाना मुझे अपनी मां की याद दिला गया।'

मैं नरम पड़ गई। शायद इसीलिए सच बोलने की क़ोशिश कर रही है।

'तुम्हारी मां को क्या तुम्हारे और अर्जुन के साथ रहने के बारे में पता है?'

'बिना शादी के', शब्द मैंने सेंसर कर दिये। सभ्यता के नियम के अनुसार इस तरह की बातें पूछना किसी के निजी जीवन की बातों में दख़ल देना माना जाता है। पर मेरे हिसाब से इसे अपनापन कहते हैं।

'हां, मेरे घर में सबको मालूम है और वह इसका बुरा भी नहीं मानते।'

अब चौंकने की बारी मेरी थी।

'अब क्या बुरा मानना?' उसने कहीं दूर देखते हुए कहा।

मुझे लगा कि दीपा के जीवन के बारे में कुछ है जो इसे कभी मुस्कुराने नहीं देता। उत्सुकता तो थी मुझे पर मैं दबा गई।

मुझे यूं भी देर रात गए तक नींद नहीं आती। अब पति घर पर नहीं थे तो वैसे भी सब उखड़ा-उखड़ा सा लग रहा था। रात को सोने की तैयारी करने के बाद फिर से फ़ैमिली-रूम में कोई पुरानी रोमानी पिक्चर लगा कर बैठ गई। कमरे में रोशनी तो धीमी थी ही आवाज़ भी धीमी कर दी ताकि दीपा को कोई परेशानी न हो।

सीढ़ियों से उतरते गाउन की झलक मुझे दिखी। नींद शायद उसे भी नहीं आ रही थी।

'मैं भी आपके पास आकर बैठ जाऊं?' उसने बच्चों जैसी मासूमियत के साथ पूछा।

'आओ।' मैंने रिमोट से 'म्यूट' का बटन दबाकर फ़िल्म को गूंगा कर दिया।

वह पास आकर खड़ी हो गई। फिर चहक कर पूछा, 'आप चाय पियेंगी?'

'ज़रूर', मैंने उसी लहज़े में जवाब दिया।

वह लपक कर किचन में चली गई। थोड़ी देर में चाय के दो बड़े-बड़े मग भर कर ले आई। अगर हम मर्द होतीं तो शायद हमारे हाथ में मय के गिलास होते। हमने कुछ उसी अन्दाज़ से चाय के प्याले टकराए - 'चीअर्स'।

'नींद नहीं आई?' मैंने बड़ी कोमलता से पूछा।

'नहीं। मन में पता नहीं क्या-क्या घुमड़ता रहता है?'

'शादी कर लो। घर-गृहस्थी में व्यस्त हो जाओगी तो सब घुमड़ना बन्द हो जाएगा।' आख़िर मेरी जुबान धोखा दे ही गई।

'वह भी कर के देख लिया।' लगा जैसे वह कुछ कहना चाहती है। टेलीविज़न की तस्वीरों की परछाईं उसके चेहरे पर कई रंग फेंक रही थी। मैं चुप हो गई।

रात के अन्धेरे में एक अजीब-सी ख़ामोशी होती है। जिसमें इन्सान के अन्दर का शोर अपने-आप अन्दरूनी परतें खोलता जाता है। दो इन्सान जब गई रात को आमने-सामने बैठ कर बातें करते हैं तो औपचारिकता का भेष बदल जाता है। वह आत्मीयता बन कर, हाथ पकड़ सब कुछ सुनती-समझती है।

'पता नहीं क्यूं लगता है कि मुझे आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहिए।'

'मैं सुन रही हूं।'

उसकी आवाज़ जैसे किसी गहरे कुंए से निकल रही थी।

'मेरी शादी हुई थी। वह मुझसे बहुत प्रेम करता था - नाम नहीं बताऊंगी। मेरी हर ज़रूरत का ख़्याल रखता था। तब मैं यहां अकेली पढ़ रही थी। मेरे घर वालों ने ही उसे मेरा पता दिया।'

वह चुप कर गई। चाय का घूंट भरती और मग को आंखों के आगे यूं कर लेती कि मैं उसका चेहरा न देख पाऊं। जैसे अपने-आप से ही लुका-छुपी खेल रही हो। मुझे लगा वह अपने आप से ही बातें कर रही है।

'मेरा मन तो अर्जुन के बारे में ही सोचा करता था। उसकी और मेरी कहानी अधूरी ही रह गई। मेरा मन उसका आखिरी सिरा ढूंढने के लिए सर पटका करता। अर्जुन ने भारत में रहते हुए कभी न बताया न जताया ही कि उसके मन में मेरे लिए क्या भाव हैं।

मैंने उसे बताया भी कि मैं स्कॉलरशिप पर अमरीका पढ़ने जा रही हूं। तब भी उसने न रोका न ही कुछ कहा। हम लोग अलग-अलग दिशाओं में मुड़ गए। उसने तो मेरा जाना चुपचाप स्वीकार कर लिया, पर मैं छटपटाती रही। मुझे इस भावना की पूर्णता चाहिए थी। इस अधूरी कहानी को संजोये मैं ज़िन्दगी में लड़खड़ा रही थी।

तभी यह नया आदमी मेरी ज़िन्दगी में आया। ऐसे में जब कोई हर समय आपकी हर ज़रूरत, हर इच्छा को सर्वोपरि रखे तो प्यार का भ्रम होना स्वाभाविक था। मुझे भी लगा कि यही मेरा सम्बल है। यह मुझे संभाल लेगा। मैंने उससे विवाह कर लिया।

हम लोगों ने एक घर ख़रीदा, संवारा। पर मुझे हमेशा लगता कि मैं ख़ुश नहीं। तभी अर्जुन भी नौकरी के सिलसिले में लन्दन आ गया। जब पहली बार उसका फ़ोन आया तो मैं पुराने दर्द से बिलबिला गई। उसके फ़ोन ज़्यादा आने लगे। मेरे पति को सब मालूम था। धीरे-धीरे उन्होंने अपने अधिकार का उपयोग करना शुरू कर दिया।

'अर्जुन से दोस्ती का कोई मतलब नहीं, फ़ोन बन्द।'

मैं बाहर जाकर चोरी-चोरी फ़ोन करती। झूठ बोलती। घर में रोज़ झगड़े होने लगे। मुझे नियन्त्रण खलता उसे मेरी आज़ादी।'

वह चुप कर गई। मेरे चेहरे को देखा। उसे लगा होगा कि मैं सुन तो रही हूं पर उसके साथ-साथ नहीं चल रही। मेरे दिमाग़ में रमा बहन बैठी मुस्कुरा रही थीं।

'मैंने इस शादी को बचाने की क़ोशिश तो की। हम लोग मैरिज-कौंसलर के पास भी गए।'

'फिर?' मैं उत्सुक थी।

'उसने कहा...', वह रुकी। शब्दों को टटोलने लगी। उसका चेहरा उम्र की कितनी सीढ़ियां चढ़ गया।

'उसने कहा था कि मैं अपने पति से प्यार नहीं करती और मुझे अलग हो जाना चाहिए।' एक झटके से उसने कह दिया जो कहना था।

अब वह चुप थी पर मैं पूरी तरह सजग हो

हम लोगों ने एक घर ख़रीदा, संवारा। पर मुझे हमेशा लगता कि मैं ख़ुश नहीं। तभी अर्जुन भी नौकरी के सिलसिले में लन्दन आ गया। जब पहली बार उसका फ़ोन आया तो मैं पुराने दर्द से बिलबिला गई। उसके फ़ोन ज़्यादा आने लगे। मेरे पति को सब मालूम था। धीरे-धीरे उन्होंने अपने अधिकार का उपयोग करना शुरू कर दिया।

गई।

'इसमें तुम्हारे पति का क्या दोष? वह तो तुम्हें प्यार करता था।'

'हां, मैंने उसकी ज़िन्दगी भी तबाह कर दी।'

हल्के अन्धेरे में दीपा की आंखें झिलमिलायीं। आंसू पूरी तरह से गालों पर बह रहे थे जिन्हें पोंछने की उसने क़ोशिश भी नहीं की।

मैं अपने मूल्यों और मान्यताओं की गुंजलक में जकड़ी पड़ी थी। सांत्वना के लिए शब्द ही नहीं सूझे। मुझे लग रहा था जैसे मेरे अन्दर कोई विरोधी पार्टी की रैली हो रही है। कई बौने, मूल्यों के झंडे उठ-उठा कर विरोधी नारे लग रहे हैं। नारों का शोर तो है पर साफ़ कुछ भी नहीं। चुप्पी का कोलाहल।

थोड़ी देर बाद उसने ही तोड़ी यह चुप्पी।

'पर मैंने भी तो इस तलाक़ के समझौते पर सभी अधिकार छोड़ दिए। पैसा, मक़ान में हिस्सा कुछ नहीं लिया। सभी कुछ तो मैंने उसका ले लिया था, अब और बचा ही क्या था लेने को।'

वह फिर से रो पड़ी। चुपचाप रोती रही। मैं भी चुपचाप बैठी रही।

फिर वह धीरे से उठी। 'सॉरी' कहकर अपने कमरे की ओर मुड़ गई।

'गुडाइट' मैंने धीरे से कहा। जानती थी कि अभी न वह सो पाएगी और न ही मुझे नींद आएगी। रमा बहन की कामनाओं का ध्यान आता रहेगा जो रैस्पीरेटर के बिना दम तोड़ती होंगी।

अभी मैं मशीनी तरीक़े से नाश्ते का इंतज़ाम कर ही रही थी कि दीपा पूरी तरह तैयार होकर सामने आ गई – जैसे कहीं बाहर जाने वाली हो। बिल्कुल तरोताज़ा, खिली हुई।

मैं उसे देखती रह गई। मेरे दिलो-दिमाग में अभी भी रात की बातें हावी थीं और वह जैसे पुरानी कुंचलक उतार कर कोई नई ही दीपा सामने खड़ी हो गई।

'सुबह अर्जुन का फ़ोन आया था। वह आज दोपहर की फ़्लाइट से न्यूयॉर्क पहुंच रहा है। उसकी तीन दिन की कोई मीटिंग है। मैं भी यह तीन दिन उसके साथ ही रह लूंगी। फिर वहीं से हम लोग इकट्ठे कैनेडा लौट जाएंगे।

मैं कुछ उलझी-सी थी। उसने तो अभी मेरे यहाँ दो-तीन दिन और रहना था।

''आप प्लीज़ मुझे बस-स्टॉप तक छोड़ दीजिए। मैं वहीं से मैनहट्टन चली जाऊँगी। जब तक मैं होटल पहुँचूगी, तब तक अर्जुन भी आ जाएगा।''

नाश्ता करने के बाद उसने अपना सामान कार के ट्रंक में रख दिया।

वह मेरे साथ कार में धूप का चश्मा लगाए बैठी थी। बाल उसने खोल कर छितरा लिए।

मैं रात और इस वक्त वाली दीपा में तालमेल बिठाने की क़ोशिश करने लगी।

बस आने में देर थी। खिड़कियों के शीशे नीचे कर के हम दोनों ख़ामोश बैठे रहे।

जानती थी कि मैं उससे फिर कभी नहीं मिलूंगी। इस शहर ने उसे जो कड़ुवाहट दी थी, वह फिर कभी लौट कर उसे याद नहीं करना चाहेगी। फिर भी कह दिया – ''कभी आना। घर पहुँच कर फ़ोन कर देना।''

लगा, जैसे उसने सुना नहीं। स्टैंड पर आती हुई बस को देखती रही। उसका चेहरा तना हुआ था। मैंने ट्रंक का दरवाज़ा खोलकर उसका सामान निकाला। वह बैठी रही। बस आकर लग गई। अभी लम्बी लाईन थी। वह कार से निकली। बैग कंधे पर डाला, सूटकेस हाथ में उठाया। पहली बार उसने मुझे भरपूर नज़रों से देखा।

''मैं आपको एक और बात बता देना चाहती हूँ...'' उसने होठों को भींचा, ''... कि मैं रमा नहीं हूँ।'' कह कर वह पलटी और लाईन में लग गई।

मैं फिर से कार में बैठ कर बस की सरकती लाईन को देखती रही। वह धीरे से बस की सीढ़ियां चढ़ी और बांये घूमी। मैंने हाथ हिलाया। उसने कोई जवाब नहीं दिया और आगे बढ़ गई।

◆◆◆

Anil Bhasin
अनिल भसीन

१९९० से आपकी सेवा में

घर होता है जीवन का आधार।
घर वोह है, जहाँ मिले सुख – शान्ति और प्यार॥
जो भी "अनिल" के पास आया
उसने अपने सपनों का घर पाया॥

Anil Bhasin

Sales Representative
Remax Realtron Realty Brokerage Inc.
183 Willowdale Avenue,
Toronto, M2N 4Y9
Cell: 416-410-GHAR(4427)
fax: 416-981-3400
anil@ghar.ca
www.ghar.ca

RE/MAX

ANIL BHASIN'S GHAR.CA
GHAR MEANS HOME

RE/MAX® Remax Realtron Realty Brokerage Inc

Tel: 416-222-8600 Fax: 416-221-0199
183 Willowdale Avenue, Toronto, M2N 4Y9
Independently owned

चुड़ैल

बलराम अग्रवाल

पार्क में घूमने आने वालों की संख्या बहुत ज़्यादा न सही, कुछ कम भी नहीं थी। उन्हीं के बीच रास्ता बनाते खन्ना जी जॉगिंग करते और जान-पहचान के लोगों से हाय-हलो करते विस्तृत पार्क के एक हिस्से में बने गोलाकार पक्के फुटपाथ पर दौड़ते रहे। मिसेज खन्ना पेड़ों की ओट में छिटपुट आसन करती-सी एक जगह पर टिक गई और नजर ज़माए उन्हें देखती रहीं।

ज़रूर कुछ गड़बड़ है। मिसेज़ खन्ना कई दिनों से वॉच कर रही थीं नौकरी करते हुए ये कभी भी आठ बजे से पहले बिस्तर से नहीं उठे। अब, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के अगले ही दिन से यह हाल है कि सुबह पाँच बजे उठ जाते है! शौच आदि से निबटकर सही छः बजे घर से निकल जाते हैं। मॉर्निंग-वॉक तो जैसे इनकी कुंडली में ही नहीं लिखा था, लेकिन अब ये पार्क में जाने लगे हैं! हाफ-पैंट को 'आरएसएस का सुथन्ना' कहकर छूते तक नहीं थे। पिछले हफ्ते एक जोड़ी कैपरीज़ और एक जोड़ी स्पोर्टस-शू ले आए खरीदकर; बोले इनमें ईज़ी रहता है। घर के दरवाज़े से निकलते ही जॉगिंग शुरू कर देते हैं! और ग़ज़ब की बात यह कि लौटकर आते हैं नौ-सवा नौ बजे। गरज यह कि सुबह के तीन घंटे पार्क की भेंट चढ़ाने लगे हैं। समझ में नहीं आता कि पार्क में ये करने क्या जाते हैं? घूमने जाते हैं या। बस। या...के बाद वाला विचार बेहद पीड़ादायक था।

वह विचार मन में आते ही मिसेज़ खन्ना सिर से पाँव तक जैसे हिल-सी गईं। उस चुड़ैल की वजह से ही तो नहीं ले बैठे हैं वॉलंट्री रिटायरमेंट! वह मन ही मन सोचने लगी – हे भगवान्, बुढ़ापे में जग-हँसाई ना करा बैठें ये। देखना पड़ेगा।

अगली सुबह। अलार्म बंद करने के बाद बिस्तर से उठकर जैसे ही खन्ना जी फ्रेश होने के लिए टॉयलेट में घुसे, मिसेज़ खन्ना ने भी बिस्तर छोड़ दिया। वे सड़ाक से दूसरे टॉयलेट में घुस गईं। फिर, जैसे-जैसे खन्ना जी तैयार हुए, वैसे-वैसे वह भी तैयार होती गईं। लेकिन बचते-बचाते कुछ इस तरह कि खन्ना जी को कुछ भी असामान्य न लगे।

घर से खन्ना जी के निकलने के दो-तीन मिनट पीछे ही वह भी निकल लीं। हालाँकि पूरी तरह पीछा नहीं कर सकीं उनका, क्योंकि खन्ना जी ने तो रोज़ाना की तरह दरवाज़े से निकलते ही जॉगिंग शुरू कर दी थी। फिर भी, उन पर नज़र रखने जितनी दूरी बनाए रखने में वह कामयाब रहीं।

खन्ना जी पार्क में घुसे, उनके पीछे-पीछे पाँच मिनट बाद ही वह भी। खन्ना जी जॉगिंग करते आगे बढ़ गए। पेड़ों की ओट में अपने-आप को छिपाती वह भी आगे बढ़ती रहीं, कुछ इस तरह कि पति पर नज़र भी रख सकें और किसी को सन्देह भी न हो।

पार्क में घूमने आने वालों की संख्या बहुत ज्यादा न सही, कुछ कम भी नहीं थी। उन्हीं के बीच रास्ता बनाते खन्ना जी जॉगिंग करते और जान-पहचान के लोगों से हाय-हलो करते विस्तृत पार्क के एक हिस्से में बने गोलाकार पक्के फुटपाथ पर दौड़ते रहे। मिसेज़ खन्ना पेड़ों की ओट में छिटपुट आसन करती-सी एक जगह पर टिक गईं और नज़र जमाए उन्हें देखती रहीं।

गोलाकार फुटपाथ पर जॉगिंग के बाद वे पार्क के दूसरे सिरे पर मखमली लॉन को घेरती फूलों की क्यारियों के निकट जा बैठे। वहाँ तक नज़र को दौड़ाए रखने में मिसेज़ खन्ना को असुविधा-सी होने लगी। पहले वाली जगह से उठकर वह कुछ-और आगे वाले, निगाह रखने में कुछ-और सुविधाजनक पेड़ों के पीछे आ गईं।

कुछेक आसनों का अभ्यास करने के बाद मिस्टर खन्ना प्राणायाम करने लगे हैं। उन्होंने देखा।

भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम सब कर लो दूर बैठी वह मन ही मन सोचती रहीं उसके आने तक तो ये सब नाटक तुम करोगे ही। देर से आती होगी न चुड़ैल। आने दो, आज ही पत्ता साफ न कर दिया उसका तो मेरा नाम भी कनिका खन्ना नहीं। यह सोचते हुए वह कुछ अटकीं। फिर उन्होंने मन ही मन तय किया कि मिस्टर खन्ना ने अगर तिलभर भी उसका पक्ष लिया तो आज से वह सिर्फ कनिका रह जाएँगी, खन्ना उपनाम हटा देंगी हमेशा के लिए। तभी, उन्होंने देखा कि प्राणायाम के बाद खन्ना जी क्यारियों में फूलों की छोटी-पौध के बीच उग आई घास को उखाड़ने में जुट गए हैं। घूमने आने वाले अन्य लोग उन्हें देखते और आगे बढ़ जाते। छिः-छिः मिसेज़ खन्ना को उनकी इस हरकत पर घृणा-सी हो आयी ये अब माली का काम करने बैठ गए! माना कि इन्हें बहुत शौक है फूलों और पौधों का। माना कि घर में एक गमला तक रखने की जगह कभी नहीं रही और इनकी यह इच्छा हमेशा मन की मन में ही दबी रही। लेकिन इसका यह तो मतलब नहीं कि यहाँ, पार्क में आकर।

करीब आधे घंटे तक खन्ना जी घास उखाड़ने के इस काम में लगे रहे। उखड़ी घास को एक ओर फेंक आने के बाद वे फूलों पर मँडराती तितलियों के पीछे बच्चों की तरह दूसरी-तीसरी-चौथी क्यारी तक दौड़ने लगे। बैठी हुई तितली के परों तक झुककर वे उसके रंगों को निरखते-परखते और उसके बैठे रहने तक बुत बने खड़े रहते; बिल्कुल ऐसे, जैसे इतने निकट से तितली कभी देखी ही न हो।

भाग लो... तितलियों के पीछे भाग लो इस उम्र में जितना जी चाहे बैठी-बैठी मिसेज़ खन्ना उन पर कुढ़ती रही मज़ा तो तब आएगा बच्चू, जब वह गंदी-मक्खी पार्क में आएगी और मैं तुम्हारे सामने अपनी इस चुटकी से उसे मसल डालूँगी।

उधर, वे बुत बने खड़े थे कि रबर की एक गेंद उनके पाँव पर आकर लगी। उनका ध्यान भंग हो गया। वे धीरे-से दायीं ओर झुके और गेंद को उठा लिया।

अंकल...इधर...जल्दी...जल्दी! क्यारियों से दूर, पार्क के नज़दीक वाले एक

कोने में क्रिकेट खेल रहे कुछ बच्चों में से फील्डिंग कर रहे बच्चे चिल्लाए।

उन्होंने चिल्ला रहे बच्चों की ओर गेंद को न उछालकर उसे जहाँ–का–तहाँ डाल दिया और जोर–से चिल्लाए, सुनो, मैं अंपायरिंग करूँगा, फील्डिंग नहीं। यह कहने के साथ ही फूलों और तितलियों का साथ छोड़कर वे बच्चों की उन टीमों का अंपायर बनकर विकेट्स के निकट जा खड़े हुए।

अरे, पेड़ की ओट में बैठी मिसेज़ खन्ना उनकी इन अजब–गजब हरकतों को देखती रहीं। उन्हें यकीन था कि मिस्टर खन्ना का जॉगिंग और प्राणायाम करना, क्यारियों में गुड़ाई करना, तितलियों को देखना और अंपायरिंग करना सब टाइम पास का जरिया है। ऐसा करके वे उस चुड़ैल के आने तक का समय किसी न किसी तरह बिता रहे हैं। उसके आ जाने के बाद पार्क के किसी घने झुरमुट में अनिर्वचनीय महा–आनन्ददायक प्रेमालाप होगा, बस। उनके मन रूपी कड़ाह के डाह रूपी खौलते तेल में पति के प्रेमालाप के इन दृश्यों ने एकदम उफान ला दिया। क्रोध से उनका पूरा बदन हिल–सा गया। माथे पर पसीने की बूँदें छलछला आईं। सासें गहरी–गहरी चलने लगीं। पूरी खुली होने के बावजूद भी आँखों से जैसे दिखना बन्द हो गया।

''चलें!'' एकाएक यह शब्द सुनकर उनकी तन्द्रा टूटी। वह बुरी तरह चौंक गईं। खन्ना जी बच्चों के पास से चलकर कब उन तक आ पहुँचे, उन्हें पता ही न चला।

''आसन और प्राणायाम जैसी चीजें भी पति से छिपकर चुपचाप करोगी! भई, यह तो हद हो गई तुम्हारे संकोची स्वभाव की।'' खन्ना जी उनसे कह रहे थे, सुबह को मेरे सोए रहने तक ही यह सब चुपचाप निबटाती रही हो, यह तो मुझे मालूम था। लेकिन, यहाँ पार्क में आकर करने की भी ललक जाग उठेगी, यह मैं नहीं सोच पाया था। वहाँ, बच्चों के साथ खेलते–खेलते वह तो अचानक ही मेरी निगाह तुम पर आ पड़ी। चलो अच्छा रहा, कल से साथ ही निकल आया करेंगे दोनों।''

"नहीं–नहीं", पति की यह बात सुनते ही अपनी जगह से उठती हुई वह तिलमिलाई–सी बोलीं। उन्हें दरअसल, पहले ही दिन अपने देख लिए जाने पर हार्दिक अफसोस हो रहा था।

"जैसी आपकी मर्जी।'' खन्ना जी बोले, ''भई अपना तो एक ही उसूल है जिसमें सब राजी, उसमें रब राजी। पर, इतना मैं जरूर कहूँगा कि अच्छे कामों को करने में आदमी को संकोच नहीं करना चाहिए। कल से...'' फिर कल से! चोरी करते पकड़े गए सफेदपोश की तरह मिसेज़ खन्ना धीमे लेकिन तीखे स्वर में पुनः पति पर गुर्राईं, "घर का काम–काज भी देखना है न! कुदान मारने को रोज़–रोज़ यहाँ चले आना मेरे लिए मुमकिन नहीं। मैं अपने हिसाब से खुद ही करूँगी यह सब...''

दरअसल, चुड़ैल की पकड़ तो तभी सम्भव थी, जब वह खन्ना जी के साथ न आएँ और इस तरह घर से निकलें कि खन्ना जी को उनके द्वारा अपना पीछा करने का आभास तक न हो। इस एहसास से कि खन्ना जी अपने जीवन की दूसरी पारी खेल रहे हैं वह दूर, बहुत दूर थीं।

◆◆◆

DON'T PAY THAT TICKET!

ROSS
LEGAL SERVICES

Al (Doodie) Ross
(416) 877-7382 cell

Former Toronto Police Officer,
28 Years Experience

Arvin Ross
(416) 560-9366 cell

We Can Help with all Legal Matters:

सच्ची सेवा करते हैं । ईश्वर से हम डरते हैं ॥

- Traffic Offences
- Summary Criminal Charges
- Impaired Driving / Over 80
- Accidents
- Commissioner for Taking Affidavits
- Criminal Pardon and / or a United States Border Waiver

95%
Success Rate!

16 FIELDWOOD DR.
TORONTO ONTARIO, M1V 3G4
OFFICE: (416) 412-0306
FAX: (416) 412-2113

Licensed by the Law Society of Upper Canada

Ross@RossParalegal.com www.RossParalegal.com

ROSS LEGAL SERVICES

RAI GRANT INSURANCE BROKERS

Business • Life • Auto • Home

ENOCH A. BEMPONG, BA (Econ)

Account Exexutive

140 Renfrew Drive, Suite 230, Markham, ON L3R 6B3

Tel: 905-475-5800 Ext. 283 • 1-800-561-6195 Ext. 283

Fax: 905-475-0447 • ebempong@raigrantinsurance.com

Cell: 905-995-3230 • www.raigrantinsurance.com

तोते उड़ रहे हैं, ऊंट विचर रहे हैं, आप कहां हैं

✍ अविनाश वाचस्पति

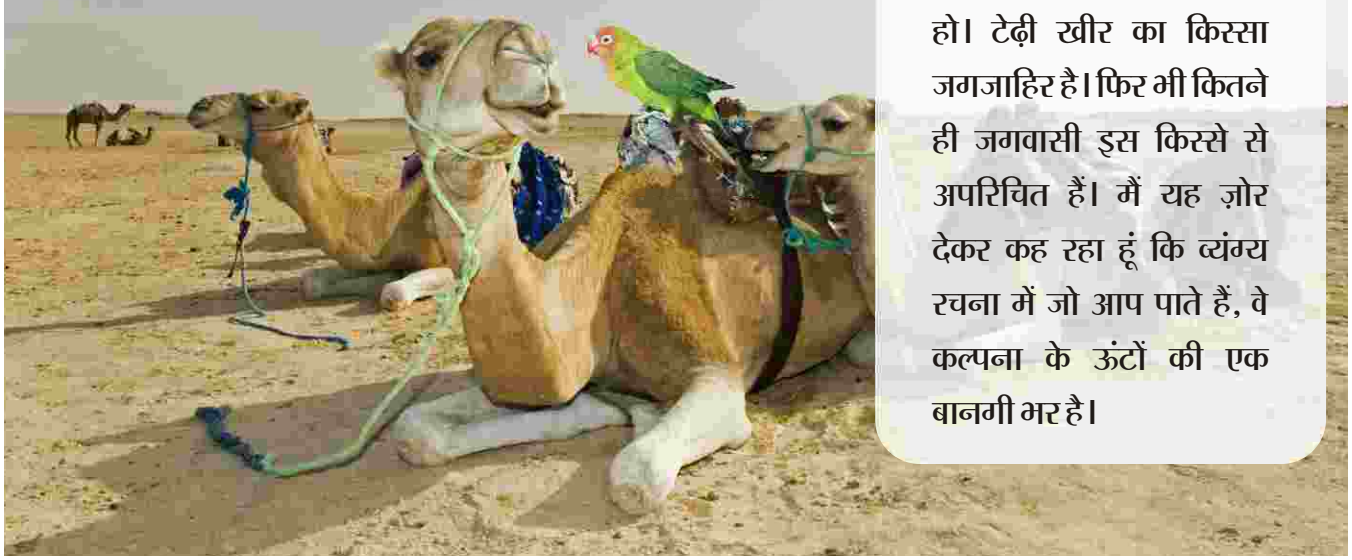

कल्पना के ऊंटों का ज़माना आ गया है और इन ऊंटों ने खीर को सीधा कर दिया है, खीर जो एक अंधे ने टेढ़ी कर दी थी, वो तो सीधी है परंतु ऊंट टेढ़ा ही रहा है, चाहे वे कल्पना में हो या सच्चाई में हो। टेढ़ी खीर का किस्सा जगजाहिर है। फिर भी कितने ही जगवासी इस किस्से से अपरिचित हैं। मैं यह ज़ोर देकर कह रहा हूं कि व्यंग्य रचना में जो आप पाते हैं, वे कल्पना के ऊंटों की एक बानगी भर है।

आप पाठक हैं, रचनाकार हैं इसलिए यह मानकर चल रहा हूं कि आप कल्पना से मिले हैं और मिलते ही रहते हैं, बिना कल्पना, रचना की कल्पना नहीं की जा सकती है और न रचना पढ़ते हुए, कल्पना से बचा जा सकता है। कल्पना और रचना नहीं की तो कैसे पाठक, लेखक, कलमकार और कल्पनाकार हैं आप। रचना और कल्पना का चोली दामन का साथ है, जैसे लेखक पाठक की चोलियां मिली रहती हैं और ये इन्हें आपस में अदलते-बदलते रहते हैं। इन सबके बीच में तेजी से दौड़ने वाले घोड़ों का ज़माना खूब दौड़ा और अश्वगति से भागगति को हथियाते हुए, कल्पना और रचना पर सवार होकर दौड़लब्धि को प्राप्त हुआ है। अब रचना जगत में यह लग रहा है कि कल्पना के घोड़ों का अब ज़माना बीत चुका है, चल तो कल्पना की कारें भी नहीं रही हैं। तकनीक और विज्ञान के महाविकास के बाद भी कल्पना के हवाई जहाज या अंतरिक्ष यान नहीं और सैटेलाइट भी नहीं दिखाई दिए हैं, जो भी मौजूद हैं वे सब वास्तव में हैं।

कल्पना के ऊंटों का ज़माना आ गया है और इन ऊंटों ने खीर को सीधा कर दिया है, खीर जो एक अंधे ने टेढ़ी कर दी थी, वो तो सीधी है परंतु ऊंट टेढ़ा ही रहा है, चाहे वे कल्पना में हो या सच्चाई में हो। टेढ़ी खीर का किस्सा जगजाहिर है। फिर भी कितने ही जगवासी इस किस्से से अपरिचित हैं। मैं यह ज़ोर देकर कह रहा हूं कि व्यंग्य रचना में जो आप पाते हैं, वे कल्पना के ऊंटों की एक बानगी भर है। वैसे कल्पना को अगर जानवर माना जाए जबकि रचना और कल्पना नाम किसी महिला का बोध कराता है। नाम का ही चमत्कार मानना चाहिए कि इसीलिए ये लुभाती भी हैं और पसंद भी खूब आती हैं। वैसे अब विचार तो यह भी किया जाने लगा है कि सिर्फ घोड़ों को ही दौड़ने का अधिकार क्यों दिया गया है और किसने दिया है नेताओं का

उड़ती तो कल्पना की चिड़ियाएँ भी खूब हैं पर वे पहचान ली जाती हैं। इन चिड़ियों को आप हिंदी ब्लॉग जगत में उड़ते हुए देखते हैं, चिड़ियाओं की इन उड़ानों का आनंद कतिपय ब्लॉगों पर आप नियमित रूप से पायेंगे पर इसके लिए आपको इन ब्लॉगों का नियमित विचरण करना होगा। कितने ही ब्लॉगर इन चिड़ियों को फांस लेते हैं, पकड़ लेते हैं पर वे खुद भी इनसे बच नहीं पाते हैं। आजकल हिन्दी ब्लॉगों पर कल्पना के तोतों का कब्जा जमा हुआ है।

कहना है कि यह अधिकार संसद से तो जारी नहीं किया गया है। इसलिए कल्पना के ऊंटों और अन्य जानवर-जंतुओं के होने की संभावना बलवती होती है। कल्पना के खास यार कौन-कौन हो सकते हैं, वे रंगे हुए हों, सियार हों, अथवा बेरंग हों। कल्पना की यारी-दोस्ती रंग नये खिलाती है पर इस खिलाने से पेट नहीं भरता है। और आपको हैरत होगी कि भरा दिमाग भी इसके सेवन से रीते होने का ही अहसास कराता है।

दोस्ती तो बहुतायत में खाने-पिलाने और खाने-पीने के लिए होती है। विचारों की होती है। विचारों की परिपक्व दोस्ती का जायका स्वादिष्ट होने के साथ पौष्टिक भी होता है। ऐसा विद्वानों ने स्वीकार किया है और इसे अपने अंतर्तम तक महसूस भी किया है। ऐसी दोस्ती विचारों का नया संसार रचाने में सर्वथा समर्थ होती है। अंधियारे में रोशनी की किरण नहीं, लबालब रोशनी का संसार होता है। कल्पना के घोड़े और सच्चाईयों के शेर। सच्चाई अपने वजूद में रहे तो इससे भय की उत्पत्ति भी होती है। जबकि शेर यानी सच्चाई देती है अभय। अभय हो जिसको जाता है वही विजय कहलाता है। उसकी जय-जय। आप सच्चाईयों के जंगल में हैं और सच्चाईयों के जंगल में किसी गुफा में झूठ भी बसता है।

आज जमाने में कल्पना के गधों का वर्चस्व भी हो गया है आप आजमा सकते हैं। पहचानने वाले इन गधों और कल्पना करने वाले अंधों को पहचान भी लेते हैं। जो साधु का वेश धरे धरा पर विद्यमान रहते हैं। जो घोड़ों पर रहते हैं वे कभी आपको धरा पर नज़र नहीं आते हैं। वे सदा आसमान में बल्कि अनंत क्षितिज में मंडराते रहते हैं। वे जिन घोड़ों पर सवार रहते हैं, जिन्हें दौड़ाते-उड़ाते हैं, वे सदा मिलते तो धरती पर ही हैं। बस आपको इन्हें साधना होता है या वे आपको साध लेते हैं। यह साधना-सधाना सदा ऐसा होता है कि सामने वाला खुद को असधा समझने को बाध्य हो जाता है।

उड़ती तो कल्पना की चिड़ियाएँ भी खूब हैं पर वे पहचान ली जाती हैं। इन चिड़ियों को आप हिन्दी ब्लॉग जगत में उड़ते हुए देखते हैं, चिड़ियाओं की इन उड़ानों का आनंद कतिपय ब्लॉगों पर आप नियमित रूप से पायेंगे पर इसके लिए आपको इन ब्लॉगों का नियमित विचरण करना होगा। कितने ही ब्लॉगर इन चिड़ियों को फांस लेते हैं, पकड़ लेते हैं पर वे खुद भी इनसे बच नहीं पाते हैं। आजकल हिन्दी ब्लॉगों पर कल्पना के तोतों का कब्जा जमा हुआ है। वे इन्हें पकड़ते भी नहीं हैं मतलब इन तोतों को जहां से पकड़ा जाता है, ये वहां भी रहते हैं और इनके यहां भी तोतियाते रहते हैं। इस तोतियाने को आप तुतलाना मत समझ लीजिएगा क्योंकि कल्पना के तोतों को पकड़कर अपने ब्लॉग पर कैद करने वाले साइबर कानून के अज्ञान के कारण निर्भय नज़र आते हैं।

इन्हें कंट्रोल की के साथ सी दबाकर अपने यहां ले जाकर वी कर दिया जाता है। जहां पर ऐसा नहीं हो पाता है वहां पर वे विशेषज्ञों की सेवाएं लेते हैं अथवा उनसे ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, निःसंदेह यह विज्ञान तकनीकी ही होता है। इन सभी तोतों का हरा रंग, काली आंखें, वही टेढ़ी नाक, पर इत्यादि एक से होते हैं परंतु तोताचोर इसे भूल जाते हैं, कईयों को तो इसका बोध ही नहीं होता है। कल्पना के तोतों को आप रट्टू समझने की भूल भी कतई मत कीजिएगा कि आपने रट लिया तो वे आपके ही नज़र आयेंगे। गूगल बाबा और अन्य खोज बाबा इन्हें तुरंत पहचान लेते हैं क्योंकि तोता सदा तोता ही रहता है वो न तो इंसान और न जानवर हो सकता और वो कल्पना का घोड़ा तो हो ही नहीं सकता है।

इनमें परकाया विद्या का समावेश अभी तक नहीं हो पाया है। हां, कुछेक व्यंग्यकारों ने अवश्य इस विधा में कलम घुमाई है और उनका कलम घुमाना क्या रंग दिखला रहा है। यह तो उनके पाठक ही बेहतर बतला सकते हैं। अगली बार जब भी आप कल्पना के ऐसे जीवंत तोतों से मिलें तो कल्पना के घोड़ों को भूल जाएं और उनको नए सिरे से, नए रूप-स्वरूप में परिभाषित करें ताकि शेर, गधा, सियार, गीदड़, सांप, तीतर, बटेर, मैना इत्यादि की सच्चाई की पहचान हो जाए।

अब इनकी सच्चाई जानना आपकी नियत पर है तो अगली बार जब भी आप कुछ पढ़ रहे हों तो बल्कि अभी से शुरूआत कर लीजिए और बतलायें कि इस रचना में आपने कल्पना का कौन-सा प्राणी गिरफ्तार किया है, तो मैं इंतज़ार करूं कि आप बतला रहे हैं?

◆◆◆

अबूझमाड़ के अतीत से..

राजीव रंजन प्रसाद, भारत

छत लकड़ी की मज़बूत बीम पर टिका होता है और आम तौर पर खपरेल, घास-फूस या सागवान के पत्तों से ढंका होता है। इसी छत पर घोटुल के सदस्य अपने हथियार, फरसा, टंगिया, हसिया, खंता, कुल्हाड़ी, सब्बल, टोकनी, सूपा, डाली, दोरा, टुकना... और भी चीजें रखते हैं। अर्थात घोटुल पूरी तरह से गाँव की सम्पत्ति होता है - गाँव की परिधि से बाहर बना सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र।

अबूझमाड़ के घने जंगलों के भीतर एक गाँव – मटमंद। दिन भर सन्नाटा इस तरह पसरा पड़ा था जैसे दूर–दूर तक केवल बौराई हवा का ही ठौर हो। अब सूरज की आख़िरी किरणें भी पहाड़ की ओट में जा छुपी थीं। अंधेरा इससे पहले कि अपने आगोश में मटमंद को समेट पाता गाँव के बाहर बने घोटुल में हलचल आरंभ हुई। झोरिया अपने साथियों के साथ आया और ताड़ी के पत्ते की बनी झाड़ू से घोटुल का कोना–कोना बुहार कर चला गया।

मटमंद का यह घोटुल तीन भागों में बंटा हुआ था। पहला आँगन का भाग जिसके बीचों–बीच लकड़ी का खंबा गड़ा हुआ था और समूची जगह नाचने–गाने के लिये खुली हुई।

दूसरा परछी वाला हिस्सा जहाँ इस समय झोरिया अलाव जलाने में व्यस्त था। आम तौर पर यहीं समूहों में बैठ कर प्रेमी युवक–चेलक और युवति प्रेमिकायें– मोटियारियाँ आपस में परिचित होते हैं, किस्से कहानियाँ गढ़ते, कहते और सुनते हैं या सुख–दुख बांटते हैं। यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक चाँद और सात तारे या कि ग्वालझुमका सिर पर नहीं आ जाते। सभा विसर्जित होती है तो कम आयु के चेलिक और मोटियारियाँ अलग–अलग हो कर परछी में ही अथवा बड़े से हॉल नुमा कमरे में जो कि घोटुल का ही तीसरा हिस्सा होता है, वहाँ जा कर सो जाते हैं। ...और फिर यह भी होता है कि एक–दूसरे के हो चुके चेलक और मोटियारियाँ आधी रात के बाद अपनी अपनी गीकी में बँध जाते हैं। यह गीकी वह चटाई होती है जो खजूर या ताडी के पत्ते से गूंथ कर घोटुल की मुटियारी बड़े ही जतन से अपने चेलक के लिये बनाती है। बड़े कमरे के एक हिस्से में केवल वे चेलिक और मोटियारियाँ ही साथ–साथ सोते हैं जिनका प्रेम बंधनों की परिभाषा से आज़ाद हो गया हो। यहाँ उन्हें एक होने की स्वाधीनता है।

'घोटुल की परछी' और कमरों की दीवारें लकड़ी, बाँस के खूँटे और उससे बाड़ी नुमा ढाँचे बना कर फिर उनमें मिट्टी छाप कर बनायी जाती हैं। इस तरह बनी दीवारों को चूने

या छुई मिट्टी से लीप दिया जाता है। छत लकड़ी की मज़बूत बीम पर टिका होता है और आम तौर पर खपरेल, घास-फूस या सागवान के पत्तों से ढंका होता है। इसी छत पर घोटुल के सदस्य अपने हथियार, फरसा, टंगिया, हसिया, खंता, कुल्हाड़ी, सब्बल, टोकनी, सूपा, डाली, दोरा, टुकना... और भी चीजें रखते हैं। अर्थात घोटुल पूरी तरह से गाँव की सम्पत्ति होता है – गाँव की परिधि से बाहर बना सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र।

आज सबसे पहले पेडूराम पहुँचा था। द्वार पर ही वह अगले घोटुल सदस्य की प्रतीक्षा करने लगा; हरगुण्डा के आते ही वह भीतर चला गया। अब द्वार पर हरगुण्डा अगले सदस्य के स्वागत के लिये ठहरा हुआ था। युवक और युवतियों के आने का सिलसिला इसी तरह बढ़ता गया और माहौल में उत्सव घुल गया। माँदर की थाप और सल्फी के दौर के बीच अचानक सामूहिक स्वर गुंजायित हो उठा :

तेर ना नी ओ
तेर ना ना ना ने नांव रे
ती ना ना मु र ना नारे नाना
ना मुर ना ना हो...

सभी का उत्साह तब दुगुना हो गया जब घोटुल के 'सिरदार' के साथ गायता (गाँव का मुखिया), परगना माँझी (पड़ोस के क्षेत्र का मुखिया) और आस पास के गाँव के अनेकों पेड़गा-पेड़गी (दूसरे घोटुल के युवक और युवतियां) भी एक-एक कर सम्मिलित होने लगे। यह विशेष अवसर था। आज एक और अतिथि इस भीड़ में थे – गेंदसिंह। पिछले कई दिनों से अबूझमाड़ में गेंदसिंह एक पहचाना हुआ नाम हो गये थे। एक आदिम से दूसरे आदिम और एक घोटुल से दूसरे घोटुल तक होते हुए उनकी ख्याति बहुत तेज़ी से फैली। गेंदसिंह आकर्षक व्यक्तित्व के अबूझमाड़िया थे और परलकोट के ज़मींदार भी थे।

बस्तर की तेजी से बदलती राजनीति ने यहाँ के आम आदमी को हर ओर से पीसना आरंभ कर दिया था। यह सिलसिला फिर राजा महिपाल देव की मराठा उपेक्षा से ही आरंभ हुआ था। बस्तर शासन द्वारा मराठा शासकों को संधि शर्तों के बाद भी टकोली न अदा करना एक बड़ा कारण था जिसनें बार-बार युद्ध जैसे हालात पैदा किये। साथ ही वर्तमान उड़ीसा से लगे जैपुर राज्य के लिये भी बस्तर की उससे लगी सीमा लूट-खसोट का बेहतरीन जरिया बन गयी थी। इस सब परिस्थितियों से जूझते हुए भी बस्तर का स्वाभिमान जागृत था और न राजा को और न ही प्रजा को किसी तरह की आधीनता स्वीकार्य थी। 1818 ई. तक महिपाल देव बस्तर में किसी तरह अपनी पकड़ बनाये रखने में सफल हुए थे।

इसी वर्ष तब स्थितियों ने बदलना आरंभ किया जब कमज़ोर होते मराठों को अंग्रेज़ों से संधि करनी पड़ी। यह संधि मराठों के अधिकार तो सीमित करती ही थी बस्तर शासक के अधिकार भी सीमित कर दिये गये। राजा अब केवल एक ज़मींदार मात्र रह गया था जबकि राज्य के पीढ़ियों से रहे ज़मींदार अब कोई प्रशासनिक हैसियत नहीं रखते थे। जनता पर नये करों का बोझ लद गया और उसकी वसूली में सख्ती की गयी। इसका कारण मराठा शासन की ताक़त से जनता को वाकिफ कराना ही था। दूसरी ओर अंग्रेज़ों को न तो भारतीयों से मतलब था न ही मराठों से उन्हें तो पूरा भारत वर्ष ही अपना उपनिवेश बनता नज़र आ रहा था।

मराठों ने अंग्रेज़ों से संधि कर जो उंगली पकड़ाई थी उसके सहारे बस्तर राज्य की गर्दन पकड़ने का स्वप्न अब साकार होने लगा। सागवान के बड़े-बड़े दरख्त और वन-उत्पादों पर अंग्रेज़ों की नज़र गड़ी हुई थी। न केवल ब्लण्ट बल्कि अनेकों अन्य देशी-विदेशी मुखबिरों ने बस्तर राज्य पर बहुत-सी जानकारी ईस्ट इंडिया कंपनी के उन कर्ता-धर्ताओं को मुहैय्या करा दी थी जो अपनी साम्राज्यवादी नीति के प्रसार की योजनायें गढ़ रहे थे। महिपाल देव ईस्ट इंडिया कंपनी और मराठों की संयुक्त ताकत का सामना करने में सक्षम नहीं थे और उन्हें कड़ुवा घूंट पीकर रह जाना पड़ा।

भोंसला शासन की नागपुर ज़मीन्दारी के चार उपवर्गों में एक था छतीसगढ़ सूबा। अब तक इस सूबे के बस्तर को छोड़ कर शेष क्षेत्र का प्रशासन सीधे मराठों के हाथ में था। इस

गेंद सिंह की रणनीति काम कर रही थी। उसकी संगठन क्षमता ने चमत्कार कर दिखाया था। अब तक एक राजा या दूसरे सामंत के लिये लड़ने वाले अबूझमाड़िये अब अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे थे। यह उनके राजनीतिक हक की लड़ाई भी थी; स्वयं पर 'अपनी मर्जी के शासन' के हक के लिये बहुत कम लड़ाईयाँ अतीत में लड़ी गयी हैं।

समय तक भोंसले भी दुर्बल हो चुके थे और अंग्रेज़ ताकतवर। मराठा–अंग्रेज़ संधि के बाद से ही छत्तीसगढ़ सूबे में प्रत्यक्ष तथा बस्तर के भीतर अंग्रेज़ों का अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप प्रारंभ हो गया था। सूबे के प्रथम ब्रिटिश अधीक्षक बन कर आये मेजर पी.वी. एगन्यू स्वभाव से शांत किंतु दिमाग के शातिर थे। बहुत ही शातिराना अंदाज़ में वह अनुबंध तैयार किया गया जिसका अर्थ था कि बस्तर को सभी मुख्य प्रसाशनिक अधिकार तथा अधिकतम न्यायिक अधिकार नागपुर को सौंपने होंगे। इस अनुबंध के पीछे की सच्चाई यह थी कि ऐसा करने से ही बस्तर के राजा की वास्तविक शक्ति क्षीण की जा सकती थी और मुख्यधारा में जोड़ने का भ्रम पैदा कर इस ज़मीन को सभ्यता से पूरी तरह काट कर इसका भरपूर शोषण करने का धरातल तैयार किया जा सकता था।

जिस बस्तर क्षेत्र पर अन्नमदेव आसानी से काबिज हुए थे वह नाग राजाओं और सामंतों की आपसी लड़ाईयों से टूट चुका था। आये दिन एक–एक गाँव, बगीचा या तालाब के लिये लड़ मरने वाले नाग 'पंच कोसी' राजा हो गये थे और सच्चाई यह भी थी कि इनकी प्रजा ही इनके आपसी विवादों से त्रस्त थी। किस सामंत का साथ दें और किसका न दें इस परिस्थिति में ही आम जन की साँप छुछुन्दर वाली स्थिति हो जाती थी। यही स्थिति अन्नदेव के लिये लाभकारी हुई। स्थानीय ही उनके सहायक और मुखबिर बन गये थे। राजा ने भी ऐसे सहायकों को उचित सम्मान दिया और सैनिक तथा शासकीय सेवाओं में उन्हें समुचित पद प्रदान किये गये। गोंड, सप्तमाड़िया तथा धुरवा जैसे समूहों की आंतरिक सामाजिक व प्रसाशनिक व्यवस्था पर अन्नमदेव ने किसी तरह से स्वयं को आरोपित करने का यत्न नहीं किया। उनके लिये यह ही बहुत था कि क्षेत्र के राजा के रूप में उन्हें स्थानीय जनजातियों ने स्वीकार्यता प्रदान कर दी है।

अन्नमदेव के बाद के राजाओं ने भी कभी किसी स्थानीय मुखिया या कि उसके परिवार को उसके परम्परागत अधिकार से या कि उसकी संपत्ति से वंचित करने का यत्न नहीं किया। बस्तर राज्य के सभी भूमि–बंदोबस्त वास्तव में आदिवासी परम्पराओं के साथ जन्मे थे। इतना ही नहीं आदिवासी समूहों को संतुष्ट एवं वफादार बनाये रखने के लिये अनेक प्रकार की सुविधायें भी दी गयी थीं। इस तरह परम्परागत मुखिया राज्य के अविभाज्य अंग बन गये। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि अन्नमदेव तथा उसके बाद के शासक बस्तर की नब्ज़ पहचान कर पूर्णतः उसकी मिट्टी का ही हिस्सा हो गये थे। राजाओं की पटरानियाँ अवश्य क्षत्रिय कुल से लायी गयीं किंतु उनकी अन्य रानियाँ स्थानीय जनजाति कुलों की स्त्रियाँ ही रहीं, यह कृत्य भी राजा को स्थानीय स्वीकार्यता प्रदान करने में सहायक बना।

बस्तर क्षेत्र की जनता और राजा के बीच बहुत से बिचौलिये नहीं थे। प्रजा सीधे राजा तक पहुँच सकती थी तथा राजा ने ऐसी राजकीय परम्पराओं को मान्यता दी थी जिससे वह सीधे प्रजा के बीच अपनी पैठ रखता था। इसका लाभ युद्ध और शांति दोनों ही स्थितियों में भरपूर होता रहा। बाहरी आक्रमण के समय राजा की अपनी प्रजा ही उसकी 'रिजर्व सेना' बन जाया करती थी, यह ऐसी ताकत थी जिसका मूल्यांकन आक्रमणकारी नहीं कर पाते थे और उन्हें मुँह की खानी पड़ती थी।

मराठों और अंगरेजों को बस्तर की इसी आंतरिक ताकत पर हमला करने की नीति में सफलतायें मिलने लगीं। आम जनता के लिये न्याय का मुख्य द्वार नागपुर हो गया था और वहाँ तक पहुँचने की ताकत रखने वाले फरियादी इस वन अंचल में कम ही थे। स्थानीय मुखिया और ज़मीन्दार अपनी गरिमा के छिन जाने से छटपटा कर रह गये थे। विरोध धीरे–धीरे पनपने लगा। परलकोट इस समय सर्वाधिक सक्रिय था।

परलकोट अत्यंत नैसर्गिक स्थल है। उसकी सीमा को एक ओर से कोतरी नदी निर्धारित करती थी। राजधानी में तीन नदियों का संगम उसकी सुन्दरता को चार चाँद लगा देता था। परलकोट के ज़मीन्दार को भूमिया राजा की उपाधि प्राप्त थी। ऐसी मान्यता थी कि उनके पूर्व–पुरुष चट्टान से निकले थे। बस्तर के राजा भी इस किंवदंति को मान्यता देते थे इस लिये परलकोट के ज़मीन्दार को राज्य में विशेष दर्जा और सम्मान हासिल था

जो मराठा शासन ने अब अमान्य कर दिया था। गेंदसिंह इसी बात से आहत थे।

परलकोट और उसके आसपास बीतते समय के साथ आम आदमी की बेचैनी भी करवट लेने लगी। इसी बेचैनी को गेंदसिंह ने ज्वालामुखी बना दिया। आज मटमंद के इस घोटुल में विरोध को विद्रोह की शक्ति देने के लिये ही बैठक रखी गयी थी। गेंदसिंह ने खड़े हो कर बोलना आरंभ किया : हम लोग कुछ नहीं करेंगे तो गोरा लोग हमको मार डालेगा हमारी औरतों के साथ बुरा काम करेगा। वो लोग हमारे राजा को भी खतम कर देना चाहते हैं। क्या हम यह सब होते हुए चुपचाप देखते रहेंगे?"

नहीं देखेंगे... नहीं देखेंगे... सामूहिक स्वर गूंज उठा। इस ध्वनि में युवतियों का आक्रोषित स्वर भी सम्मिलित था

तो क्या करेंगे? गेंदसिंह ने स्वर के आक्रोष को और उत्तेजित करना चाहा।

आप जो बोलोगे वही होगा। एक-एक आदमी आपके इशारे पर जान दे देगा। मटमंद का गायता (ग्राम प्रमुख), गेंदसिंह की बगल में ही उकडू बैठा था, उठ खड़ा हुआ।

जान देने से काम नहीं चलेगा, जान लेना पड़ेगा... कोई बंजारा दिखे मार दो। कोई नागपुर राजा का आदमी दिखे मार दो, कोई भी गोरा आदमी दिखे मार दो। हमारा केवल एक ही राजा है महिपाल देव। अनाज का एक हिस्सा भी किसी को नहीं देना है। ...सब जगह नागपुर राजा के लोग मकान और शिविर बना रहे हैं। आस पास अंग्रेज़ लोग भी रहने लगे हैं या शिकार पर आते हैं। हम उनका शिकार करेंगे। गेंदसिंह की आवाज़ पैनी हो गयी।

ऐसा ही होगा... भीड़ की आँखों में उतरा हुआ खून देखा जा सकता था। अबूझमाड़ के युवक और युवतियाँ उस ताकत के खिलाफ उठ खड़े हुए थे जिसके आगे उनका अपना राजा घुटने टेक चुका था।

निबरा नदी के किनारे-किनारे हो कर लगभग पचास पैदल तथा चार घुड़सवार मराठा सैनिकों की एक टुकड़ी नारायणपुर की ओर बढ़ रही थी। बंदूकें और असलाह लिये सैनिक निश्चिंत हो कर आगे बढ़ते जा रहे थे। एकाएक चारों ओर से नुकीले बाणों और भालों की वर्षा सी हो गयी। हमला इतना तेज था कि मोर्चा लेने का समय किसी के पास न था। मराठा सैनिकों में भगदड़ मच गयी। पेड़ों के ऊपर पत्ते बाँध कर बैठे अबूझमाड़िये सचमुच अबूझ हो गये थे। पलट कर भागते सैनिकों पर फरसा और टंगिया लिये आदिमों का समूह टूट पड़ा। यह पहली विजय थी। गेंदसिंह का आदेश पाते ही अबूझमाड़िये अपने अपने गाँवों में लौट गये जैसे कुछ हुआ ही न हो।

यह साधारण घटना न थी। भोंसलों को सिहरन हो गयी थी और अंगरेज सतर्क हो गये। एक अंग्रेज़-मराठा संयुक्त पलटन ने घटनास्थल का दौरा किया। हर माड़िया घटना की जानकारी होने से अपनी अनभिज्ञता दर्शाता रहा। गोपाल राव के धैर्य की परीक्षा पूरी हो गयी थी। यह समझते उसे देर न लगी थी कि बिना सामूहिक अभियान के, जिसमें अबूझमाड़ के अनेकों गाँव सम्मिलित हों यह संभव ही नहीं है कि एक समूची सैन्य टुकड़ी को नेस्तनाबूद किया जा सके। यद्यपि गोपाल राव जाँच अभियान में जुटी इस टुकड़ी पर भी हमला होने की आशंका से सतर्क थे। एक टुकड़ी जाँच दल के आगे भेजी गयी थी जिसका काम हमले की आशंका की स्थिति पाते ही जाँच दल को सतर्क करना था। हांलाकि अभी इसे विद्रोह कहना अभी जल्दबाजी थी किंतु इस तरह ही घटना को पुनरावृत्ति का अवसर देना उचित नहीं था और इसके लिये प्रजा को भय-युक्त करने की आवश्यकता थी।

गोपालराव उस झोंपड़ी के बाहर खड़े 'हबका' को बाल पकड़ कर निर्दयता से खींचता हुआ उस सागवान के पेड़ के पास तक लाया और फिर उसके पेट पर भरपूर लात मार दी। राव जानता था कि हबका कुछ नहीं बतायेगा लेकिन उसकी हालत ऐसी तो बनानी ही थी कि फिर अबूझमाड़ में अगला बाण धनुष पर चढ़ने से पहले काँप उठे। पास खड़े सैनिक के हाथ से लम्बी सी बंदूक लगभग छीनने की मुद्रा में राव ने लिया और उसके बट से उसने भरपूर वार हबका की छाती पर किया। मुंह से खून निकल आया था। इस तरह का एक और वार ही हबका के लिये यह दुनिया छोड़ जाने के लिये पर्याप्त होता। लेकिन ऐसा होने पर मराठा ताकत का संदेश जंगल के भीतर कैसे पहुंचता?

ताकत हमेशा उन्मादी होती है, झोपड़ी के भीतर से चीख कर हबका की ओर भाग कर आती हुई हुंगी को दो मराठा सैनिकों ने रोक लिया था। हुंगी, हबका की हालत देख कर बेतहाशा चीख रही थी। एक सैनिक ने बड़ी ही निर्ममता से उसकी बाँह पीछे की ओर मोड़ दी; हुंगी की चीख बेहद दर्द से भरी कराह में बदल गयी थी। हबका ने बहुत ही लाचार आँखों से अपनी मोटियारी की ओर देखा फिर उसकी आंखें मुंदने लगी। राव अब हुंगी की ओर बढ़ा... उसकी आँखें राक्षसी हो उठीं। वहशियानी हँसी हँसते हुए उसने एक हाथ से खींच कर हुंगी को उसके इकलौते वस्त्र के भार से भी मुक्त कर दिया। मराठा सैनिकों की खिलखिलाने की आवाज़ें हुँगी के कानों में गूंजनें लगीं। ...और फिर बदला लिया जाने लगा। हुंगी की दर्द से भरी कराहों से पहाड़ सिहर उठा था। एक-एक कर हुंगी के बदन पर नाखूनों और दाँतों के निशान छोड़ते जाते सैनिक उसके जिस्म को बेजान हो जाने के बाद भी देर तक नोचते रहे थे।

गेंद सिंह की रणनीति काम कर रही थी। उसकी संगठन क्षमता ने चमत्कार कर दिखाया था। अब तक एक राजा या दूसरे सामंत के लिये लड़ने वाले अबूझमाड़िये अब अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे थे। यह उनके राजनीतिक हक की लड़ाई भी थी; स्वयं पर 'अपनी मर्जी के शासन' के हक के लिये बहुत कम लड़ाईयाँ अतीत में लड़ी गयी हैं।

यहाँ कोई राजा अपनी सेना लिये साम्राज्यवादिता के प्रसार के लिये नहीं निकल पड़ा था बल्कि वह जनता थी जो खुद पर अपने पसंद की सत्ता चाहती थी और स्वयं बलिदान हो उठी थी अपने हक, अपने समाज के हक और अपने राजा के हक के लिये...

घोटुल इन दिनों मंत्रणा और योजना निर्माण के केन्द्र बनते जा रहे थे। रात होते ही बैठकें होती और सुबह होते–होते उनका क्रियान्वयन कर दिया जाता। धावड़ा वृक्ष की टहनियों को विद्रोह के संकेत के रूप में एक गाँव से दूसरे गाँव भेजा जाता और पत्तियों के सूखने से पहले ही 'टहनी' पाने वाले ग्रामीण, विद्रोही सेना के साथ आ खड़े होते थे। धनुष बाण, कुल्हाड़ी और भाला लेकर हज़ारों की संख्या में वीर अबूझमाड़िये निकल पड़ते और फिर कभी मराठा संपत्ति जला दी जाती तो कभी उनके व्यापारिक या सैनिक काफिले लूट लिये जाते। नागपुर शासन ने जब बड़ी संख्या में सैनिकों, बंदूकों और तोपों का रुख अबूझमाड़ की ओर करना आरंभ किया तब अपनी रणनीति में परिवर्तन करते हुए गेंद सिंह ने युवतियों को भी इस विद्रोह में आगे लाने का निर्णय किया। अब सीधी लड़ाई छापामार युद्ध में परिणित हो गयी। युवतियों ने सैनिकों के क्षेत्र में आने–जाने पर नज़र रखना आरंभ कर दिया था। किसी युवती से सूचना पाते ही एक आदिम टुकड़ी सक्रिय हो जाती। दूर से ही अपनी उपस्थिति का भान कराते हुए अबूझमाड़िये फरसे और टँगिये चमकाने लगते। उत्तेजित मराठा सैनिकों की टुकड़ी जैसे ही उन पर आक्रमण करती सभी भीतर के जंगलों की ओर दौड़ लगा देते। इस हलचल के साथ ही नगाड़े बज उठते थे। फिर दूर सुदूर, जहाँ–जहाँ तक इन नगाड़ों की आवाज़ पहुँचती हर ओर से अबूझमाड़ियों का हुजूम आवाज़ की दिशा में बढ़ा चला आता। बदन नंगा, पैर खाली लेकिन फिर भी हौसले से भरे और प्राकृतिक हथियारों से लैस इन अबूझमाड़ियों को किसी प्रशिक्षित सेना से कमतर नहीं आँका जा सकता था। यह हौसला

उनकी जीवन शैली थी, उनके रक्त में दौड़ता था।

गेंद सिंह, मराठों और अंग्रेज़ों के लिये दहशत का दूसरा नाम हो गये थे; उनकी तलाश जारी थी। नागपुर में बैठे बस्तर के नये आकाओं ने बातचीत से या कि महिपाल देव की मध्यस्तता से कोई हल तलाशने की कोशिश भी नहीं की। पलटवार लगातार होते रहे। हर तीर का जवाब बंदूक से दिया जाता रहा। संदेह के आधार पर जो भी अबूझमाड़िया पकड़ में आया मराठा सैनिकों ने उसकी दुर्गत बना दी थी। कत्ल–ए–आम और बलात्कार रोज़ की घटनाओं में शुमार थे। रणनीति के तहत दिन में जब भी मराठा सैनिक टुकड़ी गश्त पर निकलती तो घरों और खड़ी फसलों में आग लगा देती। इन सबके बाद भी अबूझमाड़ियों की हिम्मत देखने लायक थी जबकि पूरे इलाके में हालात भुखमरी जैसे होने लगे थे।

उस रात नारायणपुर के पास की मराठा सैन्य छावनी पर हमला हुआ। अबूझमाड़ी योद्धा लापरवाह सैनिकों पर कहर बन कर टूट पड़े। विद्रोही अबूझमाड़ियों के हाथों आज मरने वालों में दो अंग्रेज़ अधिकारी भी थे। इस घटना ने जगदलपुर से लेकर नागपुर तक सनसनी फैला दी। यहाँ तक नौबत आ गयी थी कि छत्तीसगढ़ सूबे के ब्रिटिश अधीक्षक मेजर एगन्यू को मामले में सीधा हस्तक्षेप करना पड़ा। विद्रोह को कुचलने के लिये परलकोट के निकटवर्ती मराठा क्षेत्र के अंग्रेज़ पुलिस अधीक्षक कैप्टन पेव को निर्देश दिये गये और फिर युद्ध स्तर पर तैयारी के साथ अंग्रेज़ों और मराठों की विशाल संयुक्त सेना अबूझमाड़ के लिये कूच कर गयी।

देखो, पकड़ो और मार डालो की नीति के साथ अंग्रेज़ों ने मराठा सैनिकों की टुकड़ियों को अलग–अलग मार्गों से अबूझमाड़ के भीतर प्रवेश कराया। अंग्रेज़ स्वयं कमांडर बने रहे और सही भी है। मरने के लिये हिन्दुस्तानी, मारने के लिये हिन्दुस्तानी तो फिर उन्हें क्यों अपनों को जोखिम में डालना था? फिर क्या बच्चे और क्या बूढे... जो सामने आया मिटा दिया गया।

अंग्रेज़ और मराठाओं के अचानक हुए इस संयुक्त अभियान से अबूझमाड़ी विद्रोहियों का संगठन टूट गया। चौतरफा हमले होने से योजना बना पाने की गोपनीयता समाप्त हो गयी थी। हर अबूझमाड़िये को पकड़ कर पहले तो बेदम कर मारा जाता फिर उससे गेंद सिंह का पता पूछा जाता। किसी आहट पर भी बिना निरीक्षण–परीक्षण के गोली दागी जा रही थी।

10 जनवरी 1825। परलकोट को चारों ओर से घेर लिया गया था। गेंद सिंह आखिरी लड़ाई लड़ने के लिये मुट्ठी भर विद्रोहियों को साथ अपने महल के बाहर ही ऊंचाई पर खड़े हो कर संबोधित कर रहे थे। दंतेश्वरी माई की जयजयकार के साथ हर अबूझमाड़ी हाथ जब ऊपर उठता तो उनके फरसों की चमचमाती धार देख कर सूरज को भी गर्व हो उठता था। हर एक विद्रोही जन जान गया था कि आज उनके जीवन का आखिरी दिन है लेकिन किसी के चेहरे पर मायूसी नहीं दिखती थी।

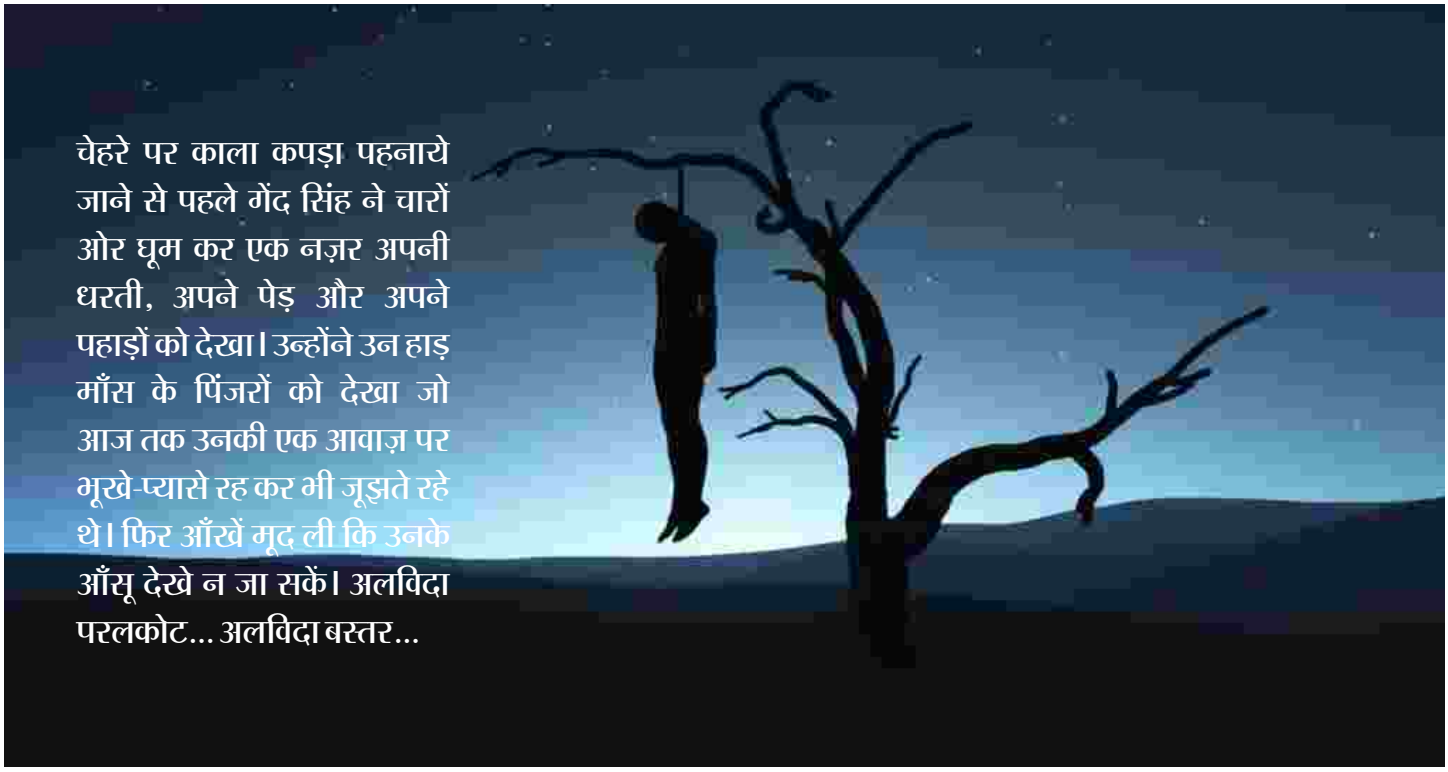

चेहरे पर काला कपड़ा पहनाये जाने से पहले गेंद सिंह ने चारों ओर घूम कर एक नज़र अपनी धरती, अपने पेड़ और अपने पहाड़ों को देखा। उन्होंने उन हाड़ माँस के पिंजरों को देखा जो आज तक उनकी एक आवाज़ पर भूखे-प्यासे रह कर भी जूझते रहे थे। फिर आँखें मूद ली कि उनके आँसू देखे न जा सकें। अलविदा परलकोट... अलविदा बस्तर...

हम सीधी लड़ाई लड़ेंगे और मरेंगे, हमारे बच्चे हमारे लिये गीत गायेंगे और कहेंगे कि हम न नागपुर के राजा की फौज से डरे और न ही गोरे लोगों से.... गेंद सिंह के स्वर में बलिदान हो जाने की भावना का दर्प दहक उठा।

तोप का गोला दागा गया था। भीषण आवाज के साथ परलकोट के किले की बाहरी दीवार ढह गयी। एक ओर से सैंकड़ों मराठा पैदल सैनिक शोर करते हुए गेंद सिंह और उनके मुट्ठी भर साथियों की ओर दौड़े चले आ रहे थे। कुछ ही देर में किले को हर ओर से ढा दिया गया। जिन आदिम हाथों में धनुष था उन्होंने गोलियों का मुकाबला अपने बाणों से किया। वर्दी और कवच से सुसज्जित शरीरों से नंगे पिंजर भिड़ रहे थे। चार-चार तलवार से एक-एक फरसे ने मोर्चा संभाला... दो ओर से रायफल निशाना लगा लगा कर गरजती रही और एक-एक अबूझमाड़ी वीर पूरी शान से शहीद होता रहा।

लाशों के अम्बार लगते गये लेकिन गेंद सिंह अभी जीवित थे; चारों ओर से मराठा सैनिकों से घिरे अपने पास बचे आख़िरी अस्त्र फरसे से लड़ते हुए वे रक्त से पूरी तरह नहाये हुए थे। गेंद सिंह को जिन्दा पकड़ने का आदेश हुआ था और इसी लिये गोली नहीं चलायी जा रही थी। लड़ाई के अंतिम चरण में कैप्टन पेव सफेद रंग के घोड़े पर सवार किले के भीतर पहुँचा, अपने हाव-भाव से वह अत्यंत सक्रिय नज़र आ रहा था। उसका इशारा पाते ही बीसियों मराठा सैनिक इकट्ठे ही गेंद सिंह पर काबू पाने के लिये उस पर झूम गये। गेंद सिंह दबोच लिये गये थे।

20 जनवरी 1825, सुबह का वक्त। परलकोट परगने का एक-एक आदमी और दूर सुदूर से भी हज़ारों अबूझमाड़िया किले के सामने एकत्रित थे। अनेकों घुड़सवार अंग्रेज़ सैनिक और पैदल मराठा सैनिकों ने किले को चारों ओर से घेरा हुआ था। गेंद सिंह बाहर लाये गये। जीवन के इन अंतिम क्षणों में अपार गर्व से भरा उनका मस्तक उठा हुआ था। उनके हाथों और पैरों में जंज़ीर बंधी हुई थी; शरीर पर सफेद वस्त्र और हवा में उड़ते हुए उनके केश देख कर मूक दर्शक बने अबूझमाड़ी आदिम इस तरह कृतज्ञ और नतमस्तक थे जैसे वे अपने देवता के सम्मुख होते हैं।

गेंद सिंह के हाथों और पैरों की जंज़ीर खोल दी गयीं। जल्लाद ने उनके दोनों हाथों को रस्सी से पीछे की ओर कर बाँध दिया; फिर दोनों पैर बाँधे गये। सबकी साँसे थम गयी थी और जैसे सहम कर हवा भी ठहर गयी थी। वह आम का पेड़ था जिस पर फाँसी का फंदा लटकाया गया था। चेहरे पर काला कपड़ा पहनाये जाने से पहले गेंद सिंह ने चारों ओर घूम कर एक नज़र अपनी धरती, अपने पेड़ और अपने पहाड़ों को देखा। उन्होंने उन हाड़ माँस के पिंजरों को देखा जो आज तक उनकी एक आवाज़ पर भूखे-प्यासे रह कर भी जूझते रहे थे। फिर आँखें मूंद लीं कि उनके आँसू देखे न जा सकें। अलविदा परलकोट... अलविदा बस्तर... फाँसी बड़ी ही निर्दयता से दी गयी, टहनी पर ऊपर खींच कर गेंद सिंह लटका दिये गये थे। ◆◆◆

Ashok Malik

Sales Representative

REALTOR® MLS® MULTIPLE LISTING SERVICE®

NetPlus Realty Sales Inc., *Brokerage*

Independently Canadian Owned & Operated

Office: (416) 287-6888 Direct No: (647) 483-7075

5524A Lawrence Ave. E, Toronto, Ontario M1C 3B2

ashokmalik@rogers.com

Ask us about New Homes and Investment Properties.

THINKING OF SELLING OR BUYING?
FREE MARKET EVALUATION

FULL MLS SERVICE & FULL MARKETING = SOLD!

We Offer:

- No up-front fees
- We advertise your home for free
- We provide attractive yard sign
- Agents show your home by appointments to prospective buyers.
- We negotiate the purchace agreement
- We pre-qualify all buyers
- We help arrange financing and oversee the inspections
- We handle all the paperwork and supervise the closing

Whats's Your Home Worth?
Contact us for a free, no hassle
Market Evaluation of your home

"Bottom Line: "We provide Professional Full Services With local experience & knowledge."

not intended to solicit properties already listed for sale

आलेख

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों की स्त्रियाँ

✍ मधु अरोड़ा

सामान्यतः यह देखा गया है कि कथा साहित्य में स्त्री पात्रों की मुक्ति क्रान्ति के कोई मायने नहीं रखती, जब तक कि वह लोगों के आचरण में न ढले। साहित्य की आंखों से देखी गई स्त्री की छवि पूरी तरह साफ़ होकर आई हो, ऐसा कम ही हुआ है। नारी मुक्ति की समर्थक कथाकार लवलीन के अनुसार नारियों को विरोधाभासी स्थितियों में काम करना है। जो स्त्रियां अंतर्द्वन्द्व में पड़कर निष्क्रिय हो जाती हैं, उन्हें गंतव्य नहीं मिलता। उनको इन्हीं उलझे धागों में से साबुत धागे को निकालना होता है। उनकी निर्भरता, उनकी समस्याएं समाज के स्तर पर उजागर होती हुई सिर्फ़ बाहरी नहीं होतीं। वे गूढ़ अर्थों में ज़्यादातर आन्तरिक होती हैं। भौतिक स्वतंत्रता के बिना अन्तिम और आन्तरिक स्वतंत्रता अधूरी और असंभव है।

तेजेन्द्र अपने नारी पात्रों के प्रति पूरे सजग रहते हैं। वे उनसे समाज की उन विभीषिकाओं को कहलवाते हैं जो पाठक को झकझोर दें और सोचने पर विवश करे। एक तरफ क्रमशः कहानी की नायिका रेखा को दहेज के लिये प्रताड़ित किया जाता है और जब नौकरी के लिये विवश किया जाता है तो वह निर्द्वन्द्व होकर अपने पति प्रमोद से कह बैठती है 'तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि मैं तुम्हारे साथ रहूं। अगर नौकरी करके ही जीना है तो अकेली रहूंगी।'

इस परिपेक्ष्य में कथाकार तेजेन्द्र शर्मा एक ऐसे कथाकार के रूप में सामने आते हैं जिनका नाम उन लेखकों में आसानी से शामिल किया जा सकता है जिन्होंने नारी के साथ हो रहे भेदभाव को न केवल अपनी कहानियों में शामिल किया है बल्कि बख़ूबी निभाया भी है। तेजेन्द्र की कथा–कला ने यह साबित कर दिया है कि उनके पास नारी की मानसिक दशा और उनकी समस्याओं को तह तक समझने एवं उनके प्रस्तुतीकरण का सामर्थ्य भी है।

तेजेन्द्र के नारी पात्र प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दयनीय नहीं बनते। वे उलझते हैं, टूटते हैं पर अपने रास्ते ख़ुद तलाशते हैं। वे नारी विमर्श की दलीलों व दलालों से मुक्त हैं। 'ग्रीन कार्ड' कहानी की शारदा और सुगंधा दोनों नारी पात्र पढ़े–लिखे हैं, वे अपने 'स्व' की कीमत पर अभय से कोई समझौता नहीं करते तथा अभय के झूठ का पर्दाफ़ाश होने पर दोनों ही अभय को अपने जीवन से एक झटके में अलग कर देते हैं और अभय माया मिली न राम की तर्ज़ पर हाथ मलता रह जाता है। वहीं 'उड़ान' की नायिका वीनू के एयर होस्टेस बनने का सपना, सपने को साकार होते देखने का सुख और फिर सपने को टूटते, धराशायी होते देखने का सदमा, इसके बावज़ूद तेजेन्द्र ने वीनू को किसी के सामने गिड़गिड़ाते नहीं दिखाया है, सिर्फ उसकी भावनाओं से परिचित कराया है। उनके नारी पात्र बेचारगी की कतार में खड़े नहीं होते बल्कि जीवन से संघर्ष करने का आवाहन अपने कार्य द्वारा करते हैं न कि शोर

शराबा करके। प्रख्यात आलोचक परमानन्द श्रीवास्तव ठीक ही कहते हैं कि तेजेन्द्र शर्मा लाउड नहीं होते। वे 'मौन' और 'शब्द' का अर्थ समझते हैं।

तेजेन्द्र अपने नारी पात्रों के प्रति पूरे सजग रहते हैं। वे उनसे समाज की उन विभीषिकाओं को कहलवाते हैं जो पाठक को झकझोर दें और सोचने पर विवश करें। एक तरफ क्रमशः कहानी की नायिका रेखा को दहेज के लिये प्रताड़ित किया जाता है और जब नौकरी के लिये विवश किया जाता है तो वह निर्द्वन्द्व होकर अपने पति प्रमोद से कह बैठती है 'तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि मैं तुम्हारे साथ रहूं। अगर नौकरी करके ही जीना है तो अकेली रहूंगी।' तो दूसरी तरफ़ 'रेत के शिखर' कहानी की नायिका मंजुला का अधिक पढ़ा–लिखा होना ही उसका दुश्मन हो जाता है। मंजुला के ज़रिये उन सभी नारियों के मनोभावों एवं संघर्षों को दर्शाया है जिन्हें समाज की लीक से हटकर कार्य करने पर समाज से, परिवार से क्या–क्या नहीं सुनना पड़ता। तेजेन्द्र ने इन कहानियों के माध्यम से बड़े ही साफ़गोई से नारी पात्रों के फूटते आक्रोश, निर्णयात्मक रुख़ इख्तियार करने का साहस व हौसला दर्शाया है।

इनके नारी पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे बाज़ार में खड़ी होकर नारेबाजी नहीं करतीं। वे किन्हीं स्त्री–विमर्श संस्था, महिला संस्था या राजनैतिक संस्था का न तो आसरा लेती हैं और न ही आसरा तकती हैं बल्कि अपने वजूद के लिये ख़ुद संघर्ष करती हैं और अपने निर्णय स्वयं लेती हैं। चूंकि तेजेन्द्र शर्मा एअरलाइन में कार्य कर चुके हैं अतः उनके पास विविध अनुभवों का अकूत भंडार है जो वे अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों में बांटते हैं। उनकी कहानी 'भंवर' की नायिका रमा विदेशों में बसी उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी इच्छापूर्ति के लिये किसी भी हद तक जा सकती है, चाहे दूसरे पुरुष से गर्भधारण ही क्यों न हो और वह

तेजेन्द्र जिस तरह से नारी मन की तहें खोलते हैं और उनकी पीड़ा को सामने लाते हैं, उनकी इसी विशेषता पर चर्चित कथाकार धीरेन्द्र अस्थाना ने कहा है कि 'परकाया प्रवेश में तेजेन्द्र को दक्षता हासिल है। यानि स्त्रियों की यातना, दुःख और हर्ष को तेजेन्द्र ने ठीक उसी तरह जिया है जैसे कोई स्त्री ही जी सकती है।'

भी डंके की चोट पर। साथ ही ये ताक़ीद भी कि भरत उसे अपनी रखैल न समझे और पुनः मिलने की कोशिश न करे। इस परिपेक्ष्य में राजेन्द्र यादव का कहना बिल्कुल सटीक लगता है कि 'परदेस में किसी का अपना जीवन नहीं है। वे सब एक दूसरे से जुड़कर 'अन्य' बनना चाहते हैं।'

'मुट्ठी भर रोशनी' कहानी की नायिका परिस्थितियों की मारी, लड़की होने का अभिशाप भोगती वह पात्र है जो ज़िन्दगी से हार मान चुकी है। उसके माध्यम से लेखक ने सामाजिक विषमताओं को दर्शाया है। तेजेन्द्र जिस तरह से नारी मन की तहें खोलते हैं और उनकी पीड़ा को सामने लाते हैं, उनकी इसी विशेषता पर चर्चित कथाकार धीरेन्द्र अस्थाना ने कहा है कि 'परकाया प्रवेश में तेजेन्द्र को दक्षता हासिल है। यानि स्त्रियों की यातना, दुःख और हर्ष को तेजेन्द्र ने ठीक उसी तरह जिया है जैसे कोई स्त्री ही जी सकती है।'

तेजेन्द्र के नारी पात्र परत दर परत खुलते जाते हैं। 'सिलवटें' कहानी की नायिका सुलक्षणा के माध्यम से तेजेन्द्र ने दर्शाया है कि नारी क्षमा और ममता की मूर्ति है। वह बड़े से बड़ा और कड़वे से कड़वा सच सह जाती है बशर्ते उसे बता दिया जाये। वे नारी के इस गुण से ख़ासे प्रभावित भी लगते हैं तभी तो सुलु के मुंह से कहलवाते हैं, 'मेरी बीमारी का सबसे बड़ा कारण आप हैं। मैं उस व्यक्ति की पत्नी हूं जिसमें अपना ग़ुनाह कुबूल करने की हिम्मत नहीं।' तेजेन्द्र की यह कहानी सिर्फ 'स्त्रीवाद' का विरोध ही नहीं बल्कि अस्तित्व की संपूर्णता पर एक गहरी नज़र भी है।

'धुंधली सुबह' की नायिका दिव्या के माध्यम से एक ऐसी नारी सामने आई हैं जो पति की दुश्चरित्रता से परेशान है और अंदर से टूटने की स्थिति तक पहुंच जाती है लेकिन अचानक उसके मन में विद्रोह अपना सिर उठाता है और वह सोचती है, क्या प्रभात को ही हक़ है प्रेरणाएं ढूंढने का? यही तेजेन्द्र के नारी पात्रों की विशेषता है कि वे थककर, टूटकर बैठ नहीं जाते बल्कि उन हालात से दो चार होते हुए ख़ुद के लिये मार्ग खोजते हैं। साथ ही वे नैतिकता का दामन नहीं छोड़ते और सामनेवाले को पूरा स्पेस देते हैं। इन कहानियों में तेजेन्द्र की सोच, उनके नारी पात्रों के निर्णय लेने की क्षमताओं का दायरा

तेजेन्द्र की शैली इतनी जीवन्त है कि पाठक स्वयं को उस संसार का हिस्सा समझने लगता है और सहज ही उसका सहयात्री बन जाता है। 'श्वेत श्याम' की नायिका संगीता की पांच सितारा होटलों की दीवानगी उसे देह-व्यापार के जाल में उलझा देती है। इस चरित्र के माध्यम से तेजेन्द्र ने ऐसी महिलाओं के प्रति ध्यान आकर्षित किया है जो अपने ऐशो-आराम के लिये देह व्यापार से भी गुरेज़ नहीं करतीं।

विकसित होता नज़र आता है। अब उनके नारी पात्र समान अधिकारों, ख़ुद पर जुल्म होने की पराकाष्ठा होने पर घर त्यागने की बात सोचने लगे हैं। फिर भी तेजेन्द्र शर्मा का मानना है कि नारी जल्दी घर नहीं छोड़ती और न तोड़ती है क्योंकि वह अपना घर परिवार छोड़कर अपना घर बसाने आती है। जब ग़लत सोच, ग़लत व्यवहार और अपमान की सीमा ही न रहे, तभी नारी किसी निर्णयात्मक बिन्दु पर पहुंचती है।

तेजेन्द्र के नारी पात्र प्रेम की अनुभूति से भी भरे-पूरे हैं और साथ ही उनमें सेंस आफ केयर भी कमतर नहीं। यह विशेषता अपराधबोध का प्रेत में लक्षित होती है। सुरभि नरेन को दिल की गहराईयों से चाहती है और इस बात से वह अपने माता-पिता को भी अवगत करा देती है। वही सुरभि जब कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के मकड़जाल में चली जाती है तब भी अपना मनोबल नहीं गिरने देती। अपनी मौत को सामने देखकर भी नरेन से कार के काग़ज़ात पर साइन करवाने के लिये कहती है ताकि नरेन को कानूनी पेचीदिगियों में न फंसना पड़े।

तेजेन्द्र युवा वर्ग की सोच में आ रहे परिवर्तन से भी अनभिज्ञ नहीं हैं और आधुनिक युग की युवा सोच को वे 'कोष्ठक' कहानी की नायिका कामिनी के ज़रिये दिखाते हैं। कामिनी उस युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी मनोवांछित वस्तु को पाने के लिये किसी भी सीमा तक जा सकता है और उन्हें अपने किये पर न तो रंज है और न पछतावा। कामिनी अपने सपनों के राजकुमार नरेन को पाने के लिये अपने कौमार्य को सहज रूप से समर्पित कर देती है और आंखों में चमक लिये वापिस चली जाती है।

प्रसिद्ध आलोचक शंभु गुप्त के अनुसार 'तेजेन्द्र शर्मा के नारी पात्रों में खुलेपन के प्रति बेइन्तिहा आत्मविश्वास दिखाई देता है। उनके अनुसार स्त्रीवादी वैचारिकी में 'अलौकिक अनुभव' को एक स्त्री की यौनिक सार्थकता कहा जा सकता है।' जैसे 'कोख का किराया' की मैनी, इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी बीफ़ी डेविड के साथ यौन संभोग और उसके बच्चे की मां बनने के लिये तैयार है वहीं 'ये क्या हो गया' की नायिका अनुष्ठा जो स्वयं को लेडी डायना के जीवन में ढालना चाहती है, नतीजतन उसके साथ भी वही दुर्घटना हो जाती है जो डायना के साथ हुई थी, यानि संबंधों के टूटने की प्रक्रिया। यह कहानी स्त्री के उन्माद और प्रतिशोध की कहानी है वहीं कथाकार ज़कीया जुबैरी इस कहानी को सरोगेट मदर की थीम से जुड़ी एक नये आयाम की कहानी मानती हैं। उनके अनुसार दो बच्चों की मां मनदीप का चरित्र हिन्दी कथा संसार का अनूठा चरित्र है। यह प्यार का वह उत्स है जहां मनदीप अपने पति की परवाह नहीं करती और अपने बसे बसाये घर को उजाड़ देती है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी की अन्तर्वस्तु और शिल्प दोनों में ग़ज़ब की विविधता हैं। सादगी में भी आश्चर्य, यह उनकी कहानी 'क़ब्र का मुनाफ़ा', 'देह की कीमत' और 'एक ही रंग में' है। भू-मंडलीकरण, वैश्वीकरण और उत्तर आधुनिकता के इस दौर में जीवन की दिल हिला देनेवाली घटनाओं को भुना लेने की सभ्यता का कितनी तेज़ी से विकास हो रहा है, इस तरह के अनुभव से साक्षात्कार कराती कहानी है 'देह की कीमत'। इस कहानी का पूरा वातावरण शोकभरा है। हरदीप के देहान्त के बाद भी उसकी पत्नी पम्मी का जीवट बचा है। तेजेन्द्र ने पम्मी के ज़रिये उन महिलाओं की स्थिति दर्शायी है जो अपनी ज़िन्दगी में आये तूफ़ान का सामना करने के लिये चुपचाप ख़ुद को तैयार करती हैं।

तेजेन्द्र की शैली इतनी जीवन्त है कि पाठक स्वयं को उस संसार का हिस्सा समझने लगता है और सहज ही उसका सहयात्री बन जाता है। 'श्वेत श्याम' की नायिका संगीता की पांच सितारा होटलों की दीवानगी उसे देह-व्यापार के जाल में उलझा देती है। इस चरित्र के माध्यम से तेजेन्द्र ने ऐसी महिलाओं के प्रति ध्यान आकर्षित किया है जो अपने ऐशो-

आराम के लिये देह व्यापार से भी गुरेज़ नहीं करतीं। उनकी एक कहानी 'टेलीफ़ोन लाइन' अपने आप में एक विलक्षण कहानी है। उसकी नायिका सोफ़िया एक बिंदास नारी है जो बिना किसी हिचक के गालियों की बौछार करती है। व्यवहार में ख़ासी कैल्कुलेटिव है। अपनी बेटी पिंकी के लिये वह अपने पूर्व प्रेमी अवतार से कहती है कि वह उससे शादी कर ले और यह प्रस्ताव रखने में वह बिल्कुल नहीं हिचकिचाती। वह अपने पुराने संबंध को भुनाने के लिये अवतार को कालेज के दिनों की दोस्ती और प्यार का वास्ता तक देती है।

तेजेन्द्र शर्मा के लंदन बस जाने के बाद उनके लेखन में विदेशी प्रभाव की झलक साफ़ दिखाई देती है, भले ही उनके पात्र ज़्यादातर हिन्दुस्तानी हैं। ये कहानियां प्रवासी भारतीय जीवन की कहानियां हैं। वे निश्चय ही इंग्लैण्ड में रह रहे भारतीयों की बदलती/बदली हुई जीवन विधि और शैली का काफ़ी प्रामाणिक लेखा-जोखा इन कहानियों में देते हैं। वे अपने इस दायित्व को भलीभांति समझते हैं कि इस दरम्यान अपने स्वयं के देश में हुए बदलाव और निरन्तर हो रहे परिवर्तन पर नज़र रखना है तथा उन्हें अपने साहित्य में लाना है। वे वर्तमान स्वदेश और अतीत के स्वदेश को अपनी रचनाओं में लाने में सिद्धहस्त हैं। किराये का नरक, ये क्या हो गया, बेघर आंखें, श्वेत श्याम, नई दहलीज़, सिलवटें आदि कहानियां भारत के बदलते यथार्थ की कहानियां हैं, वहीं भंवर, देह की कीमत, अभिशप्त, एक बार फिर होली कहानियों में अपने देश और स्वदेश की स्थितियों का अदभुत सम्मिश्रण है जो किसी भी प्रभावशाली कृति का आधार बनता है। जहां तक प्रवासी भारतीय स्त्रियों की बात है तो इस पुरानी पीढ़ी से इनकी अगली पीढ़ी की स्त्रियों में यह अन्तर आया है कि अब वे पतिव्रता या पति की छाया नहीं रह पाई हैं। कोख का किराया की मैनी, अभिशप्त की निशा और टेलीफ़ोन लाइन की पिंकी इनका ज्वलंत उदाहरण हैं।

लंदन की कथाकार, श्रीमती ज़कीया ज़ुबैरी के अनुसार 'आमतौर पर हिन्दी की कहानियों में मुसलमान चरित्र बहुत कम होते हैं और होते भी हैं तो एक 'टाइप' के तौर पर। वे हाड़-मांस के नहीं दिखाई देते। तेजेन्द्र ने अपनी कहानियों में मुसलमान चरित्रों को पर्याप्त स्थान दिया है या कहें कि उनको आधार बनाकर कहानियां लिखी हैं

लंदन की कथाकार, श्रीमती ज़कीया ज़ुबैरी के अनुसार 'आमतौर पर हिन्दी की कहानियों में मुसलमान चरित्र बहुत कम होते हैं और होते भी हैं तो एक 'टाइप' के तौर पर। वे हाड़-मांस के नहीं दिखाई देते। तेजेन्द्र ने अपनी कहानियों में मुसलमान चरित्रों को पर्याप्त स्थान दिया है या कहें कि उनको आधार बनाकर कहानियां लिखी हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।' इसका नायाब उदाहरण 'क़ब्र का मुनाफ़ा' कहानी है जहां नजम, जमाल, नादिरा, ख़लील और आबिदा जैसे चरित्र हैं और इनका चित्रण बहुत गहराई से किया गया है। इस कहानी को अजय नावरिया ने धर्म और बाज़ार की भयावहता और अनिवार्यता को रेखांकित करनेवाली कहानी माना है। कहानी के पुरुष पात्र नजम और ख़लील संसार के हर पति की तरह अपनी वफ़ादार पत्नियों से दुःखी हैं। उनकी नज़र में ये औरतें सिर्फ नेसेसरी ईविल हैं। विश्व की लगभग आधी आबादी के प्रति पुरुषों की कमोबेश यही सोच है। वहीं लेखक हरि भटनागर के अनुसार क़ब्र का मुनाफ़ा हंसी हंसी में बाज़ार की क्रूर दुनिया के साथ ही धर्म के चलते पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की विडम्बना को स्त्री के अंततः अकेले और अकेले-निसंग होते जाने की कथा कहती है। यह कहानी अपने कलेवर में मुस्लिम समाज की कहानी है लेकिन अपनी बयानी में जब यह स्वरूप लेती है तो जैसे धर्म की सीमा तोड़कर विश्व-स्त्री की पीड़ा की कहानी बन जाती है।'

'एक बार फिर होली' थीम के मामले में बहुत ख़ूबसूरत कहानी है। भारतीय मुस्लिम लड़की नजमा को मुस्लिम बाहुल्यवाले पाकिस्तान में ख़ुद को एडजस्ट करने में कितनी कठिनाई होती है, यही इस कहानी का मर्म है। नजमा एक ऐसी इन्सान है जिसे अपने माहौल से दूसरे माहौल में जाने पर अनगिनत परेशानियों का सामना करना पड़ता हे।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में सेक्स बड़े ही सकारात्मक रूप में आता है। सबसे उल्लेखनीय बात यही है कि वे स्त्री पुरूष के संबंधों के इस आधारभूत फलक को जीवन्तता का केन्द्रीय कारक मानते हैं। यह भी सच है कि तेजेन्द्र की कहानियों में सेक्स कभी एडवेंचर के रूप में आता है तो कभी जीवन की एकरसता और ठसता को तोड़ने के एक

संसाधन के रूप में आता है तो कहीं उनके नारी पात्र विवाह बाहर सेक्स करते हैं तो मानो वह विरोध का बिगुल है, कोमलता का संगीत नहीं।

गन्दगी का बक्सा की नायिका जया का कलहपूर्ण शादीशुदा जीवन से विरक्त हो जाना और फिर राज से शारीरिक संबंध मानो अत्याचार के ख़िलाफ उठाया गया कदम है चाहे वह जया का पचासवां वसन्त ही क्यों नहीं है। वहीं कल फिर आना की नायिका अपने पति की उपेक्षा का शिकार है, पति के मना करने के बाद सेक्स सुख से भी वंचित है। एक दिन पति कबीर की अनुपस्थिति में घर में घुस आये चोर से शारीरिक संबंध स्थापित करके सेक्स सुख पाती है। यह भी तो विरोध का एक तरीका है कि जिस सुख की महिला हक़दार है वह उससे क्योंकर वंचित रहे। उसका क़सूर क्या है, क्या महिला होना ही क़सूर है। घटनाएं ऐंद्रिक-सुख की तलाश के साथ रची-बुनी गई हैं, जो क़द्ररन पुरुष-सत्ता के विरुद्ध विद्रोह और उसके लिए आसक्ति और ज़रूरत-बोध के स्वर भी देती है। ये स्त्री-विमर्श का एक नया रूप है, जहां देह की स्वतंत्रता सिर्फ आनंद बोध के लिए नहीं है, एक मेडिसिन की तरह है। वैसे, सच ये भी है कि यहां शरीर के द्वार सिर्फ आत्मा की महानता का वर्णन करने के लिए नहीं खुलते... शरीर की ज़रूरत स्वीकार करने की हिम्मत दिखाते हैं। यह जीवन की सच्चाई से जुड़ी कहानी है। स्त्री (उपेक्षिता) की दमित, कुंठित यौन-आकांक्षाओं का यह विस्फोट वर्जनाओं का सर्वथा स्वाभाविक प्रतिरोध है।

इसी तरह तेजेन्द्र की एक कहानी है इन्तज़ाम। इस कहानी की नायिका जिल के पति टेरेंस के जीवन में दूसरी महिला के आ जाने से वह अपनी उपेक्षा नहीं सह पाती और अपने जीवन में जेम्स को प्रवेश करने देती है और जेम्स जिल की वे सभी जरूरतें पूरी करता है जो एक पति को करना चाहिये। इसी उपेक्षा का शिकार जिल की बेटी एलिसन होती है तो जिल जेम्स से वही सब कुछ अपनी बेटी को देने के लिये कहने के बारे में सोचती है जो वह खुद जेम्स से पा रही है। तेजेन्द्र के नारी पात्रों की विशेषता है कि वे कहीं भी लाउड नहीं होते बल्कि चुपचाप अपना इंतज़ाम कर लेते हैं। वे विरोध स्वरूप ग़ैर व्यक्ति से जुड़ते हैं जहां प्यार के कोमल भाव प्रमुख नहीं हैं, बल्कि ज़रूरतें प्रमुख हैं।

ओवर-फ़्लो पार्किंग कहानी में एक अलग तरह का यथार्थ है। तेजेन्द्र शर्मा के नारी पात्र पढ़े लिखे और ख़ासे कैल्कुलेटिव हैं। लंदन में बसने के बाद तेजेन्द्र की कहानियां भूमंडलीकरण, बाज़ारीकरण, उदारीकरण, मुक्तिकरण और न जाने कितने 'करणों' सहित अपने नये रंग ढंग के साथ खड़ी हैं। तेजेन्द्र की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है कि इनके जितने भी नारी पात्र हैं वे परिवार से जुड़े हुए हें। उन्होंने उनको कहीं भी यारबाशी करते नहीं दिखाया है।

तेजेन्द्र शर्मा समाज की इसी सबसे छोटी कड़ी परिवार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं और परिस्थितियों पर टिप्पणी करते हैं परन्तु उनके कथा संसार का मुख्य स्वर उन आर्थिक संबंधों के जाल को समझना है जिससे शेष और संबंधों का भविष्य या जीवन निर्धारित होता है और उनकी यह सोच कैंसर, ईंटों का जंगल और एक ही रंग में निहित है। इस बात को पत्रकार अजित राय भी मानते हैं कि तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में एक केन्द्रीय तत्व है-परिवार। वे बार-बार निम्न मध्यवर्गीय पारिवारिक इच्छाओं का आख्यान रचते हैं। तेजेन्द्र के पास हमेशा एक नया यथार्थ होता है। आज वे हिन्दी के अकेले कथाकार हैं जो 'लोकल' और 'ग्लोबल' हैं।

दूसरी तरफ कथाकार उर्मिला शिरीष मानती हैं कि तेजेन्द्र की कहानियां निजी विचार, विचारधारा तथा प्रवृत्ति को थोपती नहीं हैं, बल्कि छूकर निकल जाती हैं। उनकी कहानियां अपनी समग्रता में मानवीय जीवन का संवेदनात्मक आख्यान हैं।'

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियां अपनी विभिन्नता के लिये जानी जाती हैं। उपन्यासकार असग़र वजाहत के अनुसार ''तेजेन्द्र की कहानियां सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक विसंगतियों को जिस तरह सामने लाती हैं और जैसा मार्मिक विवरण करती हैं, वैसा कम ही देखा जाता है। वे विसंगतियों के शिल्पी हैं।''

प्रखर पत्रकार पुष्पा भारती के अनुसार ''तेजेन्द्र शर्मा की कोई भी कहानी महज़ कहानी नहीं होती वरन हमारे साथ एक संवाद होती है। हमारे अन्दर के एक बेहतर इंसान को जगाने की कोशिश होती है।''

वेब पत्रिका अभिव्यक्ति की संपादिका पूर्णिमा वर्मन के अनुसार ''तेजेन्द्र शर्मा हिन्दी में एकमात्र ऐसे कथाकार हैं जिनकी कहानियों में दुनियां भर के सरोकार हैं। वे संवेदनात्मक दृष्टि, भाषा कौशल पर अपनी विशेष पकड़ रखते हैं और अपनी विशिष्ट शैली में व्यक्त करते हैं। उनकी सभी कहानियां एक दूसरे से बहुत अलग हैं। वे प्रश्नों और समस्याओं को तो उठाते ही हैं मन की कोमल संवेदनाओं को भी कुशलता से चित्रित करते हैं।''

आमतौर पर यह सवाल पाठक के मन में ज़रूर पैदा होता है कि जो लेखक अपने साहित्य में आदर्श स्थितियां एवं चरित्र पैदा करता है, उसका अपना चरित्र एवं व्यवहार उन स्थितियों में कैसा रहता होगा। लंदन में पंजाबी कथाकार, कवि एवं आलोचक के.सी. मोहन इस विषय में बहुत महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हैं, बहुत से लेखक ऐसे भी हैं जो कि नारी जाति के प्रति बाहरी रूप में खासे प्रगतिवादी एवं सहानुभूति रखने वाले दिखाई देते हैं, जबकि अपनी निजी ज़िन्दगी में औरतों के प्रति उनका रवैया ख़ासा घिनौना होता है। ध्यान देने योग्य बात ये भी है कि मेरे अनुभव में तेजेन्द्र का रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में भी नारी जाति के प्रति ठीक वैसा ही व्यवहार है जैसा कि उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है।''

◆◆◆

CENTENARY OPTICAL

For A Better View of The World

We Offer Affordable Prices in a Wide Variety of Fashionable Frames & Lenses

Designer Frames,
Contact Lenses: Colored, Toric, Bifocal
Eye Exams on Premises,
Brand Name Sun Glasses
Most Insurance Plans Accepted

416-282-2030

2864 Ellesmere Rd, @ Neilson Scarborough, Ontario M1E 4B8

RAVI JOSHI
Licensed Optician &
Contact Lens Fitter

SAI SEWA CANADA

(A Registered Canadian Charity)

Address: 2750, 14th Avenue, Suite 201, Markham, ON, L3R 0B6
Phone: (905) 944-0370 Fax: (905) 944-0372
Charity number: 81980 4857 RR0001

Helping to Uplift Economically and Socially Deprived Illiterate Masses of India

Thank you for your kind donation to SAI SEWA CANADA. Your generous contribution will help the needy and the oppressed to win the battle against lack of education and shelter, disease, ignorance and despair.
Your official receipt for Income Tax purposes is enclosed.

आओ मिलकर कुछ पुण्य कमावें ।
दुखियों की बुनियाँ से अन्धेकार हटावें ॥

Thank you, once again, for supporting this noble cause and for your anticipated continuous support.
Sincerely yours,

Narinder Lal
416-391-4545

हिन्दी के पक्ष में जारी है एक ज़िंदा मिशन

• स्मृति में दर्ज होते गौरवशाली क्षण •

विश्व ब्राह्मण फेडरेशन ऑफ कनाडा द्वारा 14 नवम्बर 2010 को 'हिन्दी चेतना' के मुख्य सम्पादक श्री श्याम त्रिपाठी को उनकी हिन्दी की सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया.

ट्राइएंगल एरिया की उर्दू मजलिस जो उर्दू साहित्य की सोसाईटी है और कैरोलाईना एशिया सेण्टर ने मिलकर फेड एक्स ग्लोबल एजुकेशन, यूएनसी चैपल हिल के तत्वाधान में 'हिन्दी चेतना' के महामना मदनमोहन मालवीय विशेषांक का विमोचन बहुत धूमधाम से किया.

विश्व ब्राह्मण फेडरेशन ऑफ कनाडा द्वारा 'हिन्दी चेतना' के महामना मदनमोहन मालवीय विशेषांक का विमोचन किया गया.

कैम्ब्रिज नगर ओंटेरियो में एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंडित मदनमोहन मालवीय अंक का विमोचन किया गया. इसमें टोरंटो के लगभग सभी हिंदी प्रेमी एकत्रित थे जिन्होंने इस विमोचन की शोभा बढ़ाई.

हिंदी चेतना

हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका

• महामना मालवीय विशेषांक •

सम्पर्क : Hindi Chetna, 6, Larksmere Court, Markham, Ontario L3R 3R1
Phone (905) 475-7165 Fax : (905) 475-8867 e-mail : hindichetna@yahoo.ca

नव वर्ष के दोहे

गयी शाम का रतजगा सरदी ताबेदार।
नये साल की शान में एक और त्यौहार।।

तितली जैसे उड़ रहे सजे रिबन रंगीन।
गुब्बारों की ओट में हर बंदा संगीन।।

कोहरा पहने ऋतु चढ़ी मौसम का दरबार।
नया साल कहने लगा आदाब'र्ज सरकार।।

पिछला संवत चल दिया अपनी लाठी टेक।
नया बर्फ सा कुरकुरा, मूंगफली सा नेक।

बाग़ों में खिलते रहें इंद्रधनुष के रंग।
घर घर में बसता रहे खुशियों का मकरंद।।

मन में हो संवेदना तन में नव स्फूर्ति।
अपनों में सद्भावना जग में सुंदर कीर्ति।।

एक ओर हैं दावतें मौसम दूजी ओर।
दोनों मन को मोहते संध्या हो या भोर।।

खड़ी दूब मोती लिये धूप दुशाला गर्म।
सुबह सिंदूरी सी लगे नये साल के संग।।

गमले भर गुलदावदी क्यारी भरे गुलाब।
आसमान कोहरा भरा ठंड उमगता माघ।।

गरम अँगीठी जल गई उबल रही है चाय
साथ चार मिल बैठते खुलते मन अभिप्राय।।

दिशा दिशा में दीप रख द्वारे बंदनवार।
नया साल खुशियाँ भरे सर्दी हो गुलनार।।

नभ मौसम सागर सभी करें कृपा करतार।
जंग और आतंक की पड़े कभी ना मार।।

उन्नति का परचम उड़े ऐसा करें विकास।
संस्कार की नींव पर जमा रहे विश्वास।।

साल नया गुलज़ार हो मिटें सभी के दर्द।
मेहनत से हम झाड़ दें गए साल की गर्द।।

अभिनंदन नव वर्ष का मंगलमय हो साल।
ऋद्धि सिद्धि सुख संपदा सबसे रहें निहाल।।

पूर्णिमा वर्मन, शारजाह

डायन प्रथा

मैं बहुत खुश थी आपने आसपास की
लड़कियों को देखकर
मैं हैरान थी उनकी तरक्की पर
मुझे उम्मीद थी इस समाज से
जिसने मुझ जैसी ही कितनी लड़कियों को
मान-सम्मान दिया
स्वीकारा आदर सहित

मैं हर्षित थी उन आंकड़ों पर
जो दिखाते हैं भारत की लगातार बढ़ती हुई
साक्षरता दर

मैंने उत्साह से बताया था सबको
कि मेरे भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या
अमेरिकी कामकाजी महिलाओं से भी अधिक है
बार-बार मैं प्रेरित होती थी
देखती थी
आगे बढ़ रही लड़कियों को
मैं बहुत खुश थी अपने परिवेश की
तरक्की, उन्नति, आधुनिकता से

मैं खुश थी
जब तक नहीं सुनी थी बीबीसी पे
भारत के तेरह राज्यों में
डायन प्रथा की खबर

खबर जिसमें किसी भी स्त्री को डायन मान कर
किया जाता है उस पर अत्याचार
औरतें भी देती हैं
तथाकथित डायन को प्रताड़ना
किया जाता है पूरे गाँव के सामने उसे निर्वस्त्र
पीटा जाता है लाठियों से सबके सामने

और मैं खुश थी
कि मेरा देश जागृत हो रहा है
उन्नति के पथ पर बढ़ रहा है समाज
आखिर कब जागृत होगा हमारा समाज!

आस्था नवल, यू.एस.ए.

प्रयास

सुनील गज्जाणी, भारत

औरत
सूखे कुँए में बार-बार
बाल्टी डाल पानी निकलने का
प्रयास कर रहे थी!

किसान
बंजर खेत में बार-बार
हल चला रहा था कि
कही खेत उपजाऊ हो जाए!

आदमी
बार-बार अपनी छतरी खोल रहा था कि
कही बारिश ना
होने लग जाए!

बुड्ढे डोकरे के पाँव कब्र में लटके थे
परन्तु
शीश वो वरण माला रहा था!

उस बच्चे कि उम्र
पढ़ने-लिखने
खेलने-कूदने कि थी
परन्तु,
बन वो आदमी रहा था!

आराधना

डॉ. ग़ुलाम मुर्तजा शरीफ़, अमेरिका

मैंने कब कहा मेरा बुत बनाओ?
कब कहा आराधना करो?
फिर सोचता हूँ अच्छा ही किया बुत बना कर।

परमेश्वर तो अदृश्य है, निराकार है
मेरा बुत बना कर सिद्ध किया तुमने
कि मैं साधारण इंसान हूँ।

मैं तो स्वयं सत्य की तलाश में निकला था
तुम ने अनुशरण किया!

फिर 'ईश्वर' मुझे कैसे समझा?
मैं तो स्वयं अदृष्ट की तलाश में निकला था।
मुझे इंसान ही रहने दो।
जिसने संसार की सृष्टि की,
कण कण में विराजमान है।
उसकी कोई संतान नहीं,
ना वह किसी की संतान हैं।
मैं स्वयं किसी का पुत्र था, मेरी भी माँ थी।
मेरी पत्नी थी, मेरी भी संतान थी।
यदि मुझसे प्रेम है
यदि मुझसे श्रद्धा है।
तो उस अनदेखे पर ईमान लाओ।
मेरी शरण में नहीं, उसकी शरण में जाओ।
उसने हर युग में अपना 'संदेशवाहक' भेजा।
हमें अंधकार से निकालने,
उसके अंतिम 'संदेशवाहक' का
अनुशरण करो!

उसके बाद अब कोई नहीं आएगा।
कोई आसमानी किताब नहीं आएगी।
उसे समझो, उससे प्रेम करो।
सत्यम शरणम् गच्छामि!
परमेश्वरम शरणम् गच्छामि!!

वार्षिक प्रक्रिया

अमित कुमार सिंह, भारत

लेकर नयी उम्मीदें
नए–नए वादे
आ गया भई
नया साल
या यूँ कहें
बीत गया एक
और साल।

जिन ख्वाबों को
था हमने पाला
जिन पर अपनी उम्मीदों
का झूला हमने था डाला
उन पर पड़
गया था पाला
क्यूंकि अब ग़ुजर
गया था वक्त
और पीछे छूट
गया था
बीते साल की
उम्मीदों का
रसीला प्याला।

मित्रों! मानव मन की
मति तो देखो
फिर से कर रहा है ये
नव वर्ष का सत्कार
नयी–नयी योजनाओं का
करने लगा है
ये खाका भी तैयार।
ईश्वर इसकी इच्छा
पूरी करना
आज नहीं तो कल ही सही
इस बार नहीं तो अगले वर्ष ही सही
इसे भी हर्षित करना
कुछ नहीं तो
कल्पनाओं के सुंदर संसार में
इसे विचरण कराना
संतोष के परम सुख का
पाठ पढ़ाना
और उम्मीद पर दुनिया
है कायम का 'अमित' इसे
पुनः स्मरण कराना।

शब्दों की गति

आकांक्षा यादव, पोर्टब्लेयर,
अंडमान-निकोबार

काग़ज़ पर लिखे शब्द
कितने स्थिर से दिखते हैं
आड़ी-तिरछी लाइनों के बीच
सकुचाये-शर्माये से बैठे।

पर शब्द की नियति
स्थिरता में नहीं है
उसकी गति में है
और जीवंतता में है।

जीवंत होते शब्द
रचते हैं इक इतिहास
उनका भी और हमारा भी
आज का भी और कल का भी।
सभ्यता व संस्कृति की परछाइयों को
अपने में समेटते शब्द
सहते हैं क्रूर नियति को भी
खाक कर दिया जाता है उन्हें
यही प्रकृति की नियति।

कभी खत्म नहीं होते शब्द
खत्म होते हैं दस्तावेज़
और उनकी सूखती स्याहियाँ
पर शब्द अभी-भी जीवंत खड़े हैं।

फ़र्क

रमेश मित्तल, भारत

बूढ़े और
कमज़ोर हो चुके
कुछ पत्ते
जो झेल नहीं पाएं
हवा के धक्कों को
धरती पर लुढ़कते, गिरते-पड़ते
भाग रहे हैं इधर-उधर
जान बचाने अपनी...

सूखी काया, दरकते शरीर के साथ
अस्थिपिंजर बने पत्ते
ले रहे हैं अंतिम साँसें...

हवा भी कहाँ मानने वाली है
पहना है उसने क्रूरता का चोला
सुला रही है चुन-चुन कर
रेत के कफ़न में पत्तों को...

जो पत्ते लैस हैं
बरछी-भालों, ढालों से
वे ही झेल पा रहे हैं
हवा के आक्रमण को
नाच रहे हैं
हवा के थपेड़ों की ताल पर
बेपरवाह हो
अपने आसपास उजड़ी टहनियों से
बिलकुल हम इंसानों की ही तरह...

पत्ते तो बेज़ुबान हैं
लेकिन हम क्यों खामोश हैं
देखकर भी
अपने इर्द-गिर्द होते
अत्याचार को...

क्या कोई फ़र्क है
बेज़ुबान पत्तों और
हम इंसानों में...

जीवन के पल

पंकज त्रिवेदी, भारत

यह नश्वर देह
कब छूटेगा
किसको पता?

एक पल में
जीना
एक पल में
जूझना
जीना-जूझना
पल-पल में
मरना!

इंसान के रूप में
जन्म हुआ, यही सौभाग्य
आशा, इच्छा
संभावना, साहस
रोमांच, आश्चर्य
मासूमियत, डर
खुशी, ग़म
और
वास्तविकता...

जाना तो भले ही
किसी भी पल...

हर एक पल में
सबकुछ
अलग-अलग
स्पर्श, अहसास
वेदना, संवेदना
विसर्जन, नवसर्जन
तन्मयता से
जीना है हमें
भरसक...!

उपहार

रेखा मैत्र, अमेरिका

प्यार के उपहार में
आंसू जो मिले मुझे
देखो उन्हें पलकों में
अंजन सा अंज लिया!

इनमें तो जीवन के
सारे रंग घुले हैं
जब तुम्हारे प्यार की
किरणें पड़ीं इन पर
सारे इन्द्रधनुषी रंग
साथ झिलमिलाते हैं!

यूं तो सहेजा है
बड़े जतन से इन्हें
फिर भी एक सोच सा
घिरता है आस-पास
कहीं न ढलक जायं
मेरे अनजाने में!

खाली एक बात मेरा
कहने का मन था
भेंट अगर आंसू की
देनी थी मुझे जो
इनको सहेजने का
जतन तो सिखाना था!

नव आस

भगवत शरण श्रीवास्तव 'शरण',
केनेडा

यह नव वर्ष हो नव आस का
पर्यावरण हरित विकास का।
फैले प्रदूषण ना कहीं
हो जगत सभी समाज का।

नव वर्ष लाये हर ख़ुशी
हर प्राणी हो सद्भाव का।
हर देश में भ्रातृत्व हो
ये विश्व हो विश्वास का।

आतंक न फैले कहीं
हो वर्ष शांति सुहास का।
हर दिशा में सुख शांति हो
सब सौम्य हो मधुमास सा।

पिछड़े हुए हों प्रगति पर
हो हर्ष नवल विकास का।
करें ईश से यही प्रार्थना
ये वर्ष हो आभास का।

मण्डी बनाया विश्व को

हरिहर झा, आस्ट्रेलिया

लुढ़कता पत्थर शिखर से, क्यों हमें लुढ़का न देगा

क्रेन पर ऊँचा चढ़ा कर, चैन उसकी तोड़ दी
लोभ का दर्शन बना, मझधार नैया छोड़ दी
ऋण-यन्त्र से मन्दी बढ़ी, पोखर में डॉलर बह लिया
अर्थ की सरिता में, भोंडे नाच से मोहित किया।

बहकता उन्माद सिर पर क्यों हमें बहका न देगा
लुढ़कता पत्थर शिखर से, क्यों हमें लुढ़का न देगा।

सैज सिक्कों की बनी, सब बेवफ़ायें सो रही
मण्डी बनाया विश्व को, 'नीलाम' गुडविल हो रही
गर्मजोशी बिकी, सौदाई का जादू चल गया
शेयरों में आग धधकी, लहू कितना जल गया।

तड़पता सूरज दहक कर कहो क्यों झुलसा न देगा
लुढ़कता पत्थर शिखर से, क्यों हमें लुढ़का न देगा।

उपभोग की जय-जय हुई, बाजार घर में आ घुसे
व्यक्ति बना सामान' और रिश्तों में चकले जा घुसे
मोहक कला विज्ञापनों की, हर कोई इसमें फँस लिया
अभिसार में मीठा ज़हर, विषकन्या बन कर डँस लिया।

फैकी गुठली रस-निचुड़ी, कोई क्यों ठुकरा न देगा
लुढ़कता पत्थर शिखर से, क्यों हमें लुढ़का न देगा।

C. M. KAPUR
PROFESSIONAL CORPORATION
CHARTERED ACCOUNTANT

Chander M. Kapur, CMA, CA

2750 14th Avenue, Suite #201
Markham, Ontario
L3R 0B6

Tel: (905) 944-0370
Fax: (905) 944-0372
E-mail: cmkapur@rogers.com

UNITED OPTICAL

WE SPECIALIZE IN CONTACT LENSES

- **Eye exams**
- **Designer's frames**
- **Contact lenses**
- **Sunglasses**
- **Most Insurance plans accepted**

Call: RAJ
416-222-6002

Hours of Operation

Monday – Friday: 10:00 a.m. to 7:00 p.m.
Saturday: 10:00 a.m. to 5:00 p.m.

6351 Yonge Street, Toronto, M2M 3X7
(2 Blocks South of Steeles)

ग़ज़ल

हमारे घर पे ये किसकी उठी निगाह अभी
जवानी होने लगी है यहाँ तबाह अभी

कोई तो शाम हो ऐसी जो दिल करे रोशन
मेरी सहर तो मुकद्दर से है सियाह अभी

हज़ारों रंग बदलती है रात-दिन दुनिया
है कशमकश में पड़ी मेरे दिल की चाह अभी

तमाम रात बिताई है तारे गिन-गिन कर
ये सलवटें मेरी चादर की हैं गवाह अभी

ख़याल दिल में मुहब्बत का ला न ऐ नादाँ
ये समझा जाता है दुनिया में इक गुनाह अभी

हयात को भी मिला है कहाँ सुकूं 'देवी'
न चाहतों को मिली है कोई पनाह अभी

देवी नागरानी, अमेरिका

राजा का आसान डोला
शायद कोई सच बोला

इस बासंती बचपन में
किसने ये पतझर घोला?

दानिशवर ख़ामोश हुए
जब मजनूँ ने मुँह खोला

जम कर लड़ा लुटेरों से
जिसका ख़ाली था झोला

सारा जंगल सूखा है
तू इक चिंगारी तो ला

अमर ज्योति 'नदीम', भारत

रिश्तों में अपने यूँ तो न कोई खटास है
हैरत की बात है कि तू मुझसे उदास है

उसको धुएँ के जैसा उड़ाना है लाज़मी
तेरे हृदय में कोई अगरचे भड़ास है

सम्बन्ध मेरा आपसे नित ही मधुर रहे
ऐसा लगे कि जैसे फलों की मिठास है

फितरत है हर किसी की अलग जग में दोस्तो
कोई है मौजमस्ती में कोई उदास है

ऐ दोस्त, इस जहां में परिन्दा ही क्यों न हो
रोटी की भूख है उसे पानी की प्यास है

खाने को रोटी है न ही पीने को पानी है
समझो कि भूखे-प्यासे का जीवन खलास है

तारीफ़ 'प्राण' क्यों न करूँ उसके रूप की
माना कि उसके तन पे फटा सा लिबास है

प्राण शर्मा, यू.के

तीर खंजर की ना अब तलवार की बातें करें
जिन्दगी में आइये बस प्यार की बातें करें

टूटते रिश्तों के कारण जो बिखरता जा रहा
अब बचाने को उसी घर बार की बातें करें

थक चुके हैं हम बढ़ा कर यार दिल की दूरियां
छोड़ कर तकरार अब मनुहार की बातें करें

दौड़ते फिरते रहें पर ये ज़रूरी है कभी
बैठ कर कुछ गीत की झंकार की बातें करें

तितलियों की बात हो या फिर गुलों की बात हो
क्या ज़रूरी है कि हरदम खार की बातें करें

कोई समझा ही नहीं फितरत यहां इन्सान की
घाव जो देते वही उपचार की बातें करें

काश 'नीरज' हो हमारा भी जिगर इतना बड़ा
जेब खाली हो मगर सत्कार की बातें करें।

नीरज गोस्वामी, भारत

Personalized Investment Advice

For individual Investors

Member CIPF

Edward Jones®

Serving Individual Investors

Harvinder Anand
Investment Representative

- GICS
- Bonds
- Stocks
- Mutual Funds
- RRSPS RRIFS RESPS
- Life insurance
- Disability Insurance
- Critical Illness Insurance

INSURANCES AND ANNUITIES ARE OFFERED BY
EDWARD JONES INSURANCE AGENCY

Phone No: 905-472-8300 www. edwardjones.com

280 Elson St. Unit # 5, Markham, Ont. L3S 3L1

लघुकथा

प्रतिरोध

◆ *संजय कुमार*

कथा–पाठ करते–करते दिवाकर की भौंए तन गयी थीं। भोजपुर जिले के एक गांव में वाजिब मज़दूरी मांगने के सवाल पर किस तरह सामंतों ने दस दलित महिलाओं से सामूहिक बलात्कार किया, उनके लोगों को बेरहमी से मारा, इसी विषय पर लिखी अपनी हालिया कहानी का पाठ वे नगर हॉल में शहर के बुद्धिजीवियों के बीच कर रहे थे। बीच–बीच में बताते भी जाते कि किस तरह जब वे गांव में गये और उन दलितों के परिजनों से मिलकर घटना की जानकारी लेनी चाही तो दहशत के आगोश में समाये गांव के सामंतों ने दारोगा को खिला पिला कर उन्हें और उनके साथी बुद्धिजीवी मित्रों को रोकने का पूरा प्रयास किया था।

अचानक पाठ के बीच में ही दिवाकर का मोबाइल फोन बज उठा। माहौल में पैदा गरमाहाट ने दिवाकर के चेहरे पर शिकन ला दिया। झट बिना नम्बर देखे मोबाइल बंद कर दिया। अभी वे कहानी में लौट ही रहे थे कि दुबारा मोबाइल बज उठा। इस बार दिवाकर ने नम्बर देखा, लोगों से माफी मांगी और मोबाइल फोन रिसीव करते हुए किनारे गये। फोन घर से था। मामला गंभीर था। पत्नी बेहोश हो गई थी। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। किसी तरह से दिवाकर ने कहानी पूरी की। सुनाने के क्रम में स्वर में बदलाव आ गया था।

सुबह दिवाकर की पत्नी ने दिवाकर के पास जा कर बोली– मैं थाने रपट लिखवाने जा रही हूं। आपको चलना है या नहीं? दिवाकर की ओर से कोई जवाब नहीं पा कर वह घर से निकल ही रही थी कि दिवाकर ने आवाज दी ठहरो मैं आ रहा हूं। और दिवाकर अपनी पत्नी के संग थाने पहुंचा।

दिवाकर के घर पहुंचने के पहले रास्ते में जो भी पड़ोसी मिलता अजीब निगाहों से उन्हें देख रहा था। पत्नी घर आ गई थी। लेकिन बार–बार बेहोश हो जाती। घर में अजीब सी खामोशी की चादर चढ़ी हुई थी। दिवाकर को अब तक सारी बातें मालूम हो गई थी। छोटा भाई जो एक कंपनी में नौकरी करता था, उसने दिवाकर की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार कर दिया था। पूरे घर में सन्नाटा पसरा था। जब–जब पत्नी को होश आता और देवर द्वारा किये गये काम से आहत होकर वह बेहोश हो जाती। घटना के समय घर में मां–बाबूजी भी नहीं थे। दिवाकर खामोश था। पत्नी के पास बैठे दिवाकर के पास मां ने धीरे से आकर कहा, बाबूजी बुला रहे हैं। दिवाकर भारी मन से उठते हुए बाबूजी के पास गया। बाबूजी ने उसे समझाया– देखो, जो हो गया सो हो गया, बात को बढ़ने से रोकना होगा। अस्पताल में डॉक्टर को खिला पिला कर मामले को पुलिस तक जाने से रोक तो दिया है। ऐसा करो, सुबह की गाड़ी से बहू को लेकर उसके मायके पहुंचा दो। कुछ दिन वहां रहने के बाद जब सब सामान्य हो जायेगा तो ले आना। घर की बात है, घर तक ही रहे तो अच्छा है। दिवाकर ने 'हूं' में जवाब दिया और उठ कर चल दिया। उसके अंदर वह उबाल नहीं दिख रहा था, जो मुसहर टोले में एक दबंग द्वारा दलित महिला के साथ किए गए बलात्कार के कारण उसके अंदर दिख रहा था। तब दिवाकर ने ही मामले को

उठाया था और पूरे शहर में आंदोलन चला कर जिला प्रशासन पर दबाव बनाते हुए दबंग बलात्कारी को सींखचों के पीछे पहुंचाया था। दिवाकर की एक जुझारू बुद्धिजीवी नेता के रूप में पहचान बन गई थी।

अगले दिन अलसुबह ही पिताजी की बात मानते हुए दिवाकर ने पत्नी को ससुराल पहुंचा दिया। हमेशा दूसरों के हक के लिए आंदोलन की बात करने वाला दिवाकर, अब ज्यादातर खामोश ही रहता था। बात मुहल्ला से होते हुए कई लोगों तक पहुंच चुकी थी। दिवाकर महसूस करने लगा था कि मित्र और आसपास के लोग उसे अजीब निगाह से देखने लगे हैं। धीरे–धीरे लोग घटना को भुल रहे थे, लेकिन दिवाकर में बदलाव नहीं हो रहा था। वह और ज़्यादा ही खामोश रहने लगा था। दिन की बजाय वह देर शाम या रात में घर से निकलता था। शहर में अब दिवाकर की चर्चा नहीं होती। गोष्ठियों में भी वह नज़र नहीं आता।

अचानक एक दिन दिवाकर की पत्नी मायके से वापस घर आ गई। आते ही उसने दिवाकर से देवर के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट करने को कहा। दिवाकर ने बुझी निगाह से देखा और बिना उत्तर दिए घर से बाहर चला गया। रात में दिवाकर के घर लौटने के बाद फिर पत्नी ने कहा कि आपके भाई ने अपराध किया है और उसे उसकी सज़ा मिलनी ही चाहिये। दूसरों को आप हक दिलाते रहे हैं। आज आपको क्या हो गया है? दिवाकर की खामोशी नहीं टूटी।

दूसरे दिन सुबह दिवाकर की पत्नी ने दिवाकर के पास जा कर बोली– मैं थाने रपट लिखवाने जा रही हूं। आपको चलना है या नहीं? दिवाकर की ओर से कोई जवाब नहीं पा कर वह घर से निकल ही रही थी कि दिवाकर ने आवाज़ दी ठहरो मैं आ रहा हूं। और दिवाकर अपनी पत्नी के संग थाने पहुंचा।

◆◆◆

अनहोनी

◆ *दीपक 'मशाल', यू.के.*

बड़ी अनहोनी हो गई। नेता जी को हमलावरों ने घायल कर दिया। सुना है वो सुबह–सुबह मंदिर जा रहे थे लेकिन रास्ते में ही मोटरसाइकिल सवार दो अज्ञात हमलावरों ने अचानक उनपर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं। उनके बहते खून ने समर्थकों का खून खौला दिया। देखते ही देखते उनके चाहने वालों का हुजूम जमा हो गया।

थोड़ी देर में ही नेता ऑपरेशन थियेटर में थे और बाहर समर्थकों के सब्र का बाँध टूट रहा था। किसी ने कहा– 'इस सब में पुलिस की मिलीभगत है।'

फिर क्या था। 200 लोगों की भीड़ थाने की तरफ बढ़ चली। लाठी, बल्लम, हॉकी स्टिक, मिट्टी का तेल, पेट्रोल सब जाने कहाँ से प्रकट होते चले गए। रास्ते में जो भी वाहन मिलता उसमे आग लगा दी जाती। दुकानें बंद करा दी गयीं। जो नहीं हुईं वो लूट ली गईं।

इस सब से बेखबर वो आज भी थाने के पास वाले चौराहे पर अपना रिक्शा लिए खड़ा था, जो उसके पास तो था पर उसका नहीं था। हाँ किराए पर रिक्शा लिया था उसने। आज साप्ताहिक बाज़ार का दिन था, उसे उम्मीद थी कि कम से कम आज तो रिक्शे के किराए के अलावा कुछ पैसे बचेंगे जिससे उसके तीनों बच्चे भर पेट खाना खा सकेंगे और कुछ और बच गए तो बुखार में तपती बीवी को दवा भी ला देगा।

दूर से आती भीड़ को उसने देखा तो लेकिन उसके मूड का अंदाजा ना लगा पाया। या शायद सोचा होगा कि उस गरीब से उनकी क्या दुश्मनी?

पर जब तक वो कुछ समझ सकता रिक्शा पेट्रोल से भीग चुका था। एक जलती तीली ने पल भर में बच्चों के निवाले और उसकी बीवी की दवा जला डाली। अगले दिन नेता जी की हालत खतरे से बाहर थी। हमलावर पकड़े गए। नेता जी ने समर्थकों का उनके प्रति अगाध प्रेम दर्शाने के लिए आभार प्रकट किया।

रिक्शावाले के घर का दरवाज़ा सूरज के आसमान चढ़ने तक नहीं खुला। अनहोनी की आशंका से पड़ोसियों ने अभी–अभी पुलिस को फोन किया है।

◆◆◆

हीरक कणियाँ

◆ *शशि पाधा, यू.एस.ए.*

अपने लिए नए टाप्स खरीदने गहनों की दुकान पर गई थी मैं। वैसे मेरे पास कई डिज़ायनों के टाप्स थे, लेकिन फिर भी मन में आया कि कुछ नया देखूँ, खरीदूँ। नीले मखमल के डिब्बे में रखे भिन्न-भिन्न आकारों वाले टाप्स गहरे नीले आकाश में झिलमिलाते तारों के समान मन को आकर्षित कर रहे थे, लेकिन किसी एक पर भी मन नहीं ठहर पाया था। अब मैं अनमने भाव से पास के बैंच पर बैठे एक परिवार की बातें सुनने लगी।

एक अठारह-उन्नीस वर्ष की लड़की अपने माँ-बाप के बीच बैठी आभूषण देख रही थी। जिस उत्साह से वह सैट चुन रही थी, लग रहा था कि अपनी शादी के लिए ही वह आभूषणों का चुनाव कर रही थी। आखिर जो सैट उसे पसन्द आया उसने उसे बड़ी उमंग से अपने गले के सामने रखा और सामने लगे दर्पण में अपनी छवि निहारने लगी। उस समय उसके मुख पर प्रसन्नता, लाज और उमंग के कई भाव झलक रहे थे। बड़े चाव से उसने वह सैट अपने पिता के सामने रख दिया। उसके पिता ने उलट-पुलट कर उस सैट पर लगे मूल्य के टैग को उत्सुकता से पढ़ा और प्रश्न सूचक दृष्टि से अपनी पत्नी की ओर देखा। दुकानदार ने परिस्थिति भाँप ली और झट से अलमारी से कुछ कम मूल्य के नये-नये आभूषण दिखाने लगा। मैंने देखा कि लड़की उन्हें अनमनी नज़र से देखती और काउन्टर पर रख देती। बार-बार उसकी अँगुलियाँ उसी सैट को छू रहीं थीं। अब मुझे तो कुछ खरीदना नहीं था, मैं भी मन ही मन उसके साथ आभूषण चुनने में लग गई।

मैंने देखा कि लड़की के पिता को काफ़ी झुंझलाहट हो रही थी। वह धीरे से पत्नी से बोले, 'यह बहुत मंहगा है, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं। और भी तो खर्चे करने हैं।' और ऐसा कह कर वह उठ गए और दुकान की सीढ़ियां उतरने लगे। उन्हें जाते देख वह लड़की भी निरुत्साहित सी पीछे- पीछे चल पड़ी। अब मेरा मन भी उदास था। मैं भी घर जाने को हुई कि अचानक मैंने देखा कि उस लड़की की माँ ने अपनी कलाईयों से कंगन खोले और काउंटर पर रखते हुए वह दुकानदार से बोली, 'यह रख लीजिए और यह सेट हमें बाँध दीजिए। बाकी का हिसाब-किताब हम बाद में कर लेंगे।' और वह बड़े संतोष और प्रसन्नता से आभूषण का सैट लेकर चली गई।

मैं अवाक सी अपनी कुर्सी पर बैठी रही। मेरे आँखों से गंगा-यमुना की अविरल धारा बहने लगी। दुकानदार कंगन तोलने लगा और मैं मन ही मन माँ की ममता की अमूल्य हीरक कणियाँ सहेजे घर लौट आई। ◆◆◆

वास्तविक अभिषेक

◆ *प्रेम नारायण गुप्ता*

एकनाथ महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत हुए हैं। एक बार वे भी कुछ भक्तों के साथ शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए गोदावरी का पवित्र जल लेने के लिए गए। जल लेकर वापस आ रहे थे तो रास्ते में उन्होंने देखा कि भयंकर गर्मी और प्यास के मारे एक गधा रेत पर पड़ा तड़प रहा है। गधे के प्राण निकलने को हो रहे थे।

एकनाथ ने आव देखा न ताव झटपट सारा पवित्र जल गधे के मुख में डाल दिया। साथ चल रहे तीर्थयात्रियों ने एकनाथ से कहा कि तुमने सारा पुण्य नष्ट कर दिया। गधा जल पीकर कुछ स्वस्थ हुआ और उठकर चल पड़ा। यह सब देखकर एकनाथ के आँखें बंद करके शिव का ध्यान किया और मन ही मन उनका धन्यवाद किया कि आपने रास्ते में ही जल स्वीकार करके मेरा बोझ कम कर दिया। वास्तव में प्राणिमात्र की सेवा में ही सच्ची भक्ति और अभिषेक है। ◆◆◆

पुस्तक समीक्षा

ईस्ट इंडिया कम्पनी का सफल प्रयोग

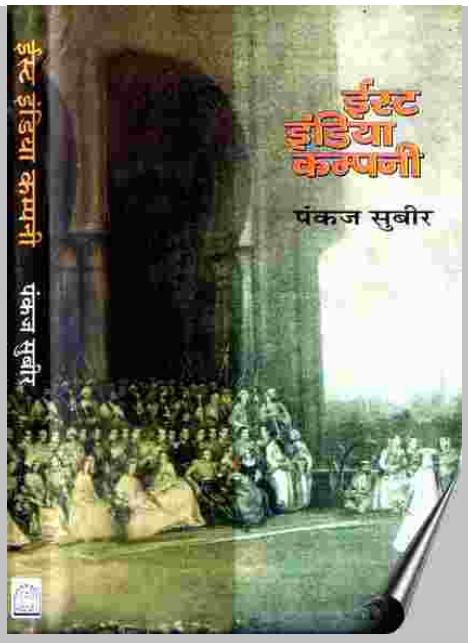

ईस्ट इंडिया कम्पनी (कहानी संग्रह)
लेखक : पंकज सुबीर
प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ

डॉ. पुष्पा दुबे

भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित एवं नवलेखन पुरस्कार के लिये अनुशंसित रचना ईस्ट इंडिया कम्पनी युवा कवि एवं कथाकार पंकज सुबीर का पहला कहानी संग्रह है। ये कथा संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ के नवलेखन पुरस्कार के लिये शीर्ष आलोचक डॉ. नामवर सिंह की अध्यक्षता में बनी समिति ने अन्य दो संग्रहों के साथ वर्ष २००८-२००९ में अनुशंसित किया था। कहानी विधा में ये कहानी संग्रह बाद में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित होकर आया। इस वर्ष २००९-२०१० में पंकज सुबीर को उनके उपन्यास 'ये वो सहर तो नहीं' के लिये भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की जा चुकी है। कहानी संग्रह इस मायने में महत्वपूर्ण है कि ये लेखक की प्रतिबद्धता और सरोकारों को बताता है। और लेखकीय कर्म के प्रति उसका समर्पण भी। लगातार दो वर्ष भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार की उस समिति की नज़रों में चढ़ना जिसके अध्यक्ष डॉ. नामवर सिंह जैसे आलोचक हों, लेखक को और उसके लेखन को विशिष्ट बना देता है। साथ ही लेखक की उस जिद को भी जिसने पिछले वर्ष की अनुशंसा को अगले वर्ष पुरस्कार में परिवर्तित कर दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी भले ही लेखक का पहला संग्रह हो लेकिन कथा जगत में लेखक ने युवा कलम के रूप में अपनी पहचान पिछले चार पाँच सालों में स्थापित कर ली है।

आज के भौतिकवादी समय में जहाँ हर मनुष्य चाहे वह पत्रकार हो, समाजसेवी हो, राजनीतिज्ञ हो, प्रशासकीय अफसर हो, केवल अपने लिए अधिकाधिक धन, यश और उच्च पद प्राप्त करना चाहता है फिर उसके लिए रास्ता कोई भी क्यों न अपनाना पड़े। ऐसी मूल्यहीनता की स्थिति में रचनाकार का दायित्व कहीं अधिक बढ़ जाता है। पंकज सुबीर समय के इस दबाव को और प्रतिबद्धता को गहरेपन से महसूस करते हैं। इसलिए उनके इस संग्रह की कहानियाँ समाज में व्याप्त विद्रूपता, विसंगतियों को एवं समस्याओं को बड़ी बारीकी से अभिव्यक्त करने में सफल रही हैं। पूरे कहानी संग्रह की जो सबसे बड़ी विशेषता है वो ये कि कहानीकार ने अपने आसपास की हर विसंगति पर कलम चलाई है। हर समस्या को कहानी में ढाला है, फिर चाहे वो सांप्रदायिकता हो, साहित्य के क्षेत्र की राजनीति हो, पत्रकारिता का पतन हो या फिर पुरुष समलैंगिकता जैसा अछूता विषय हो। लेखक हर समस्या की पड़ताल करना चाहता है। और कहानियों में जो आक्रोश दिखाई देता है उससे पता चलता है कि लेखक किसी को भी माफ करने के लिये तैयार नहीं है। वो अपने आक्रोश को न केवल अभिव्यक्त कर रहा है बल्कि उसके लिये दोषियों को शब्दों के कटघरे में खड़ा कर रहा है।

संग्रह की पहली कहानी 'कुफ्र' समाज की इसी विद्रूपता को रेखांकित करती है। बाजारवाद और अत्यधिक वैभव विलास की चाह ने पूँजीपतियों की बल्कि हम सभी की संवेदना को भोथरा कर दिया है। हम किसी की गरीबी को उसकी भूख को नहीं देख पाते या नहीं देखने का नाटक करते हैं और मिल बन्द होने की स्थिति में इसका ठीकरा भी उन्हीं के सिर फोड़ देते हैं। गरीब मज़दूर यदि मुसलमान है तो उसे तो नौकरी पाने का अधिकार ही नहीं, जफर नाम सुनकर ही माथे

पर शिकन आ जाती है। मैं मुसलमान न होकर कोई जानवर हूँ आदमी ने अपनी बेईमानी और कमीनेपन को छुपाने के लिए धर्म नाम का शब्द गढ़ लिया है। क्या यह कमीनापन कुफ्र नहीं? क्या हर मुसलमान आतंकवादी और अपराधी है? जाति सम्प्रदाय के नाम पर किसी को जीविका न देना उसे भूखा मरने के लिए छोड़ देना और स्टील की लटकन पर तेल और पैसा चढ़ाना धर्म है? समाज की इन्हीं विसंगतियों, समस्याओं और हमारी संकुचित सोच की ओर ध्यान आकृष्ट करती है यह कहानी।

कहानी का एक पात्र कहता है 'जब पेट में रोटियां छम-छम करके नाच रही हों, तब होता है आदमी हिन्दू या मुसलमान, वरना तो हम एक ही ज़ात के हैं, भुखमरों की ज़ात के। हिन्दू या मुसलमान होने का रईसी शौक पालना हमारी औकात से बाहर की चीज हैं।'

'घेराव' कहानी राजनीति, प्रशासन, पुलिस और पत्रकारिता सभी पर प्रश्न चिह्न लगाती है। धर्म के नाम पर राजनीति करना, आम जनता को भड़काना, मूल प्रश्नों और समस्याओं से ध्यान हटाकर साम्प्रदायिक तनाव पैदा करना, घेराव के लिए प्रेरित करना, फिर मामले को शान्त करने का नाटक आदि पाखण्ड को व्यक्त करती हैं यह कहानियाँ। गरीब की बेटी को आये दिन गुण्डों द्वारा छेड़ना हमें दिखाई नहीं देता लेकिन गैर सम्प्रदाय के लड़के का प्रेम या स्पर्श हमारी 'जातीय चेतना'? जागृत कर देता है, हम मरने मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। पत्रकारों के लिए 'सनसनीखेज सच्चाई' बन जाती है और वह कुछ होने की प्रतीक्षा करते हैं। लेखक की नजर समाज के प्रत्येक स्तर और वर्ग में व्याप्त बुराइयों पर है। इस कहानी में भी लेखक ने सांप्रदायिकता को कटघरे में खड़ा रखकर ही कथा का ताना-बाना रचा है 'जैसे-जैसे दिन चढ़ने लगा लोग धीरे-धीरे लोगों से हिंदू और मुसलमानों में बदलने लगे। पुलिस इन्हें वापस लोगों में बदलने के प्रयास में जुट गई, तो पत्रकार लोगों में आ रहे बदलाव को सुर्खियों में ढालने में जुट गए।' घेराव में वास्तव में लेखक ने वर्तमान पत्रकारिता की प्रणाली का ही घेराव किया है। कहीं-कहीं ऐसा लगता है कि लेखक के पत्रकार होने के कारण कुछ घटनाएँ आत्मकथ्य की तरह लगती हैं। पत्रकारिता में सनसनीखेज तत्वों की तलाश करना और यदि न मिलें तो उनको बनाना, ये आज के पत्रकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है, चुनौती जो उसे रोज़ मिलती है अपने ही प्रधान कार्यालय से।

'आंसरिंग मशीन' में एक बार फिर से वही गठजोड़ रेखांकित किया गया है जो हर समस्या के मूल में है। यहाँ पर भी प्रशासन और लेखक का गठजोड़ है जो पुरस्कारों और शासकीय पदों की छीना-छपटी के सतह से नीचे के कीचड़ को उजागर करता हुआ गुज़रता है। लेखक की कलम को किस प्रकार से खरीदा जाता है और बाद में उसको उपकृत किया जाता है इसकी पूरी पड़ताल ये कहानी करती है। कहानी में मेटामार्फोसिस के द्वारा कथा नायक की मनोदशा को दिखाया गया है। हालाँकि ये प्रयोग नया नहीं है तथा कई बार पहले भी कई कहानीकार इसका उपयोग कर चुके हैं। कहीं-कहीं पर बहुत ही कड़वा सच उद्घाटित करने में लेखक की कलम कुछ अधिक तीखी हो गई है जैसे 'कुछ देर पहले साहित्य परिषद के सभागृह में थिरक रहा आदर्शवाद यहां आईजी द्वारा सर्व की जा रही शराब के ग्लासों में शीर्षासन लगाए नज़र आ रहा था और इस सब में उस आदर्शवाद की वह उजली सफेद धोती जो कुछ देर पूर्व ही साहित्य परिषद के सभागृह में डिटरजेंट पावडर का विज्ञापन सा कर रही थी, वह उलट कर शराब में तैर रही थी, और उसके पीछे का असली आदर्शवाद साफ नज़र आ रहा था।'

कहानी उन सभी बिन्दुओं को उजागर करने में सफल रही है जिनके लिये इसे लिखा गया है। कहानी के नायक सुदीप का पहले इन सबसे घिन करना तथा बाद में आंसरिंग मशीन बन जाना। कहानी में साहित्य जगत को भी माफ नहीं किया गया है 'तो तुमसे कहा किसने है कि पूरी दुनिया क्या कह रही है यह देखते फिरो। तुम लेखक बनने निकले हो या समाज सुधारक बनने।' कहानी का शीर्षक इन पंक्तियों से पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है 'व्यवस्था ने जगह-जगह भारद्वाज जी जैसी कम्प्यूटराइज्ड ऑन्सरिंग मशीनें लगा दी हैं। कहीं भी कोई भी प्रश्न उठता है तो व्यवस्था कि जगह ये मशीनें जवाब देती हैं, चूँकि मशीनें व्यवस्था ने लगाई हैं इसलिए उत्तर वही आता है जो व्यवस्था ने इसमें फीड किया है।'

संग्रह की कहानी 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' दोहरे स्तर पर अर्थ सम्प्रेषित करती है। प्रथम अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के (व्यापारिक कम्पनी) के माध्यम से भारत में प्रवेश किया और धीरे-धीरे पूरे भारत पर अपना अधिकार कर लिया। यहाँ लेखक ने पूरा वृतान्त बताना अवश्यक नहीं समझा लेकिन संकेत दे दिया कि अंग्रेजों ने भारत पर आक्रमण करके उसे गुलाम नहीं बनाया था बल्कि छल से देश को हड़प लिया था। एक दूसरे स्तर पर कहानी मुनष्य की सहज मानवीय वृत्ति को उद्घाटित करती है, ट्रेन में यात्रा कर रहे पति-पत्नी, सरदार व सरदारनी जी की सीट पर धीरे-धीरे जिस तरह अधिकार कर लेते हैं। मुनष्य में स्व के लिए सुविधा जुटाने में छल करना उसकी सहज और मानवीय कमजोरी है। ये कहानी आनंद की कहानी है। मानव मन की उस एक गंदगी को लेखक ने व्यंग्य की भाषा में इतना सजीव चित्रित किया है कि ऐसा लगता है मानो पाठक भी उसी ट्रेन में बैठा है जिसमें कथा नायक बैठा है। शब्द चित्र इस प्रकार खींचे गये हैं कि पूरा ट्रेन का डब्बा पाठक की आंखों के सामने सजीव हो जाता है जहाँ पर सरदार जी और सरदारनी हैं, वे पति पत्नी हैं जो सरदार जी और सरदारनी की सीट पर आंखें जमाये हैं और एक वो लड़की है जो बेफिजूल ही कथा नायक से शरमा रही है। कथा में बहुत ही सुंदर प्रयोग किये गये हैं। जैसे 'सरदारनी के उठते ही खड़े पति-पत्नी के बीच कुछ ऐसा हुआ जिसे फिल्मी भाषा में आंखों ही आंखों में इशारा हो गया कहा जा सकता है। इस बात को केवल उसी ने देखा कि खड़े पति ने भोंहों को ऊपर उचकाकर गर्दन को सामने खींच कर सरदारनी के बैठ जाने से

बने रिक्त स्थान की ओर इशारा किया, और जवाब में खड़ी पत्नी ने गिरगिट की तरह तीन बार स्वीकृति में सिर हिलाकर पति के हाथों से बैग ले लिया।' अंत में दोनों पति–पत्नी जिस प्रकार से सरदार दंपत्ति को सीट से हटाकर वहाँ काबिज़ हो जाते हैं और यूनियन जैक फहरा जाता है, वहाँ कहानी अपने चरम पर है।

मनुष्य ने जितनी तेजी से विकास किया है, उतना ही वह व्यस्त होते गया है लेकिन अन्दर से अकेला और कुण्ठित। आधुनिकता के रुझान ने उसे यांत्रिक बना दिया 'शायद जोशी' इसी आधुनिकता, यांत्रिकता और चुकी हुई जिन्दगी को उद्घाटित करती है। कहानी जटिल मनोवैज्ञानिक कहानी है, हालाँकि लेखक जितनी सफलता के साथ सहज कहानियाँ लिखते हैं उतने सहज मनोवैज्ञानिक कहानियों में दिखाई नहीं देते, फिर भी भाषा के प्रयोग करने में वे नहीं चूकते हैं 'मूर्तियाँ वास्तव में व्यवस्था द्वारा पैदा किया गया एक भ्रम हैं, अगर ये भ्रम ही न हो तो फिर तो हर कोई अपने सवाल लेकर व्यवस्था के पास ही चल पड़ेगा। व्यवस्था के पास कहाँ इतना समय है कि वो हर किसी की सुने। इसीलिए उसने मूर्तियाँ लगवा दी हैं। अलग–अलग मंदिरों में अलग–अलग मूर्तियाँ, आदमी एक तरह की मूर्ति से निराश होता है तो दूसरी के पास दौड़ता है, दूसरी से तीसरी, तीसरी से चौथी। दौड़ता रहता है, दौड़ता ही रहता है और फिर मर जाता है, और इसी बीच अगर कहीं व्यवस्था को लगता है कि आदमी तो मूर्तियों से हार कर अब उसकी तरफ देख रहा है तो व्यवस्था फौरन ही मूर्तियों को दूध पिलाने का चमत्कार रच देती है। के देख लो ये मूर्तियाँ भले ही पत्थर की हैं पर इनमें कुछ न कुछ तो है, इसलिये लगे रहो कभी न कभी कुछ न कुछ तो हो ही जाएगा।'

कहानी में एक पुराने फिल्मी गीत को जिस प्रकार से कथ्य में गूँथा है उसने इस कहानी को बोझिल होने से बचा लिया है। कहानी में साथ–साथ चलता गीत कहानी को रोचक बनाये रखता है। और अंत में नायक द्वारा शायद जोशी से पूछा जाना 'आप मर जाने के बारे में क्यों नहीं सोचते, आपके लिए अच्छा रहेगा।' शायद जोशी ने पलटकर देखा। शायद जोशी की आंखों में खौफ नज़र आ रहा था चेहरा पीला पड़ गया था।' कहानी में आये शायद जोशी के पात्र के साथ कथा नायक का उलझाव भरा संबंध, जिसमें उसे इस जोशी का नाम तक पता नहीं हैं और उसे शायद जोशी कह कर काम चलाना पड़ रहा है, आज की भागदौड़ भरी जिंदगी का अच्छा चित्रण है। जहाँ दिन भर की व्यस्तता हमें लोगों को याद रखने तक का समय नहीं देती।

स्वच्छन्द यौन संबंधों को भारत में कभी नहीं स्वीकारा गया लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तेज़ी से फैल रहा है। भारत भी अछूता नहीं है। आधुनिकता के नाम पर स्वच्छन्द यौन संबंध और समलैंगिक संबंधों की खुली छूट ने युवा पीढ़ी को अंधेरे में ढकेल दिया है। कुण्ठित युवा पीढ़ी अपनी समस्याओं का समाधान, तनाव से मुक्ति स्वच्छन्द यौन संबंधों में पा रही है। इधर पुरुषों में समलैंगिक यौन संबंधों की ओर रुझान बढ़ रहा है। लेखक के 'अंधेरे का गणित' कहानी में इसी समस्या को रेखांकित किया है। कथानायक अपने अंधेरे के सवाल कस्बे के अपने मित्र के साथ ढूंढता है किन्तु मुम्बई आने के बाद परेशान है, उजालों से डरता है। उसके अंधेरे अपने सन्नाटों के साथ कहीं भटक जायेंगे और आने वाले उजाले अपनी प्यास की उदासियाँ लेकर खामोशियों की चादर के सिरहाने बैठै सिसकते नजर आयेंगे इसलिए 'तन्मय' के रूप में अपने अंधेरे के सवाल का हल ढूँढ़ लेता है। पूरी कहानी में जो बात सबसे प्रभावी तरीके से दिखाई देती है वो ये है कि कहानी में समलैंगिकता जैसा संवेदनशील विषय होने के बाद भी लेखक ने बहुत सहजता के साथ प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग कर कहानी को निभाया है। जैसे कथा नायक जो फिल्म अभिनेता शाहरुख खान से जुड़ाव महसूस करता है उसकी मनोदशा को कुछ यूं दर्शाया है 'फिल्म में जब खान की रोमरहित देह अनावरित होती तो उसे लगता कि खान उसके अंधेरों से उलझ गया है, खान का साया उसके अंधेरों में समाता जा रहा है, अंधेरे बर्फ की चिंगारियों से दहकने लगे हैं, वही तूफान, वही बवंडर, फिर अचानक खान का साया उसके अंधेरों में पिघल जाता।' कहानी का शिल्प और इसकी शैली कथा संग्रह की श्रेष्ठ कहानी इसे बना देती है। पूरी कहानी इतनी सहजता के साथ गुज़र जाती है कि पता ही नहीं चलता कि ये तो एक विवादास्पद विषय पर लिखी हुई कहानी है।

दैहिक स्वतंत्रता को लेकर ही एक और कहानी भी संग्रह में है 'घुग्घू'। ये कहानी दैहिक स्त्री स्वतंत्रता की बात करती है। संस्कारों और मान्यताओं में उलझी हुई कथा नायिका के सामने एक तरफ अपने पारिवारिक संस्कार हैं तो दूसरी तरफ शहर में आने के बाद मिल रहे दैहिक आमंत्रण हैं। वो इन सबमें डूबना तो चाहती है लेकिन हर बार उसकी पृष्ठभूमि उसे रोक देती है। यहाँ पर घुग्घू को प्रतीक बनाया गया है। घुग्घू वो कीड़ा होता है जो धूल में शंकू के आकार का छेद बना कर रहता है और बच्चे उसे खेल–खेल में तिनका डाल कर निकालने का प्रयास करते हैं। उसी कीड़े को प्रतीक बना कर कहानी लिखी तो है लेकिन कहानी का अंत ठीक वैसा ही हो जाता है जैसा कि पाठक सोच रहा होता है। हालाँकि शिल्पगत प्रयोग इस कहानी में भी हैं लेकिन ये प्रयोग भी कहानी को कमज़ोर होने से बचा नहीं पाये हैं। अंत में जब नायिका अपने सारे बंधन तोड़ कर दैहिक आनंद को भोग लेती है तो पाठक सोचता है कि मुझे पता है ये ही तो होना था। हाँ कहानी का अंत भाषाई प्रयोग के कारण उल्लेखनीय बन पड़ा है 'अचानक वो लौह आवरण का शंकू चटख कर टुकड़े–टुकड़े हो गया, शंकू के टूटते ही उसके चारों ओर तो दूधिया और ठंडी रोशनी लहराने लगी, अब ममता दी की आवाज़ आना भी बंद हो गई थी। उसे लगा कि शंकू के बाहर की दुनिया उतनी बुरी नहीं है जितना वो समझती थी।'

सुबीर, आधुनिक जीवन की समस्याओं के साथ ही ग्रामीण अंचल के सरल अल्हड़

जीवन को भी बड़ी सरसता एवं मार्मिकता से रूपांकित करते हैं। हीरामन के आमगाँव का सरल जीवन, सच्ची मित्रता, ज़मींदार और नौकरों में आत्मीयता, महानगरीय जीवन की यांत्रिकता पर भारी पड़ता है। पाप और पुण्य पर मित्रता का भारी पड़ना, मित्र के प्रति कर्तव्य का निर्वाह, हवेली के राज़ को राज़ रखना, कहानीकार का ऐसे पात्र को 'रचना' जहाँ सुखद अनुभूति देता है वहीं एक अभाव भी लगता है। लेखक ने हीरामन की मन:स्थिति को बखूबी संप्रेषित किया है लेकिन बलराम पटेल की पत्नी की मन:स्थिति को रेखाँकित करना भूल गया है। पति के रूप में लिया गया निर्णय (अन्य पुरुष के पास सन्तान हेतु जाना) पत्नी के अधिकारों का हनन नहीं है? क्या पत्नी की इच्छा या अनिच्छा के कोई मायने नहीं है? कहानी में एक और कमज़ोर बिन्दु ये है कि घटना जो एक बार होती है वही फिर से दोहराई जाती है। जबकि घटना को लेकर अनिच्छा और सब प्रकार की बातें पहली बार में विस्तार से कही गई हैं ऐसे में हीरामन का उसी सब के लिये फिर से तैयार हो जाना कहीं असहज लगता है। मगर कहानी अंत में ठीक जगह पर आकर समाप्त हो जाती है जब हीरामन अपने अंश से पैदा हुए छोटे ठाकुर को भींच कर रो पड़ता है 'जैसे ही उसने हीरामन के हाथ से संदूकची ली, हीरामन ने उसे गले से लगाया और फूट-फूट कर रो पड़ा, बलराम पटेल उसी प्रकार आंखें बंद किए चुपचाप लेटे रहे मानो उनको न कुछ सुनाई दे रहा है, न दिखाई। बड़ी हवेली और हीरामन दोनों अपने-अपने प्रायश्चित में लगे थे, और बीच में भौंचक सा खड़ा जनार्दन कभी अपने कंधे से लगकर रोते हीरामन को देख रहा था, कभी पीठ किए हुए लेटे बलराम पटेल को।'

'एक सीप में तीन लड़कियाँ रहती थी' तथा 'और कहानी मरती है' दोनों कहानियाँ कथ्य और शिल्प के धरातल पर भिन्न हैं। एक सीप में तीन लड़कियाँ रहतीं थीं कहानी प्रतीकात्मक है। बड़ी लड़की जो हरी है- पृथ्वी और हरियाली का प्रतीक है, उसके पास पंख नहीं हैं। नीली लड़की के पास स्वप्न हैं ओर पंख भी हैं। पीली लड़की ज़र्द पीली है यह अपने सपने भी नहीं देख सकती अर्थात दृष्टि नही है। प्रसाद की 'कामायनी' का समन्वय- इच्छा, क्रिया और ज्ञान न होने से तीनों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। जीवन में इच्छा या कामनाएँ और उन्हें पूरा करने के लिए दृष्टि (ज्ञान) व कर्म आवश्यक है। ये कहानी गूढ़ शिल्प और जटिल कथ्य के कारण कुछ उलझाती हुई चलती है, लेकिन फिर भी तीनों लड़कियों की अलग अलग कहानियों में पाठक की रोचकता बनी रहती है। तीनों लड़कियों के रंगों के रूप में लेखक ने कई प्रयोग किये हैं। हरी, नीली और पीली लड़कियों के रूप में कई सारी बातें कही गई हैं। तीनों लड़कियों को लेकर ये कहानी तीन खंडों में चलती है और शिल्प तथा भाषा के अनूठे प्रयोग प्रस्तुत करती है जैसे 'उसके सपने भी हरे थे, दूब की तरह हरे। चूंकि हरे सपने थे इसलिए हमेशा बूंदों से भरे रहना चाहते थे, बरसात की सौंधी सौंधी बूंदों से भरे रहना। हरे रंग के हरियाए रहने के लिए बूंदों की हमेशा ज़रूरत रहती है। हरी लड़की के पंख भी नहीं थे कि वो उड़कर बादलों के पास पहुंच जाए और अपने हिस्से की बूंदें ले आए। हरे रंग की सबसे बड़ी कमी यही है कि उसे पृथ्वी की तरह बिछे रहना पड़ता है, और इंतजार करते रहना पड़ता है अपने हिस्से की बूंदों का। आजकल इसीलिए कोई भी हरा नहीं होना चाहता।'

भाषाई प्रयोग पूरी की पूरी कहानी में जगह-जगह हैं- 'बाहर निकल कर धुंआ अमलतास और गेंदे के फूलों, पांखर कुसुम की पंखुरियों और तितलियों के परों से लिपटा रहा। फिर धीरे-धीरे वहाँ से भी झर गया उसी तरह जिस तरह अमलतास के फूल झरे, गेंदे के फूल झरे, पांखर कुसुम झरे और तितलियों के पर।'

साहित्य की दुनिया को लेखक ने एक बार फिर से कटघरे में खड़ा करने की कोशिश की है 'ये कहानी नहीं है' में। ये कहानी साहित्य के क्षेत्र में अंदर घुस कर नज़र दौड़ाती है और फिर जैसा जो कुछ देखती है उसे अपने तरीके से लिख देती है। कहानी आत्म कथ्य की तरह लगती है और इसीलिये शायद लेखक ने उसका शीर्षक भी वही रखा है। कहानी की शुरूआत में ही समझ में आ जाता है कि कहानी किस दिशा में जायेगी- 'इस रुकने के पीछे मेरा वास्तविक मकसद है महिला और पुरुष के घर से दो घर छोड़कर रहने वाले महापुरुष के चरणों को चाट कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाना। क्योंकि ऐसा करे हुए मुझे काफी समय हो गया है। वैसे तो महापुरुष मुझे अच्छी तरह से जानते हैं किंतु महापुरुषों की याददाश्त ज़रा कमज़ोर होती है, अगर बहुत दिनों तक कोई तलवे चाट के नहीं जाए तो ये उसको भूल भी जाते हैं।'

कहानी में एक महापुरुष पात्र है एक पुरुष है और एक स्त्री है इसके अलावा एक कथा नायक है जिसका अपने बारे में कहना है- 'अब बाकी बचा मैं, तो मैं ही कौन सा पुरुष हूँ, मैं तो मैं हूँ, ना स्त्री ना पुरुष केवल मैं।' कहानी में व्यंग्य गुँथा हुआ ही चलता है जो पाठक को गुदगुदाता रहता है 'ये अच्छा तरीका है किसी बड़े साहित्यकार को फोकट में बुलाने का? डेढ़ सौ रुपल्ली का शाल और पांच रुपए का श्रीफल देकर सम्मान कर दो, हमारे देश में शाल केवल दो ही को उड़ाई जाती है या तो शव को या साहित्यकार को। दोनों ही मामलों में हम एक शाल फैंककर दोनों के प्रति अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं।' जैसे संवाद साहित्यकार की पीड़ा को व्यक्त करते हुए गुज़रते रहते हैं। कहानी में किस्सागो शैली को अपनाकर लेखक ने इस कहानी को असहज होने से बचा लिया है। और फिर व्यंग्य की भाषा ने उस शैली को साध दिया है।

लेखक के मन में सांप्रदायिकता को लेकर शायद बहुत क्षोभ है इसीलिये कथा संग्रह की कई कहानियों में इसी को विषय बना कर उसके खिलाफ लेखक ने मोर्चा खोला है 'रामभरोस हाली का मरना' ये कहानी भी उसी विषय पर है। लेकिन इस कहानी में किस्सागो शैली में एक दंगे के होने के पीछे की कहानी को लेखक ने उजागर करने का प्रयास किया है। कहानी में बीच बीच

में लेखक परिहास की शैली में बहुत गंभीर बातें कह जाता है– 'नई पीढ़ी का मतलब वो जवान जिन्होंने अभी स्त्री शरीर को भोगा नहीं है और जिनके लिये दंगा इसका सबसे आसान तरीका होता है (गो गेट इट)। कभी–कभी तो ऐसा भी लगता है कि ये वास्तव में हिंदू और मुसलमान के बीच दंगा होता है या फिर औरत और आदमी के बीच? क्योंकि लूटा तो औरत को ही जाता है फिर चाहे वो हिंदू की हो चाहे मुसलमान की। लुटना औरत को ही है क्योंकि वो कभी दंगा नहीं करती, दंगे की परिभाषा ही यही है कि अगर आप इस में शामिल हो गए तो आप बड़े 'ऊ' की मात्रा हो जाते हैं, अर्थात आप 'लूटते' हैं और अगर आप शामिल नहीं हुए तो आप छोटे 'उ' की मात्रा हो जाते हैं अर्थात आप 'लुटते' हैं।' कहानी में रामभरोस हाली का अपने खेत मालिक की पत्नी के साथ दैहिक संबंध होना दंगे की पृष्ठभूमि तैयार करता है– 'यह प्रेमिका असल में खत्री की जवान और सुंदर पत्नी थी, जो एक बार रात को जरूरत पड़ने पर खेत पर लगे पेड़ से नींबू लेने आई थी, और उसके बाद अक्सर ही आने लगी।' खेत का मालिक और रामभरोस दोनों ही हिंदू हैं लेकिन खेत मालिक षडयंत्रपूर्वक रामभरोस की हत्या करवा कर अपने खेत के पड़ोस के मुसलमान किसान पर इल्ज़ाम लगवा कर दंगा करवा देता है। कहानी सांप्रदायिक दंगों के पीछे के पूरे घटनाक्रम को जिस बेरहमी से उघाड़ती है उसे पढ़कर एकबारगी तो पाठक काँप जाता है। पुलिस, प्रशासन और दंगे करवाने वालों के बीच के सच को घटना दर घटना सामने लाकर रख दिया गया है। कहानी में बीच–बीच में कुछ चुटीले संवाद भी हैं जो कोष्ठक में आते हैं, कहानी किस्सागो शैली में है और कोष्ठक में ये संवाद किस्सा सुन रहे श्रोताओं की ओर से आते हैं। ये चुटीले संवाद कहानी में व्यंग्य घोलते हैं और उसकी रोचकता को बढ़ाते हैं। हालाँकि एक स्थान पर कोष्ठक में बाकायदा एक गाली भी आ गई है। फिर भी कुछ चुटीले संवाद जो बीच–बीच में आते हैं– (हरी चिंदी से भगवे का गला घोंटा गया है...), (इंट्रेस्टिंग थोड़ा खुलकर बताओ न...), (दुखती पे मार रहे हैं, हरामी रोन्टाई कर रहे हैं...), (ऐसे ही मरोगे तुम साले कुछ भी नहीं कर सकते...)।

> *पहली बार में ये कहानी किसी महिलाओं की घरेलू पत्रिका में छपी हुई कहानी लगती है। लेकिन फिर अपने सवालों के कारण ये स्वयं को स्थापित कर लेती है।*

लम्बे पत्र की शैली में लिखी गई संग्रह की एक कहानी है 'तमाशा'। पहली बार में ये कहानी किसी महिलाओं की घरेलू पत्रिका में छपी हुई कहानी लगती है। लेकिन फिर अपने सवालों के कारण ये स्वयं को स्थापित कर लेती है। कहानी का विषय बहुत ही सादा है जिसमें एक युवती जिसकी शादी होने वाली है वो अपने पिता को पत्र लिख रही है जिसमें वो अपने पिता को अपनी शादी में नहीं आने के लिये कह रही है। इसलिये क्योंकि पिता उसकी माँ और दादी को छोड़कर चला गया था, चला गया था उसे ये नाम तमाशा देकर। अब उस लड़की को ये लग रहा है कि उसका पिता बरसों बाद उसकी शादी में आकर अधिकार जताने का प्रयास करेगा। लड़की इसको रोकना चाहती है और ये पूरा पत्र जो कि कहानी है उस रोकने की कथा कहता है। 'जब किसी बच्ची को पिता की उंगली थामे जाते देखती तो पूछती थी माँ से, दादी से कि कहाँ है ये पुरुष जो बाकी के सब घरों में तो है पर मेरे ही घर में नहीं है। उस समय मुझे पता ही नहीं था कि जिस पुरुष को लेकर मैं इतना परेशान हो रही हूं वही पुरुष मुझे 'तमाशा' नाम देकर चला गया है।'

कहानी की नायिका अपने पिता को लेकर बहुत आक्रोशित है और वो उसे माफ करने के लिये तैयार नहीं है ये जानते हुए भी कि उसकी माँ और दादी ने उसके पिता को माफ कर दिया है। 'इसीलिये आपसे कह रही हूं कि आप मेरी शादी में मत आना। मैं अपनी ही शादी में कोई भी 'तमाशा' खड़ा करके उन दो महान स्त्रियों को कोई दुःख नहीं पहुंचाना चाहती जिन्होंने मुझे यहाँ तक लाकर खड़ा किया है। मैं जानती हूं कि आप इतने बेशर्म नहीं हैं कि इतना कुछ लिखने के बाद भी चले आएँ।'

कहानी संग्रह की एक और श्रेष्ठ कहानी है 'तस्वीर में अवाँछित'। कहानी विषय, कथ्य, शिल्प तथा भाषा हर स्तर पर बहुत सधी हुई है। कहानी में हालाँकि बिम्बों और प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है लेकिन वे इतने सरल हैं कि कहानी के प्रवाह को अवरुध्द नहीं करते। कहानी एक ऐसे पुरुष की है जो अपने व्यवसाय में इतना मसरूफ है कि उसके पास अपने परिवार के लिये बिल्कुल ही समय नहीं है। कभी किसी रविवार को जब वह घर में होता है तो उसको ऐसा लगता है कि वो यहाँ घर में अवाँछित है और उसके कारण उसकी पत्नी और बच्चों की रोज़ाना की दिनचर्या प्रभावित हो रही है। लेखक ने कहानी में प्रतीकों के बहुत ही सुंदर प्रयोग किये हैं– 'रविवार को उस प्रकार ड्राइंग रूम में बैठे हुए उसे लगता है कि जैसे वह भूल से किसी गलत स्टेशन पर उतर गया मुसाफिर है। जो प्लेटफार्म की बैंच पर बैठा है जहाँ रेलें आ–जा रही हैं, मुसाफिर आ–जा रहे हैं, खोमचे वाले आ–जा रहे हैं, उसकी उपस्थिति से लगभग निस्पृह ये सभी आ–जा रहे हैं। कभी–कभी सामने से गुज़रती किसी रेल में एकाध कोई परिचित चेहरा दिखाई भी देता है और वह पहचानने का प्रयास भी करता है किंतु उससे पहले ही वह रेल गुज़र जाती है।' कहानी की कई घटनाएँ कँपकँपी पैदा कर देती है कि अपने ही घर में किस कदर अवाँछित है वो पात्र– 'इसलिए क्योंकि गुड़िया उसने पांच साल पहले मांगी थी, जब वो छः

साल की थी, अब वो ग्यारह साल की है। एक–एक शब्द को लगभग चबाते हुए बड़े ही शुष्क अंदाज में कहा उस स्त्री ने और रंजन के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही पलट कर अंदर भी चली गई।' कहानी में लेखक हर स्तर पर सफल रहा है। कहानी का प्रवाह और उसके पात्रों से पाठक का जुड़ाव ये दोनों ही सरलता से होते रहते हैं, बिना कोई आडम्बर रचे। कहानी वर्तमान समय में इसलिये भी और प्रभावी है क्योंकि ये हर किसी को अपनी ही कहानी लगती है। वर्तमान समय में जो दौड़ चल रही है उसमें हर कोई अपने ही घर में अवाँछित होता जा रहा है। पहले का आदमी घर लौटता था तो राहत की साँस लेता था लेकिन आज जब वो घर आता है तो उसे ऐसा लगता है कि वो किसी अजनबी दुनिया में आ गया है। क्योंकि उसके साथ–साथ उसके सर पर सवार होकर उसका दफ्तर भी आ जाता है। ये दफ्तर हर समय उसके सर पर सवार है, जो उसे हर जगह अवाँछित बनाये रखता है।

संग्रह की अंतिम कहानी 'और कहानी मरती है' साहित्यकार के मानसिक द्वन्द्व को अभिव्यक्त करती है। हर रचनाकार अपने आसपास के वातावरण को, घटनाओं को देखता है और संवेदित भी होता है। अपनी संवेदना के सहारे विस्तृत फलक देकर संप्रेषित करता है। किन्तु रचना प्रक्रिया के दौरान रचनाकार की पीड़ा, उसकी आत्मा की आवाज़ और सामाजिक दबाव के द्वन्द्व की मन:स्थिति क्या होती है उसे इस कहानी में बड़ी सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। कहानी में नायक एक लेखक ही है जिसकी कहानी में से पात्र निकल निकल कर सामने आ रहे हैं और उसे परेशान कर रहे हैं। ये पात्र होने को तो कहानी के पात्र हैं लेकिन ये लेखक के अतीत के बारे में काफी कुछ जानते हैं और इसी कारण ये लेखक को बुरी तरह से घेर लेते हैं। ये कहानी सुबीर की प्रारंभिक कहानियों में से है लेकिन पढ़े जाने के दौरान कहीं से ये नहीं महसूस होता कि ये प्रारंभिक दौर का लेखन है। कहानी के पात्रों का एक–एक करके कहानी से बाहर आना और लेखक के सामने अपने प्रश्न रखना कहानी को रोचक बनाये रखता है। कहानी के पात्रों के सवाल भी दिलचस्प हैं– 'संभावनाएं कैसे समाप्त नहीं होंगी, आपकी पत्नी एक रात किसी के साथ गुज़ार कर आ जाए तो क्या आप उसे केवल यह सोच कर स्वीकार लेंगे, कि वह आपके बच्चों की मां है? बोलिए!'। ये वे सवाल हैं जिनका कथानायक लेखक के पास कोई उत्तर नहीं होता है। कहानी से बाहर आ रहे पात्र उसे उसके पिछले जीवन के बारे में बता कर भी उलझाते रहते हैं। 'वस्त्रों के आवरण के परे संबोधन केवल शरीर बन जाते हैं? ये अपनी तथाकथित आधुनिक परिभाषाएं मुझे मत सिखाइये। बताइये भला आप स्वयं अभी तक अपने कितने संबोधनों को शरीर बना चुके हैं?' जैसे तीखे सवालों से जूझता हुआ कहानी का केन्द्रीय पात्र कहानी लेखक हर बार अपने ही पात्रों के सामने लाचार नज़र आता है। इसकी इस लाचारगी का बखूबी चित्रण किया गया है कहानी में। वहाँ तक कि कहानी लेखक अपनी उस अधबनी कहानी को स्वयं ही जला देता है– 'आदम इसी अवस्था में आसमान से उतरा था और यह इसी अवस्था में आसमान में जा रहा है। ये दोनों आकृतियां भी आकाश में विलीन हो गईं। काग़ज़ उसी उसी प्रकार जल रहे हैं।'

कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टि से ये कहानियाँ भविष्य के लिए अच्छे संकेत देती हैं, लेखक में एक अच्छे कथाकार के रूप में विकसित होने की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। हालाँकि अभी लेखक को बहुत अधिक सावधानी रखने की ज़रूरत है इसलिये भी कि दोहराव के चलते विषय अपना प्रभाव खोने लगता है। लेखक ने अपने पहले कहानी संग्रह में भले ही सभी समस्याओं को समेटा है लेकिन अभी भी बाज़ारवाद, वर्तमान में ग्रामीण जीवन की स्थिति जैसे कई सारे विषय अभी छूटे हुए हैं। सांप्रदायिकता को लेकर लेखक ने अधिक रचनाएँ की हैं। साथ ही साहित्यकारों के अपने ही समाज को भी विषय बनाया है। लेकिन अभी भी जन से जुड़े हुए बहुत से विषय हैं जो लेखक को अपनी रचनाओं में समेटने होंगें। लेखक का ये पहला ही कहानी संग्रह कम से कम ये आश्वस्ति तो देता ही है कि लेखक से भविष्य में बहुत उम्मीदें की जा सकती हैं। और इसके संकेत लेखक ने इस वर्ष का नवलेखन जीत कर दे भी दिये हैं। लेखक के पास अपनी एक शैली है। अंतर्निहित व्यंग्य से भरी हुई किस्सागो शैली कहानी को हमेशा पठनीय बनाये रखती है। और लेखक की शैली में ये दोनों ही बातें हैं। सुबीर की कहानियों में जब अचानक बीच में कोई व्यंग्य आ जाता है तो वो कहानी के प्रवाह को और बढ़ा जाता है। शिल्प की यदि बात करें तो लेखक ने अपने पहले कहानी संग्रह में शिल्पगत प्रयोग खुलकर किये हैं। कहीं ये प्रयोग सफल रहे हैं तो कहीं नहीं भी रहे हैं। लेकिन उसके बाद भी जहाँ पर ये प्रयोग सफल रहे हैं जैसे अंधेरे का गणित या फिर तीन लड़कियों की कहानी में, तो वहाँ बहुत सफल रहे हैं। भाषा की बात यदि की जाये तो पूरे कहानी संग्रह में लेखक ने कहीं भी अपने अंचल की बोली के प्रयोग नहीं किये हैं। हीरामन कहानी में गुंजाइश होने के बाद भी लेखक ने बोली का कोई प्रयोग नहीं किया। इसको लेकर लेखक को आगे ध्यान देना होगा। कुल मिलाकर ये कहानी संग्रह एक आश्वस्ती है, आश्वस्ती कि आने वाला समय हिंदी साहित्य के लिये लिखने वालों से शून्य हो जाये ऐसी कोई संभावना नहीं है। युवा लेखकों की ये जमात अपनी भाषा और अपना शिल्प लेकर आई है। और ये प्रयोग करने ये भी नहीं चूक रही है। ईस्ट इंडिया कम्पनी एक प्रयोग ही है जो अपने तरीके से किया गया है।

◆◆◆

कथा संग्रह : ईस्ट इंडिया कम्पनी,
लेखक : पंकज सुबीर
प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
मूल्य : 130 रुपये

समीक्षा

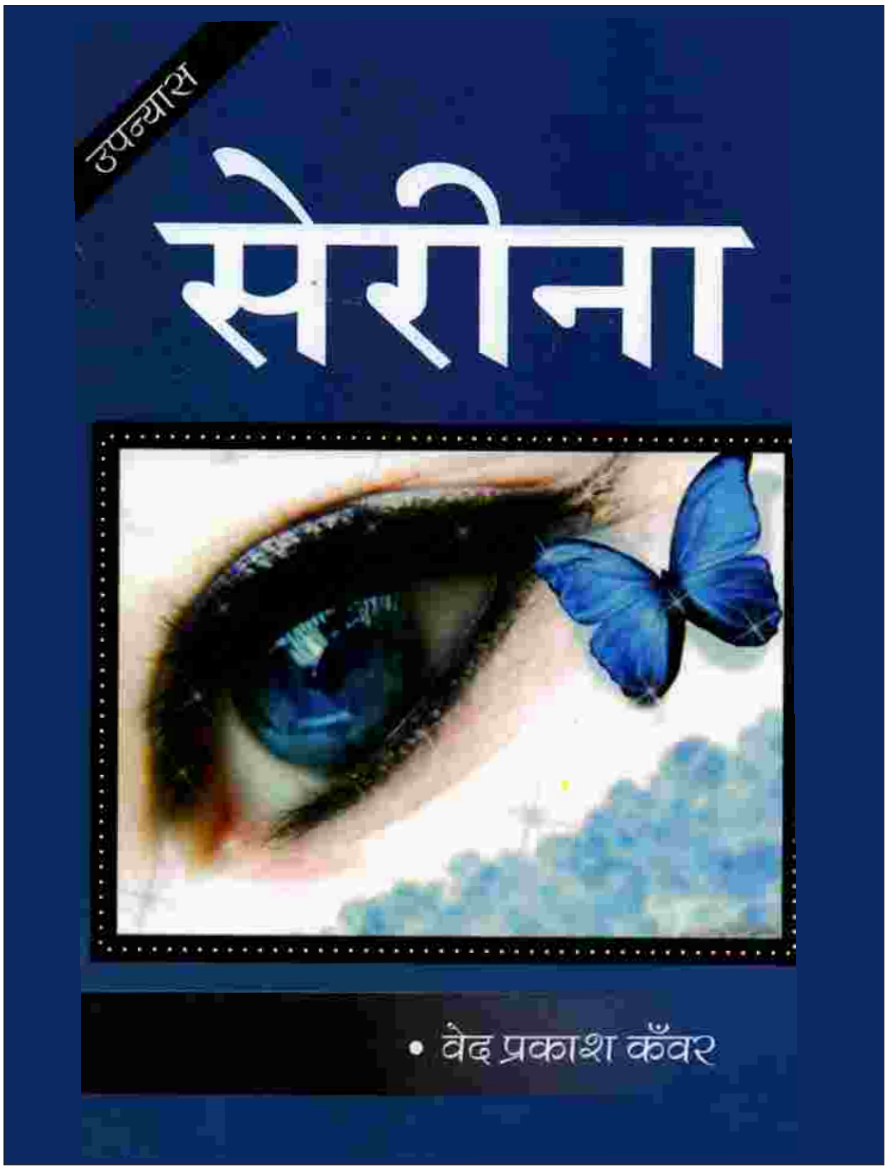

जगदीश प्रसाद गोयल

सेरीना श्री वेदप्रकाश कंवर द्वारा रचित उपन्यास पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उपन्यास 'सेरीना' आस्ट्रिया की एक सुंदर, नेक दिल संस्कारी तथा दृढ़ प्रतिज्ञ लड़की के जीवन चरित्र पर आधारित कथानक है। जिसकी भाषा एवं शैली सरल, रोचक तथा प्रभावशाली है। 'सेरीना' उपन्यास लिव-इन रिलेशनशिप, 'बिना शादी अस्थायी रूप से पति-पत्नी के रूप में रहना' की आधुनिक यूरोपीय देशों की अवधारणा को रेखांकित करता है कि यह अवधारणा नारी शोषण का एक सोचा समझा प्लान है। क्योंकि लिव-इन रिलेशनशिप में शारीरिक तथा मानसिक वेदना एवं खालीपन तो अन्तस्थः नारी को ही झेलना पड़ता है।

उपन्यास कि नायिका 'सेरीना' मानती है कि नारी की पूर्णता मातृत्व प्राप्त करने में ही है जैसा कि उसने अपनी मां, दादी, नानी से प्राप्त संस्कारों से सीखा है। इसी लिए जब वह वाल्टर (एक आस्ट्रियाई युवक) तथा कुवैत के एक शेख के साथ 'लिव इन-रिलेशनशिप में रहती है तब भी वह विधिवत शादी एवं सन्तान चाहती है। किन्तु दोनों ही पुरुष उसकी इस

बात से सहमत नहीं होते हैं तथा वाल्टर तो यहाँ तक कह देता है कि बच्चे पैदा करना, बिल्ली, कुत्ते तथा जानवरों का काम है। हमें तो स्वछन्द रूप से मौज-मस्ती ही करनी चाहिए। जैसे कि लिव-इन- रिलेशनशिप एक फास्ट फ़ूड, जंक फ़ूड का पर्याय हो।

'सेरीना' अपने पड़ौस में भारत से आकर रह रहे कुमार परिवार (श्री कुमार, श्रीमती कुमार, पुत्र राजन एवं अजय तथा पुत्री सोनिया) से काफी सम्पर्क में आती है तथा भारतीय परम्परा से काफी प्रभावित होकर श्रीमती कुमार को देखकर महालक्ष्मी, करवा चौथ आदि पूजा व्रत करने लगती है तथा उनकी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर बाइवल के साथ-साथ हिन्दू महाग्रंथ 'रामायण' व 'श्रीमद्भगवतगीता' का भी नियमित रूप से अध्ययन करती है। इस प्रकार ईसाई तथा भारतीय संस्कृति एकाकार होती है।

'सेरीना' केवल अपनी माँ बनने की उत्कंठा की पूर्ति के लिए किसी प्रकार से श्री कुमार को ही माध्यम बना लेती है किन्तु जीवन पर्यन्त इस तथ्य को किसी अन्य पर विशेषकर कुमार परिवार पर प्रकट नहीं होने देती है ताकि कुमार परिवार में किसी प्रकार की हलचल या बिखराव न हो जाए। वह श्रीमती कुमार का बहुत सम्मान करती है तथा उनको बड़ी दीदी मानती है।

सेरीना गर्भपात को महापाप मानती है और अंततः कुमारी माँ बनती है। अपने पुत्र का नाम क्रिस्तो-ओम रखती है। जोकि क्राइस्ट (ईसा मसीह) तथा ॐ (ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश का प्राणवाक्षर) अनूठा समिश्रण है। सेरीना अपने पुत्र को एक नेक इंसान तथा सुशिक्षित बड़ा आदमी बनाती है।

कुछ वर्षों के बाद श्री कुमार का स्थानान्तरण वियतनाम हो जाता है। 'सेरीना' श्री कुमार को दिल की गहराइयों से सच्चा प्यार करती है किन्तु अपने प्यार को किसी पर प्रकट नहीं करती है। वह चाहती है कि अगले जन्म में हमारी आत्मा से आत्मा का मिलन हो।

एक बार जब सेरीना का पुत्र क्रिस्टोम जवान होने के बाद अपने पिता के बारे में पूछता है तो सेरीना बड़े ही शालीन और तर्क संगत तरीके से श्री कुमार के बारे में सारा सच बता देती है। सारा सत्य जानकर क्रिस्टोम अपनी माँ सेरीना के प्रति श्रद्धावान हो जाता है। क्रिस्टोम की उत्कट इच्छा होने पर सेरीना क्रिस्टोम को अपने पिता से मिलने वियतनाम इस शर्त पर जाने देती है कि श्री कुमार व कुमार की पत्नी को यह आभास नहीं देगा की वह असलियत जान गया है।

उपन्यास के एक मार्मिक प्रसंग में अकेली रह रही भारतीय लड़की शिवानी और आस्ट्रियाई युवक बिली रिचर्ड का बिना विवाह (लिव-इन-रिलेशन) साथ-साथ रहना तथा शिवानी के गर्भवती होने के पश्चात बिली रिचर्ड का एक अमेरिकन युवती के साथ शिवानी को अकेला छोड़कर अमेरिका चला जाना पाठक के मन की गहराइयों को झंझोड़ सकता है क्योंकि शिवानी इस बेगाने देश में अकेले क्या करे तथा वापस अपने देश भारत क्या मुंह लेकर जाए। शिवानी आत्महत्या के कगार पर पहुंच जाती है किन्तु सेरीना से उसकी मुलाकात उसमें अजीब सा परिवर्तन लाती है।

एक प्रेरक प्रसंग में ७५ वर्षीय वृद्धा बारबरा फ्रेडरिक पश्ताप करते हुए कहती है 'काश मैं अपना महत्वपूर्ण अहम त्यागकर प्यार की भाषा जल्द समझ पाती तो मेरे दाम्पत्य जीवन में अकेलापन नहीं होता प्यार में अनावश्यक मान एवं हठ नहीं चलता।' बारबरा फ्रीडरिक उबाऊ वृद्धाश्रम में रहने की अपेक्षा एक अनूठा तथा सुनियोजित माध्यम अपनाकर अपने अकेलेपन को खुशियों के रंग से भर लेती है। यह तथ्य 'जब जागो तब सबेरा' की कहावत को चरितार्थ करता है। उपन्यास में मिम्बोसा तथा सरदार अमरजीत सिंह के किरदार भी रोचकता पूर्ण हैं।

उपन्यास में भारत, आस्ट्रिया, इटली, वितनाम आदि देशों के आकर्षक दर्शनीय स्थलों का सजीव चित्रण किया गया है तथा संक्षेप में सही इन देशों का धार्मिक, एतिहासिक, भौगोलिक ज्ञान भी सहज में ही दिया गया है तथा 'काक्स एंड किंग्स' टूर आपरेटर कम्पनी की उत्कृष्ट सेवाओं को भी रेखांकित किया गया है। उपन्यास का अंत अति उत्तम एवं हृदय स्पर्शी है जब दिल्ली प्रवास के दौरान एक सड़क दुर्घटना में श्री कुमार का अचानक निधन हो जाता है तथा लगभग ठीक उसी समय 'सेरीना' पूजा करने के दौरान समाधिस्थ होकर परलोक गमन कर जाती है। यहाँ 'सेरीना' के जीवन भर की साध 'आत्मा से आत्मा के मिलन' आलौकिक रूप से पूरी होती है जो की भारतीय दर्शन शास्त्र का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

लेखक तथा मेरी निजी सम्मति में भारतीय संस्कृति के अनुसार तथा शादी एक स्थायी पवित्र संस्था है तथा जीवन पर्यन्त फलदायी है जबकि 'लिव-इन-रिलेशन' या मैरिज ऑफ़ क्न्वीनिंस एक मृगमरीचिका है।

उपन्यास में एक ओर तो मानव की आधुनिक मानसिकता को प्रभावी ढंग से उजागर करते हुए, अपनी कठिनाइयों से जूझते हुए तथा जीवन को उभारते हुए दर्शाया है तो दूसरी और धन, दौलत और शोहरत पाने की दिशाहीन दौड़ में अपने जीवन के बहुमूल्य तत्वों को ताक पर रखकर केवल निजी स्वार्थ पूर्ति की लिप्सा में उलझा हुआ दर्शाया गया है।

'सेरीना' सभी देशों में (विशेषकर यूरोपियन देशों में) अवश्य एक पठनीय उपन्यास है तथा लेखक श्री वेदप्रकाश कंवर इस कृति के लिए बधाई के पात्र हैं।

◆◆◆

ये महिलाएं भगवान का दर्ज़ा देती हैं जिन्होंने उन्हें गंदगी के दलदल से निकाल कर खुशहाल ज़िंदगी दी है। इन स्त्रियों के पुनर्वास की दिशा में उन्हें 'नई दिशा' केंद्र में विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों द्वारा आत्मनिर्भर बनाया गया है।

अलवर की नई राजकुमारियां

✍ *पुष्पा सक्सेना*

सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन के संस्थापक डॉ विंदेश्वर पाठक के शब्दों में 'मेरा जीवन जाति-आधारित भेद-भाव के खिलाफ़ अविराम संघर्ष को समर्पित है।'

बरसों पहले बिहार के रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार के सपूत अपने अभियान में अकेले थे, साथ में था बस गांधी का सपना और उसे पूरा करने का संकल्प। गांधी जी की मां ने अपने पुत्र से कहा था, यदि वह अपने जीवन-काल में किसी का जीवन बचाते हैं या बेहतर बनाते हैं तो उनका जीवन सार्थक है। गांधी जी की मां के कथन को आधार बनाते हुए डॉ. पाठक ने भी सिर पर मैला ढोने वाली स्त्रियों के जीवन की दिशा बदलने का दृढ संकल्प लिया। भारत के लाखों स्कैवेंजरों (मैला ढोने वाले) को उनके अभिशप्त जीवन से मुक्ति दिला कर, उनके जीवन को नई दिशा दी है।

बिहार के बेतिया जिले में स्कैवेंजर्स की एक कॉलोनी में रहते हुए डॉ. पाठक को मैला

ढोने वालों के दयनीय जीवन ने अंदर तक उद्वेलित कर दिया। वे मानव होते हुए भी मानवाधिकारों से वंचित क्यों हैं? उन्हें भी समाज में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकार दिलाना ही होगा।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति में डॉ. पाठक को सामाजिक, पारिवारिक विरोध ही नहीं सहना पड़ा वरन उन परिवारों के भी कड़े विरोधों का सामना करना पड़ा जिन्हें अपने परंपरागत मैला ढोने के कार्य को छोड़ते भय हो रहा था कि कहीं वे अपनी कमाई से हाथ न धो बैठें। आज वे परिवार डॉ. पाठक को देवता की संज्ञा देते हैं, जिन्होंने उनके अंधेरे जीवन को नया उजाला दिया है।

पुस्तक के प्रारंभ में लिखा गया है 'अधिकतर राजकुमार महलों में पैदा होते हैं, लेकिन कुछ जन्म लेते हैं नांद में, ईसा मसीह उनमें से एक थे।' अलवर की नई राजकुमारियों के जीवन में यही सत्य साकार होता है। हाथ में झाड़ू, सिर पर दूसरों का दुर्गंधित मल-मूत्र उठाने को विवश स्कैवेंजर्स महिलाओं ने 2008 में युनाइटेडनेशन, न्यूयार्क में मंच से भाषण दिया और रैंप पर परेड करके चमत्कृत किया है। उनके हाथों से बनाए वस्त्रों में मॉडेल्स रैंप पर चली हैं। नई राह पर चल कर उन्होंने नई मंज़िलें पाली हैं, पर अभी तो उन्हें आकाश छूना है।

सुलभ द्वारा स्थापित 'नई दिशा' केंद्र ने आज वहां मैला ढोने वाली महिलाओं को इस नारकीय कार्य से मुक्ति दिलाई है। इन महिलाओं को अलवर की नई राजकुमारियां कह कर संबोधित किया जाना, उनके प्रति सम्मान और स्नेह का द्योतक है। दिल्ली के प्रतिष्ठित पत्रकारों द्वारा चवालीस महिलाओं से लिए गए साक्षात्कार, इस पुस्तक में संकलित हैं। आज वे अपने जीवन से पूर्ण संतुष्ट हैं, पर अतीत की अपमानजनक स्थिति उनकी आंखों में आंसू ला देती है।

सभी स्त्रियों के अतीत की एक सी कहानियां हैं। कहीं पांच वर्ष की नन्हीं बेटी को उसकी मां अपने साथ ले जाती है ताकि भविष्य में वह भी मां की तरह मैला ढोने का काम कर सके। बच्ची मायूसी से बैग लटकाए बच्चों स्कूल जाते देखती है, उसका बचपन कहां खो गया? कभी हाथों की मेंहदी का रंग भी हल्का नहीं हुआ कि नव-वधू के हर विरोध के बावजूद रोते हुए भी उसे नारकीय कार्य करने को विवश होना पड़ता है। घरों में काम करते हुए उनके सामने रोटी के टुकड़े और उनके काम के एवज़ पैसे, दूर से फेंक कर दिए जाते। मंदिर में प्रवेश के स्थान पर गालियां और अपमान मिलता।

डॉ. पाठक को ये महिलाएं भगवान का दर्ज़ा देती हैं जिन्होंने उन्हें गंदगी के दलदल से निकाल कर खुशहाल ज़िंदगी दी है। इन स्त्रियों के पुनर्वास की दिशा में उन्हें 'नई दिशा' केंद्र में विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों द्वारा आत्मनिर्भर बनाया गया है। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें स्ट्राइपेंड दिया जाता है, काम शुरू करने पर वे दो हज़ार रुपए मासिक कमा रही हैं। पहले 4-5 घरों में काम करने के बाद मात्र ढाई-तीन सौ रुपए कमा पाती थीं। ये आत्मनिर्भर स्त्रियां अपने बच्चों को डॉक्टर और इंजीनियर बनाने के स्वप्न देख रही हैं। उनके बच्चे स्कूल जाते है, घर में सुख-सुविधा के उपकरण टीवी, फ़्रिज़, गैस के चूल्हे हैं।

जो लोग उनकी छाया से भी दूर भागते थे, वे अब उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। उनके द्वारा बनाए गए अचार, मुरब्बे, पापड़, बड़ी खरीदते हैं। संतरा के ब्यूटी-पार्लर में बड़े-बड़े घरों की महिलाएं अपना रूप संवरवाने आती हैं। अब कुछ स्त्रियां अपना व्यवसाय भी शुरू करने की सोच रही हैं।

इन महिलाओं को आत्मनिर्भरता के साथ साक्षरता और सफ़ाई का भी पाठ पढ़ाया जाता है। अब कुछ साक्षर स्त्रियां अंग्रेजी के कुछ शब्द और वाक्य भी बोलने में समर्थ हैं। हेमलता चौमड़ नाचती-गाती हैं, ब्रेक-डांस करना सीखती हैं और गाती हैं हम होंगे कामयाब।

ये राजकुमारियां गांधी, अम्बेडकर को नहीं जानतीं, उनके लिए तो पाठकजी ही मसीहा हैं। जिन्हें कभी सड़क के किनारे बने ढाबे में खाना नसीब नहीं हुआ, हलवाई की मिठाई तक छूने का हक नहीं था, आज उसी मसीहा के कारण पांचतारा होटलों में भोजन करते हुए पत्रकारों से वार्ता करती हैं। हवाई यात्रा से अमरीका तक की उड़ान भर चुकी हैं। सुशीला चौहान गर्व से बताती हैं, वह प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल तथा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से मिलने का अवसर पा चुकी हैं। ये महिलाएं कई मुख्यमंत्रियों तथा सम्मानित व्यक्तियों से सम्मान पा चुकी हैं।

नई राहों पर चलकर इन राजकुमारियों ने अपना जीवन ज़रूर खुशहाल बनाया है, पर अभी सफ़लता की कई और मंज़िलें पार करनी हैं, बहुत से कीर्तिमान स्थापित करने हैं। विश्वास है, डॉ. पाठक के मार्गदर्शन में वे अवश्य कामयाबी की बुलंदियों को छू सकेंगी। उनकी यह विजय-गाथा एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिससे युगों तक लोग प्रेरणा लेते रहेंगे। ◆◆◆

दृष्टि तथा प्रकल्पन –
डॉ. विंदेश्वर पाठक
आलेख-प्रस्तुति –
दिल्ली के प्रतिष्ठित पत्रकारगण
प्रकाशक –
सुलभ इंटरनेशनल सोशल
सर्विस ऑर्गनाइजेशन
यह पुस्तक अंग्रेजी में
The New Princess of Alvar
नाम से उपलब्ध है।

THE NILGIRIS

Authentic Madras Kitchen

आप नीलगिरी में आयें,
हमारे शुद्ध, स्वादिष्ट, इडली, धोसा,
उतपम व मिठाइयाँ खायें, आप उँगलियाँ चाटते ही रह जायेंगे,
और बार –बार अपने दोस्तों और परिवार के साथ आयेंगे ।

Dine in Resturant
Take out & Catering

● *Idli* ● *Masala Dosa* ● *Rava Dosa*
● *Uthappam* ● *Sweets & Snacks*

Markham & McNicoll Centre
3021 Markham Road, Unit #50
Scarborough, ON M1X 1L8

Jeyanthy or Bhalu
Tel/Fax: (416) 412 0024

कैनेडा का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी साप्ताहिक • हर सप्ताह 30,000 पाठक

हिन्दी Abroad

www.hindiabroad.com

हिन्दी Abroad

Published by
HINDI ABROAD MEDIA INC.

Chief Editor
Ravi. R. Pandey
(Media Critic, Ex Sub Editor - Times Of India Group, New Delhi)

Editor
Jayashree

News Editor
Firoz Khan

Reporter
Rahul, Shahida

New Delhi Bureau
Rangnath Pandey
(Ex Chief Sub Editor - Navbharat Times, New Delhi)
Shiela Sharma,
Vijay Kumar

Designing
AK Innovations Inc.
416-892-1538

7071 Airport Road, Suite 204A
Mississauga, ON
Canada. L4T 4J3
Tel: 905-673-9929
Fax: 905-673-9114
E-mail: hindiabroad@gmail.com
editor@hindiabroad.com
Web: www.hindiabroad.com

Disclaimer: The opinions expressed in Hindi Abroad may not be those of the publisher. Contents of this publication are covered by copyright and offenders will be prosecuted under the law.

चित्रकाव्य-कार्यशाला

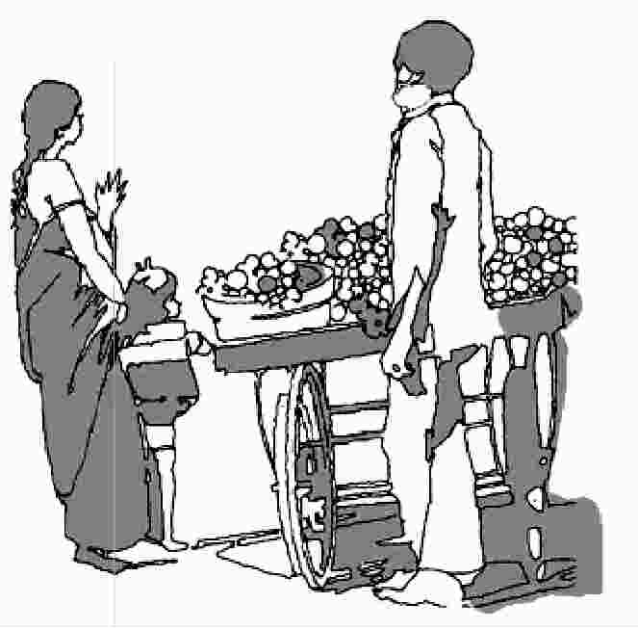

रंग-बिरंगे ताज़े फल देख कर
बच्चे का मन है ललचाया,
माँ से बोला ले लो माँ
मेरा दिल है इस पे आया
पर भाव सुनकर माँ को गुस्सा आया
बरस पड़ी वो दूकानदार पर
हाय रे ये तुमने क्या लूट है मचाया
दूकानदार ने पलट दिया ये जवाब –
ये तो मंहगाई की मार है बहना
हमने क्या ग़लत बतलाया
सारी दुनिया में है आजकल
इसका प्रकोप छाया।
अमित कुमार सिंह, नई दिल्ली

मेरा फल है ताज़ा-ताज़ा
इनमें छुपा स्वाद है सारा
खा कर बन जाओ स्वस्थ
बचाओ पैसा डॉक्टरवाला।
घर भी तो रखे बोली माँ
वह भी तो खाने, सड़ जायेंगे अथवा
मुझे मालूम तू है फल की चींटी
रट लगाती, दिला दो, दिला दो।

बालिका का मन
सुन ललचाया
खींच कर लाई अपनी माँ को
बोली कितने सुंदर फल,
थोड़े से दिला दो,
थोड़े से दिला दो।
बहन जी! आप हैं पहली गाहक
नाशपाती कश्मीरी,
शिमला वाला सेब प्यारा
फलवाले ने ज़ोर लगाया,
बोहनी कर दें, आभार होगा।
राज महेश्वरी, कनाडा

ठेला देखकर बच्चे ने ज़िद मचाई,
फल लेने के लिए
माँ से गुहार लगाई,
बच्चे का मन रखने के लिए,
पूछा ठेले वाले से जब भाव,
सुनकर फलों का दाम हुई वो हैरान
ठेले वाले के मनमाने दाम से
हुई वो परेशान।
किरन सिंह बनारस, भारत

है देश में इतनी मंहगाई
सब्जी वाला ठेले पर सब्जी लाता है
और जब ग्राहक को दाम बताता है
ग्राहक उसे खरी-खोटी सुनाता है
सब्जी वाला अपनी मजबूरी बतलाता है
लेकिन ग्राहक उसे
कभी समझ न पाता है
हाय रे! ये मंहगाई...
अज्ञात कवि, कनाडा

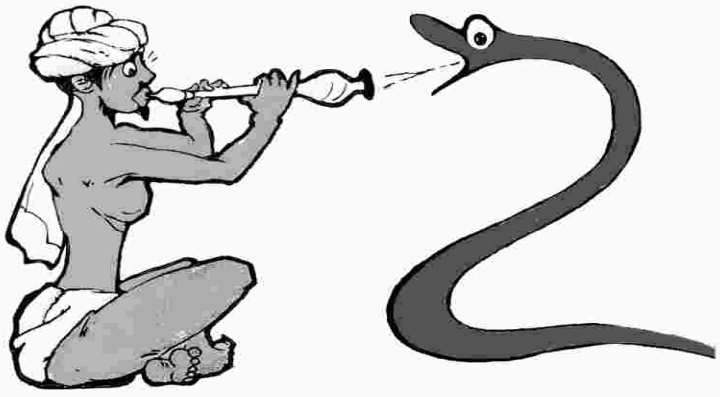

इस चित्र को देखकर आपके मन में कोई रचनात्मक पंक्तियाँ उमड़-घुमड़ रही हैं. तो देर किस बात की तुरन्त ही काग़ज कलम उठाइये और लिखिये. फिर हमें भेज दीजिये. हमारा पता है :

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham,
Ontario, L3R 3R1
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

साहित्यिक समाचार

युवा कथाकार पंकज सुबीर को उपन्यास 'ये वो सहर तो नहीं' के लिये वर्ष 2010 का ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार प्रदान किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा दिल्ली पुस्तक मेले में 29 दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम में शीर्ष आलोचक डॉ. नामवर सिंह की अध्यक्षता, वरिष्ठ कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल के मुख्य आतिथ्य तथा डॉ. विजय मोहन सिंह, श्री रवीन्द्र कालिया, कथाकार श्री अखिलेश, श्रीमती ममता कालिया, कवि दिनेश शुक्ल की उपस्थिति में 31000 रुपये तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

BMS
graphics

Choose from a variety of
Birthday - Mundan - Janoi - Anniversary
Indian & western

Wedding Invitations
Choose your own language

शादी, मुंडन,सालगिरह, जनेऊ कोई भी हो शुभ संस्कार।
हर प्रकार के निमंत्रण के लिए हमारी सेवायें हैं सदा तैय्यार।।

21 Bradstone Square, Scarborough, (Toronto) Ontario M1B 1W1
Tel: 416.803.7949 416.292.7959 Fax: 416.292.7969
E-mail: bmsgraphics@rogers.com

महान संगीत कलाकार श्री देव बंसराज को संगीताचार्य की उपाधि

केवल 10 वर्ष की आयु से ही रेडियो स्टार बनकर म्यूजिक कंसर्ट सजाता हुआ यह सितारा, भारत सरकार की छात्रवृत्ति पाकर ट्रिनिडाड से भारतीय कला केंद्र, दिल्ली स्कूल ऑफ म्यूजिक में संगीत प्रशिक्षण के लिए आया। वहाँ उन्होंने तबला, हारमोनियम व सितार पर महारत हासिल की, वहीं रागों का प्रकाण्ड ज्ञान पाया। यहीं उन्होंने हिंदी सीखी और कनाडा पहुँचकर संगीत के गुरू के तौर पर प्रतिष्ठित हो गये।

14 नवम्बर 2010 की संध्या को श्री देव बंसराज जी के संगीत कला के दीर्घ योगदान को सराहते हुए 'रायरसन वि.वि.' के प्रो. डॉ. रत्नाकर नराले के हाथों हिन्दू इंस्टिट्यूट ऑफ लर्निंग ने इस कर्मठ कलाकार को 'संगीताचार्य' की उपाधि देकर गौरवान्वित किया और जगदीश चन्द्र शारदा द्वारा उन्हें शाल भेंट किया गया। इस कार्यक्रम में 500 से अधिक लोगों ने भाग लिया और संगीत का आनन्द लिया। कार्यक्रम के एशियन नेटवर्क एम.सी. थे। श्री केन्टी खान एशियन नेट वर्क टेलीविजन और प्रमुख आचार्य थे प्रणव आश्रम के स्वामी भजान्द जी। आयोजन के संकलनकर्ता थे बैरिस्टर श्री दमन किसून जी। इसमें संगीत वादक थे स्वयं गुरुदेव बंसराज जी और साथ में कुछ चुने हुए शिष्य। श्रोताओं में अधिकतर छात्र उपस्थित थे।

संगीताचार्य बंसराज संगीत कला क्षेत्र में अपना उच्च स्थान बना चुके हैं और अपना जीवन संगीत प्रचार और उसके शिक्षण में लगते हैं।

संगीताचार्य बंसराज संगीत कला क्षेत्र में अपना उच्च स्थान बना चुके हैं और अपना जीवन संगीत प्रचार और उसके शिक्षण में लगते हैं। आज उनके साज और आवाज़ अकेडमी ऑफ म्युजिक ने लगभग 100 से अधिक विद्यार्थियों को संगीतकार बना दिया है। इनमें से अनेकों शिष्य आज स्वयं अपनी संगीत की पाठशालाएं चला रहे हैं।

अपने 50 वर्ष के जीवनकाल में आपने 35 वर्ष संगीत की तपस्या में लगा दिए हैं। उन्होंने संगीत को एक नई दिशा दी है और संगीत के क्षेत्र में नये-नये आयाम खोज निकाले हैं। आप संगीत की हर विधा पर अपनी पुस्तकें भी शीघ्र ही प्रकाशित करने वाले हैं। आप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों प्रतियोगिताओं में पुरुस्कार विजेता भी रह चुके हैं।

आलोक श्रीवास्तव को रूस का अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान

हिन्दी के जाने-माने कवि आलोक श्रीवास्तव को उनकी पुस्तक 'आमीन' के लिए रूस का अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान दिए जाने की घोषणा की गई है। रूस के 'भारत मित्र' समाज द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि या लेखक को मास्को में हिन्दी-साहित्य का यह महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय सम्मान दिया जाता है। पिछले तीन वर्ष से इस सम्मान की घोषणा नहीं की गई थी। लिहाज़ा हाल के वर्षों में प्रकाशित हिंदी की चर्चित-पुस्तकों का जायज़ा लेने के बाद सम्मान-समिति ने आलोक श्रीवास्तव के ग़ज़ल-संग्रह 'आमीन' को 'अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, वर्ष २००८' देने का निर्णय लिया है। आलोक को यह सम्मान जल्द ही मास्को में आयोजित होने वाले एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम में दिया जाएगा। लगभग दो दशक से लेखन-क्षेत्र में सक्रिय आलोक श्रीवास्तव की रचनाएं हिन्दी-साहित्य की सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। वे फ़िल्म और टेलीविजन धारावाहिकों में लेखन-कार्य भी करते रहे हैं और उनकी ग़ज़लों व नज़्मों को जगजीत सिंह और शुभा मुद्गल जैसे कई ख्यातनाम गायक अपनी आवाज़ दे चुके हैं। ग़ज़ल-संग्रह 'आमीन' के लिए आलोक को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का 'दुष्यंत कुमार पुरस्कार', 'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' और 'परंपरा ऋतुराज सम्मान' जैसे कई प्रतिष्ठित साहित्यिक-सम्मान मिल चुके हैं लेकिन वे हिंदी के पहले ऐसे युवा ग़ज़लकार हैं जिन्हें रूस का यह महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त होगा।

'भारत मित्र' समाज के महासचिव अनिल जनविजय ने मास्को से जारी विज्ञप्ति में यह सूचना दी है। प्रसिद्ध रूसी कवि अलेक्सान्दर सेंकेविच की अध्यक्षता में हिन्दी-रूसी साहित्य के मूर्धन्य कवि-लेखकों व अध्येता-विद्वानों की पांच सदस्यीय निर्णायक-समिति ने आलोक श्रीवास्तव को वर्ष २००८ के अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान के लिए चुना है। निर्णायक-समिति में हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध रूसी अध्येता व विद्वान ल्युदमीला ख़ख़लोवा, रूसी कवि अनातोली पारपरा, कवयित्री अनस्तसीया गूरिया, कवि सेर्गेय स्त्रोकन और लेखक व पत्रकार स्वेतलाना कुज्मिना शामिल थे। सम्मान के अन्तर्गत आलोक को पन्द्रह दिवस की रूस-यात्रा पर बुलाया जाएगा और उन्हें मास्को, सेंट पीटर्सबर्ग आदि नगरों की साहित्यिक-यात्रा कराई जाएगी। यात्रा के दौरान रूस के कवियों, लेखकों और बुद्धिजीवियों के साथ आलोक की भेंट कराई जाएगी और साथ ही रूस स्थित 'भारत मित्र' समाज आलोक श्रीवास्तव की प्रतिनिधि रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद प्रकाशित करेगा। आलोक से पहले यह सम्मान कवि उदयप्रकाश, लीलाधर मंडलोई, पवन करण, बुद्धिनाथ मिश्र, कहानीकार हरि भटनागर और महेश दर्पण आदि को दिया जा चुका है। पेशे से टीवी पत्रकार श्री श्रीवास्तव इन दिनों दिल्ली में रहते हैं।

हिन्दी चेतना परिवार की ओर से नव वर्ष की शुभकामनाएँ

2011 आप सभी के लिए मंगलकारी व सुखकारी हो

विलोम चित्र काव्य शाला

चित्रकार : अरविन्द नराले
कवि : सुरेन्द्र पाठक

देखो इस तस्वीर में, दो प्रौढ़ उम्र इंसान
ढूंढ़ रहे हैं कुछ जंगल में, शक्ल से लगते हैं परेशान
सोचो तो इन दोनों पर, क्या है बिपदा आन पड़ी
देख रहे हैं इधर–उधर, आँखें फाड़कर बड़ी–बड़ी

एक का लड़का एक की लड़की, कर बैठे हैं प्यार
लाख मनाया पर ना माने, सभी कोशिशें हुई बेकार
अलग–अलग जाति के ठहरे, कैसे रखे अपना सम्मान
कैसे प्रतिबन्ध लगायें उन पर? दोनों शिक्षित और जवान

'इस जंगल की ओर गये हैं' – किसी ने आकर खबर बताई
ढूंढ़ते–ढूंढ़ते सूरज डूबा, और रात होने को आई
जरा–सी आहट होने पर, इनको होता है अहसास
इस झाड़ के पीछे होंगे, या उस झाड़ के आसपास

पेड़ पे सोये पंछी जागे, और पपीहा झाड़ में बोले
जैसे–जैसे रात बढ़े, इन दोनों का दिल डोले
कहाँ छिपे हैं दोनों प्रेमी, देखो उलटी कर तस्वीर
डरे–डरे से सहमे–सहमे, छुपा के दिल में प्यार की पीर

बैठी है लड़की बेचारी, आँखें फाड़ के बड़ी–बड़ी
किसी शिकारी से जान बचाने, हिरनी हो जैसे डरी–डरी
गोरा मुखड़ा कहीं किसी को, इस रात में नज़र न आये
केश बिखेरे बैठी है वह, जैसे बादल में चाँद छुपाये

उस का प्रेमी खड़ा हुआ है, एक पेड़ के पीछे
सुन ना ले कोई आहट उस की, धीरे–धीरे साँसें खींचे
सहमा–सहमा खड़ा हुआ है, प्रेयसी का बनके रखवाला
देख ना ले कोई उनको, लगाकर खड़ा है मुँह पर ताला

तात्पर्य
जवान उम्र में प्यार का, होता है सबको भूत सवार
अनुचित कदम उठाये प्रेमी, तोड़े रीतों की दीवार
माँ–बाप किसी बच्चे का, कभी बुरा नहीं हैं चाहते
काश, प्यार से ऊपर उठ कर, बच्चे समझ ये पाते।

Beacon Signs 1985 Inc.

7040 Torbram Rd. Unit # 4, Mississauga, ONT. L4T 3Z4

Specializing In:

Illuminated Signs awning & pylons

Channel & Neon letters

Banners

Architectural signs

VEHICLE GRAPHICS

Engraving

Silk screen

Silk screen

Design Services

Precision CNC cutout plastic, wood & metal letters & logos

Large format full Colour imaging System

SALES – SERVICE - RENTALS

Manjit Dubey

दुबे परिवार की ओर से हिन्दी चेतना को बहुत बहुत शुभकामनायें

Tel: (905) 678-2859 **Fax: (905) 678-1271**

E-mail: beaconsigns@bellnet.ca

अमेरिका आने के बाद मेरे अनुभव

मालती सत्संगी, अमेरिका

अमेरिका में परमानेन्ट आये हुए यूँ तो हमें 17 साल हो गए हैं किन्तु 1982 जुलाई से हमने यहाँ आना शुरू कर दिया था। उससे पूर्व मेरे देवर 1964 में आये 1974 में मेरी लड़की कल्पना आई और 1982, 84, 85, 87, 90 में मैं 3-4 महीनों के लिए आई। तीनों लड़के भी 83 में यहाँ आ गए थे। मेरे पति डाक्टर थे, इसलिए हम लोग दोनों भारत ही रहना चाहते थे। यहाँ आकर हमें अपनापन नहीं लगा था। सुनसान बस्तियां व सड़कों पर केवल बन्द कारें ही कारें मिलीं। बात करने वाला कोई नहीं व बाज़ार में भी अंग्रेजी ही अंग्रेज़ी थीं। बन्द मकान में मेरा दम घुटने लगता था। सो हमने (दोनों ने) अपना ग्रीन कार्ड (जो कि मुझे मेरी लड़की ने दिलवाया था व इनको इनके छोटे भाई ने) वापस देने का सोच लिया व अमेरिकन एम्बेसी पहुँच गए। बड़ी मुश्किल से काउंसलर तैयार हुआ व हमें विज़िटर वीज़ा दे दिया। हमने सोचा हर वर्ष एक-एक लड़का-बहू और लड़की-दामाद भारत आ जाएंगे व एक वर्ष हम उनसे मिलने चले जाएंगे। किन्तु विधि को कुछ और मंजूर था।

हम दोनों 1990 में यहाँ आ रहे थे, इससे पूर्व ही इन्हें हार्ट अटैक हुआ, सो सब बच्चों को वहाँ याने बीकानेर आने को कहा गया। दुगने दाम देकर बच्चे वहाँ पहुँचे। मेरे पति 1989 में रिटायर हो चुके थे व प्राइवेट प्रैक्टिस कर रहे थे। सभी ने सलाह दी कि अब हमें अमेरिका आ जाना चाहिए क्योंकि चारों बच्चे यहीं पर हैं। छोटे को सिटिज़नशिप मिली हुई थी, उसने हम दोनों को स्पोंसर किया व बहुत जल्द ही हमें यहाँ आना पड़ा।

बीकानेर का मकान, सब सामान, फ्रिज, टी.वी., सोफा, पलंग, पेंटिंग्स आदि बर्तन क्राकरी बिस्तर वगैहरा सब कुछ बेचकर 30 दिसम्बर 1992 को हम यहाँ आ गए अपने लड़कों के घर। बच्चों की गृहस्थी में। जहाँ अपना कुछ नहीं। यहाँ आकर इन्होंने काम ढूँढना शुरू किया। 60 वर्ष की उम्र में खाली कैसे रहते। डाक्टरी सम्बन्धी तो कोई भी काम नहीं मिला क्योंकि अमेरिका में यहाँ की परीक्षा देनी पड़ती है व तीन वर्षों में पास होना होता है। यही सबसे बड़ा आघात लगा क्योंकि वहाँ (भारत में) तो इन्होंने अनेक विद्यार्थी पढ़ा कर और डाक्टरी में तैयार करके यहाँ-वहाँ अनेक जगह भेजे व अब वे ही पढ़ाई करें यह संभव नहीं था। सो छोटी- मोटी जॉब तो इन्होंने की पर मन लगा नहीं और मैं तो वहाँ भी गृहिणी थी और यहाँ भी गृहिणी बनकर अपना समय निकाल ही लेती पर इनका मन नहीं लगा। अभी तक विषय की भूमिका थी अब वास्तविक विषय पर आती हूँ कि यहाँ आकर कैसा लगा? इतना लम्बा समय हो गया है कि भिन्न-भिन्न समय में आकर भावनाएँ, संवेग बदलते रहे। हालत-परिस्थितियों के साथ जुड़ना भी बदलता है।

पहले-पहल तो भारत की खूब याद आती थी। वहाँ का खुला वातावरण--आस पड़ोस से बातचीत- पैदल रिक्शा व कार में जब जी चाहा बाहर जाना-आना। किसी से भी बात करना। सब याद आता रहा। यहाँ कोई बाहर दिखाई नहीं देता। फोन करके ही किसी के घर जाया जाता है किन्तु यहाँ की प्रकृति बहुत ख़ूबसूरत है। बड़े-बड़े पेड़, हरी-भरी घास। हर मकान के आगे खूबसूरत झाड़ियाँ, पेड़ व फूल भी लगे रहते है। घास तो जरूरी ही है। उसे काटना छांटना भी पड़ता है, सभी मशीनें रखते हैं व बढ़ने पर छांटते-काटते हैं। बाहर से सभी सुन्दर दिखाने का प्रयत्न करते है, सो अच्छा लगता है। मैं प्रकृति प्रेमी हूँ, मैंने यहाँ का नाइग्राफाल से लेकर दक्षिण में फ्लोरिडा का डिज़्नी वर्ल्ड व मायामी बीच देखा है फिर पश्चिम में एरिज़ोना, लॉस वेगास से सियाटेल तक देखा है फिर क्रूज में भी गए जहाँ समुद्र ही

यहाँ की प्रकृति बहुत ख़ूबसूरत है। बड़े-बड़े पेड़, हरी-भरी घास। हर मकान के आगे खूबसूरत झाड़ियाँ, पेड़ व फूल भी लगे रहते है। घास तो जरूरी ही है। उसे काटना छांटना भी पड़ता है, सभी मशीनें रखते हैं व बढ़ने पर छांटते-काटते हैं। बाहर से सभी सुन्दर दिखाने का प्रयत्न करते है, सो अच्छा लगता है।

समुद्र व वहाँ प्राकृतिक नज़ारे देखे। हम लोग अलास्का क्रूज पर भी 10 दिन के लिए गए वह तो मेरी आँखों में समा ही गया है बस पहाड़, पेड़ व पानी ही पानी व बर्फ के महल बने हुए–बड़ी–बड़ी नदियां डराती हुई बहती चली जाती हैं और तब मुझे मालिक की आस्था का एतबार होने लगता है। ये सब अमेरिका में रहकर संभव हो पाया। फिर दिनचर्या भी बखूबी चलती है यहाँ। साफ–सफाई बहुत है। वह तो पहली बार जब आई तभी से प्रभावित हूँ। यहाँ के नियम भी कठोर पर सही है कि बाहर व घर में कहीं कचरा नहीं डाला जाए। बच्चे भी अनुकरण करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ प्रवासी भारतीय की जीवन शैली कैसी है? उस पर निर्भर करता है कि हम कैसे रह रहे हैं? मेरा तो अमेरिकन से कोई लेना देना नहीं है क्योंकि मैं इंग्लिश में वार्तालाप नहीं के बराबर करती हूँ। हाँ इंग्लिश नावल पढ़ती हूँ। अख़बार, रीडर डाईजेस्ट आदि पढ़ती हूँ। हिन्दी साहित्य बहुत पढ़ती हूँ। अब भारतीय लोगों से इतनी आधिक जान–पहचान व आना जाना है कि कभी लगता ही नहीं कि हम अमेरिका में हैं या भारत में।

इतने वर्षों में यहाँ भारतीयों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। अनेक मंदिर बन गए हैं। वहाँ आए दिन तीज–त्यौहार मनाये जाते हैं, हिंदुस्तान से कवि लोग आते हैं, कलाकार आते है उन्हें सुनने व देखने के लिए अनेकानेक लोग एकत्र होते हैं। भारतीय ड्रेसों का अवलोकन होता है, सभी प्रान्तों के लोग इकट्ठा होकर सात समुद्र पार बैठे हुए भारत का गुणगान करते है। खूब अच्छा लगता है। फिर यहाँ शुरू से चली आ रही प्रथा कि हम हिन्दुस्तानियों को सप्ताह में एक बार एकत्र होना है, हम जैसे उम्र दराज़ लोगों के लिए बहुत सहायक और लाभप्रद है। छोटी पार्टियाँ अब चाहे बड़े समूहों में होने लगी है। सबसे मिलना जुलना हो जाता है। शादी–ब्याह भी अब यहीं होने लगे है मंदिर में या हाल लेकर। फिर कथा, आखंड रामायण, प्रवचन आदि भी घरों में होते रहते हैं। रिश्तेदार भी यहाँ बढ़ ही रहे है सो यहाँ मन लगना अब मुश्किल नहीं। फिर इंडियन टी.वी. भी बहुत मन लगाता है, सब समाचारों का आदान–प्रदान भी तेज़ी से होने लगा है। लड़कियां पढ़ती–लिखती व नौकरी करती है तो मेरे जैसे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई करके व पुस्तकें, पत्रिकाएँ पढ़कर व टी.वी. देखकर समय निकाल लेते हैं। फिर यहाँ घर के सब काम स्वयं ही करने होते हैं। समय बीतते पता नहीं चलता।

लेकिन भारत की याद तो आती ही है–– वहाँ का स्वच्छंद वातावरण, तीज–त्योहारों पर खान–पान, आना–जाना, नाते–रिश्तेदारों से चुहल करना व वहाँ के बाजार से शापिंग करना, फिर हम तो हर वर्ष या दूसरे वर्ष में अपने गुरु महाराज का दर्शन करने व संग रहने के लिए जयपुर व आगरा जाते ही हैं। जयपुर का तो यहाँ नाम सुनते ही मेरा जी भर आता है क्योंकि वह मेरी जन्मभूमि है। वहाँ का बदलता स्वरूप मैंने 1937 से देखा है व मेरी यादों में है। अब तो यहीं तीनों लड़कों व लड़की के पास रहना है। अच्छा भी लगने लगा है क्योंकि यहाँ के सफाई वाले वातावरण के आदी हो गए हैं। यहाँ घूमना भी अच्छा लगता है। यहाँ बीमारी का इलाज भी सीनियर सिटिज़न को क़रीब मुफ्त मिलता है तथा खाने में स्वच्छता है। हिदुस्तानी खाना भी बहुत मिलने लगा है। कपड़े–ज़ेवर भी मिलते हैं। सो पहले के मुकाबले तो अब यहाँ रहने में कोई परेशानी नहीं है। फिर भी अपनी मातृभूमि अपनी ही होती है।

◆◆◆

Hindi Pracharni Sabha

(Non-Profit Chatitable Organization)

Membership Form

For Donations and Life Membership we will provide a Tax Receipt

Annual Subscription: **$25.00 Canada and U.S.A.**

Life Membership: **$200.00**

Donation: **$ _____**

Method of Payment: cheque, payable to " Hindi Prachani Sabha"

For India:
CA - S.K.DHINGRA
S.K.Dhingra & Co
Chartered Accountants
501 Kirti Shikhar, District Center
Janak Puri, New Delhi - 110058, India
Ph - 25531678, 25505467

वार्षिक --३०० रुपये
दो वर्ष --६०० रुपये
पाँच वर्ष --१५०० रुपये
आजीवन --३००० रुपये

Name:_____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____Business_____

e-mail:_____

****

Contact in Canada:

Hindi Pracharni Sabha
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3R1
Canada
(905)-475-7165 Fax: 905-475-8667
e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA
(919)-678-9056
e-mail: ceddlt@yahoo.com

आख़िरी पन्ना

नव वर्ष की पहली किरण के स्वागत में कई प्रतिष्ठित, वरिष्ठ साहित्यकारों से बात करने के लिए भारत फ़ोन किया। बातों ही बातों में उनसे पता चला कि यू.एस.ए, यू.के, कैनेडा, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया से कई साहित्यकार भारत गए हुए हैं और वे अपने अलावा अपने देश के किसी भी साहित्यकार की बात नहीं कर रहे। किसी और साहित्यकार का नाम तक नहीं ले रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशों में लिखने वाले अपने में ही खोये रहते हैं।

एक तरफ अपने ही साथियों का व्यवहार सोचनीय लगा तो दूसरी तरफ भारत की कई पत्रिकाओं का कार्य प्रशंसनीय। बहुत-सी पत्रिकाओं ने विदेशों में लिखे जा रहे साहित्य पर विशेषांक निकाल कर विदेशी साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया है। हाल ही में भारत की त्रैमासिक पत्रिका 'शोध दिशा' ने अपने सितम्बर और दिसम्बर अंक अमेरिका के कथाकारों पर विशेषांक के रूप में समर्पित किये हैं। यह एक सराहनीय और उल्लेखनीय कार्य है। अमेरिका के इक्कीस कहानीकारों की कहानियाँ इसमें शामिल की गई हैं। संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल और अतिथि संपादक डॉ. इला प्रसाद दोनों ही बधाई के पात्र हैं। डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल अपने सम्पादकीय में लिखते हैं-- 'बहुत दिनों से मन में था कि भारत से बाहर रहने वाले हिन्दी लेखकों की रचनाओं पर आधारित विशेषांक प्रकाशित किया जाए। अपने देश से बाहर रह कर हिन्दी की जोत जलाये रखने वाले ये हिन्दी लेखक वहाँ की भागदौड़-भरी ज़िंदगी में से समय निकाल कर लेखन कार्य करते हैं, किन्तु अधिकांश पाठक और समीक्षक इनकी रचनाधर्मिता से अपरिचित ही हैं। मैंने अनुभव किया है कि इनके लेखन में जहाँ भारत अभी भी विद्यमान है, वहीं उसमें प्रवास की दुविधाएँ, वहाँ के अजनबीपन और बिखराव की स्थितियां भी चित्रित हुई हैं। यदि प्रवासी मन को समझाना है तो इस रचनाकर्म को अपने निकट लाना आवश्यक है।'

संपादक महोदय का ऐसा सोचना प्रवासी साहित्यकारों के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी कथाकार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के आभारी हैं जिन्होंने दो विशेषांकों से अमेरिका में रचे जा रहे कथा साहित्य की पहचान पाठकों, समीक्षकों और आलोचकों से कराई।

इसी दिशा में कथा यू.के. का योगदान भी उल्लेखनीय है। कथा यू.के. (लन्दन) एवं डी.ए.वी गर्ल्ज़ कॉलेज, यमुना नगर (हरियाणा) प्रवासी साहित्य पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहे हैं। जहाँ भारत से बाहर लिखे जा रहे हिन्दी कथा साहित्य पर तीन दिन तक गम्भीर चर्चा होगी। इस सेमीनार में आठ सत्र होंगे और इसमें विदेशों में बसे हिन्दी साहित्यकार एवं भारत के लेखक, आलोचक एक छत तले उस सृजनात्मक लेखन पर विचार-विमर्श करेंगे जिसे प्रवासी साहित्य के नाम से जाना जाता है। यह कार्यक्रम 10, 11, 12 फरवरी को यमुना नगर (हरियाणा) में आयोजित किया जाएगा। हिन्दी चेतना परिवार इस कार्यक्रम की सफलता पर अग्रिम बधाई देता है और विश्व के सभी कथाकारों को निवेदन करता है कि इसमें हिस्सा लें।

नव वर्ष सबके लिए मंगलकारी हो। महामना मदन मोहन मालवीय विशेषांक आप सबने बहुत सराहा। आभारी हूँ। नव वर्ष में कुछ भी लिखने से पहले खूब पढ़ें...

आपकी मित्र
सुधा ओम ढींगरा

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial & Residential Installations

FREE

- ***Installation***
- ***Underpad***
- ***Delivery***
- ***Shop at Home***

Broadloom

Vinyl Tiles

Tel: (416) 661 4444
Tel: (416) 663-2222
Fax: (905) 264-0212

180 Winges Rd. Unit 17-19
Woodbridge,
Ontario L4L 6C6

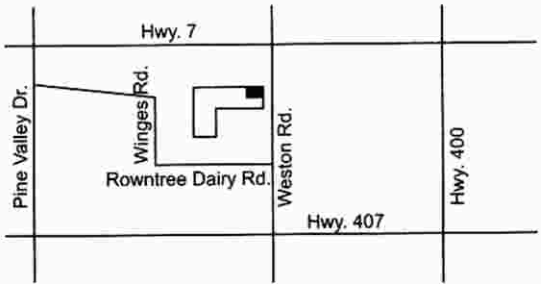

ॐ

"बिजली की रोशनी से रात्रि का कुछ अँधकार दूर हो सकता है, किन्तु सूर्य का काम बिजली नहीं कर सकती। इसी भाँति हम विदेशी भाषा के द्वारा सूर्य का प्रकाश नहीं कर सकते। साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है।"

– पंडित महामना मदनमोहन मालवीय

REPPA®
FLAGS & SOUVENIRS
A division of
FCA Group Canada Inc.

Exceptionally fine source of more then 600 titles of International, Canadian and Provincial Pins, Flags, Crests, Caps, etc.

QUALITY CUSTOM WORK AVAILABLE FOR ALL OF THE ABOVE

83, Queen Elizabeth Blvd.
Toronto, ON. Canada
M8Z 1M5

Phone : 416-599-FLAG (3524)
info@reppa.ca
www.reppa.ca